मेहोजी द्वारा रचित

रामायण

(हिन्दी टीका सहित)

संपादक व टीकाकार

आचार्य कृष्णानन्द

प्रकाशक :

जाम्भाणी साहित्य अकादमी

(विक्रम सोलहवीं शताब्दी का विशेष आख्यान काव्य : राजस्थानी भाषा में)

मेहोजी द्वारा रचितः **रामायण**

हिन्दी टीका सहित :
संपादक व टीकाकार आचार्य कृष्णानन्द
विश्नोई धर्मशाला, मायाकुण्ड, ऋषिकेश (उत्तराखण्ड)
मो. 9897390866

प्रकाशक :
जाम्भाणी साहित्य अकादमी
सें. 1 ई0 134, जय नारायण व्यास कालोनी
बीकानेर (राजस्थान)

ISBN-978-93-83415-49-6

प्रथम संस्करण 2020

मूल्य- 50

मुद्रक :
तिलोक प्रिंटिंग प्रेस
बीकानेर मो. 9314962474/75

भूमिका

कवि परिचय- इस रामायण आख्यान काव्य के रचयिता मेहोजी गोदारा (थापन) थे, साहबरामजी ने जम्भसार में परिचय इस प्रकार से दिया है-

भोजास गांव अरू जात गोदारो, सेखो नाम जंभ को प्यारो।
रथ को बैलवान बड़भारी, थापन कीनेऊ तांहि विचारी।
ब्राह्मण इह अस्थापण कीन्हा, कर्म काण्ड करहू कहि दीन्हा
सैखे के पुत्र भए तीना, मेहो चैनो चाहू प्रवीना।

- जम्भसार प्रकरण -9

भोजास बीकानेर जिले की डूंगरगढ तहसील का एक गाँव है उसमें सेखोजी जाम्भोजी के बहुत प्यारे भक्त थे। बैल गाड़ी चलाने में कुशल थे। संवत् 1542 में विश्नोई पंथ की स्थापना जाम्भोजी ने समराथल पर की थी। उस समय सेखो जी को जाम्भोजी ने थापन-संस्कार कर्ता के रूप में स्थापित किया था। उनके तीन पुत्रों में बीच के पुत्र इस रामायण के रचनाकार मेहोजी थे।

इस रामायण की रचना अनुमानत: वि.सं 1575 के आस-पास हुई थी। मेहोजी का अन्तिम काल विसं 1601 के आस-पास ठहरता है। गुरू जाम्भोजी का समाधि मन्दिर मुकाम तालवा में 1597 विसं. में पूरा हुआ था। उसी समय मन्दिर का निर्माण कार्य बन्द हो गया था। मेहोजी के बड़े भाई चैनो मन्दिर का पुजारी बनने की फिराक में था, उसी समय मेहोजी जाम्भोजी की निशानी चोला, चिपी और टोपी लेकर गांव जांगलू आगये थे। वहीं पर जांगलू में अब भी चोला चिपी दर्शनार्थ विद्यमान है। टोपी वापिस मुकाम मे दे दी गयी थी। मेहोजी जन्मजात कवि थे। उन्हें रामकथा से अगाध प्रेम था। रामकथा जो लोक प्रचलित थी उसको इन्होंने छन्दबद्ध कर राजस्थानी में गाया था ये जाम्भोजी के शिष्य विश्नोई पंथ के पथिक थे और विश्नोई पंथ में संस्कारकर्ता, पुरोहित, थापन थे। इस बात की पुष्टि वे स्वयं करते है,

किंचित पुरोहिताई- थापनकार्य से असन्तोष भी प्रगट करते है -

थापण्य मोसो जे किया, परनारी सूं नेह।
पढिया ने मेहो कहै, नीत नवला एह ।।

रामायण- कहानी है कि ''रामायण सत कोटि अपारा'' जितने संसार में मानव है उतनी ही रामायण: राम कथा है, सभी अपनी-अपनी बुद्धि ज्ञान के अनुसार राम कथा का कथन करते है। मानव जीवन में रामकथा रच बस गयी है। क्योकि राम चरित ही कुछ ऐसा है जो हृदय में उतर जाता है। रामकथा अर्थात् मानव कथा यही मानव की कथा व्यथा है जो कही जा सकती है रामकथा में दुख के सिवाय और कुछ भी नही है। प्रथम तो राजा दसरथ को संतान की प्राप्ति न होना संतान के बाल्यावस्था का सुख पिता दसरथ देख भी नही पाए थे कि विश्वामित्र का आना और राम लक्ष्मण को ले जाना। राम वियोग दुख होता है। राम संयोग सुख की संभावना बनी थी। राज तिलक देने वाले ही थे पिता यही सोचता है कि मेरा बेटा मेरा उत्तराधिकारी बन जाये

बाप जाणे मेरे हलियो टौरै, कोहर सिंचण जाई'
मांय जांणै मेरे बहुटल आवै, बाजै बिरध बधाई।।

किन्तु राजा दशरथ के साथ हुआ विपरीत, न चाहने पर भी अपने पुत्र राम को बनवास देना पड़ा। राजा दसरथ इस महान दुख को सहन नही कर सका और प्राण त्याग दिये। वनवास में ही कहां चैन था वहां पर भी राक्षसों के बीच सतर्क रहना था' ''जिम दांतों बीच जीभ बिचारी'' सीता हरण दशरथ मरण ये विधि के विधान थे' राम ने दुख सहन किया। हम सभी राम से कम ही दुखी है इसलिये राम कथा प्यारी लगती है।

पंचवटी से सीता का हरण एक दुखद् घटना थी। उसका सामना करना था न कि सिर पर हाथ धर के बैठ जाना। कायरता का परिचय न देकर उस समस्या का समाधान करना एक योद्धा वीर राम भगवान का ही कार्य था बाली सुग्रीव और हनुमान से भेट करके सीता को वापिस लाना, रावण दुष्ट को मारना था। इसलिये बाण के आगे वनचर जुड़िया, तदम्हे राखी कंवलपति दयारूप म्हे आप बखाणा संघार रूप म्हे आप हति।।67।।

सबसे अधिक दिल दहलाने वाली राम के साथ जो घटना घटी वह लक्ष्मण को शक्ति बांण का लगना था।

राघौ सीता हनंवत पाखौ, कौण बंधावत धीरू।।

लंका में लक्ष्मण मूर्छित है' जड़ी बूंटी लेने हुनमान गये हैं किन्तु रामजी ने जो भाई के दुख में विलाप किया वह अद्‌भुत है मेहो जी की इस रामायण में देखें-

दसरथ हुवे तो जांणजै, कै भरथि भाजै भीड़।
अजोध्या अलगी रही अब कुण पैसे पीड़।।
हंणवंत अजू न आवियौ, गयौ ज मूली लीण।
काज पराया सीवला, जां दुखै ज पीड़।।

गुरु जाम्भोजी ने भी लक्ष्मण के शक्ति बांण लगने से जो विलाप हुआ उसका वर्णन शब्द नं. 60 में किया है।

एक दुख लक्ष्मण बन्धु हइयों, एक दुख बूढै घर तरणी अइयों।।60।।

मेहोजी की रामायण में महरावण का प्रसंग भी विस्तार से आया है काफी रोचक एवं प्रेरणाप्रद है' मेहोजी ने बतलाया कि यदि सीता लंका मे न जाती तो ये गुण प्रगट नही होते ।

सत सीता जत लखमंण, सबलाई हणंवंत।
जे आ सीता न जावही, ऐ गुण मांही गलंत।।

सीता सती है लक्ष्मण जती है हुनमान बलवान है ये तीनो में गुण विशेष प्रगट हो गये अन्यथा प्रगट होने का अवसर नहीं मिलता तो ये गुण अन्दर ही अप्रगट ही गल जाते, समाप्त हो जाते। अन्त में मेहोजी रामायण सम्पूर्ण करते हुए कहते हैं कि-

हुवौ रामायण रावण मारयौ, गंणौ पराक्रम न्हाल्यौ'
सुरंग जाय महरांवण मारयौ, तोडि गला सू राल्यौ।।
सोवन लंक खलो करि गाही, ढंढोल्यौ असमांणौ'
कहि मेहा रिण झूं झयौ राघौ, घंण ज्यौ बूठा बांणौ।।

घंण ज्यौ बूठा बांण क, राणौ रांवण मारयौ'
रावण मांरयौ परहंस सारयौ, लंक लिवी मुंह भांने।।
अड़सठ तीरथ जो पुननंहायां, सुणौ रामायंण कांने'
पढिया नै मेहो समझावै, धापो धरमं धियानै।।

यहीं रामायण की समाप्ति हो जाती है ये 258 दोहे, छन्द, राग सुहब आदि मे गेय रामायण महाकाव्य हैं, अन्य रामायण बहुत ही विस्तार से है किन्तु मेहोजी ने कुल 258 छंदों में ही गागर में सागर भर दिया है। यहां रामायण की भूमिका में अधिक लिखना कथा का विश्लेषण करना अनावश्यक है कवि तथा पाठक के बीच में मेरा उपस्थित होना ठीक नहीं होगा। यह काव्य कैसा है अन्य रामायणों से क्या भिन्नता है। यह निर्णय तो पाठक स्वयं ही करें तो अच्छा रहेगा। राम कथा परंपरा मे यह भी एक चमचमाता हुआ विशेष नग हैं पांच सौ वर्ष पूर्व में लिखी गयी राम कथा को जनमानस तक पहुंचाया जाये और लोक व्यवहार, जीवन पद्धति को यह कथा उजागर कर सके यही लेखक तथा प्रकाशंक का धर्म होता है इसी का निर्वहन किया जा रहा है।

जाम्भाणी साहित्य हस्त लिखित में बहुत बड़ा भण्डार है उस भण्डार से यह मेहोजी की एक मात्र रचना प्राप्त हुई है। सर्व प्रथम इस कथा को मेहोजी ने ही लिपिबद्ध किया होगा। उनके तीन सौ वर्ष बाद परमानंद जी ने संवत 1796 से 1810 तक पोथो ग्रंथ ग्यान में संग्रह किया था। दूसरी प्रति उपलब्ध है वह भी परमानन्द जी द्वारा लिखित है तीसरी प्रति 1789 सं. परमानन्द ही की है'चौथी प्रति जो मुझे प्राप्त हुई वह विक्रम सं. 1830 में अमरा थापन द्वारा लिखित है। इसी का ही आधार प्रमुख रूप से इस रामायण कथा में लिया गया है।

डॉ. हीरालाल जी माहेश्वरी ने सन् 1984 में प्रथम संस्करण विस्तार से संपादन तथा सम्यक आलोचना करके प्रकाशित करवाया था। वह अब अप्राप्य है। इसी का भी मुझे सहारा प्राप्त हुआ है मै डॉ. हीरालाल जी माहेश्वरी को साधुवाद देता हूँ और बहुत-बहुत आभारी हूँ। धन्यवाद कौन

क्या सोचता है पढ़ता है या नही पढ़ता है इससे मै विचलित नही हूँ। मुझे व्यक्तिगत यह मेहोजी की रामायण बहुत ही अच्छी लगी। मैने कई कथाएँ पूर्व में इसी रामायण के आधार पर की थी।

यह जनमानस के लिये बिल्कुल नवीन है। हो सकता है कुछ प्रसंगों को पढकर चौंक जायें। क्योंकि उनके संस्कार तुलसी रामायण के ही है। उससे हटकर कुछ कहेगें तो जल्दी मान्य नहीं होगा।

मैं पाठकों से क्षमा चाहता हूँ मैंने तो केवल हिन्दी टीका करके प्रकाशित करवायी है, इसमें अच्छा या बुरा मेरा कुछ भी नही है प्रारम्भ में ही मै विनती कर चूका हूँ।

इस रामकथा में वाल्मीकि की तरह ही राम को एक मर्यादा पुरूषोत्तम योद्धा, सतपुरूष के रूप में चित्रित किया है। तुलसी की तरह कहीं भक्ति भाव का समावेश नही किया है। "**देखन में छोटे लगे, घाव करै गंभीर**" की उक्ति यहां चरितार्थ होती है।

मरुभाषा का छोटा सा नग, हीरा आपके हाथ में देकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। इसमें कुछ भूल हो गयी हो तो सुधी पाठकों से क्षमा याची हूँ। मुझे प्रेरणा गुरू जाम्भो जी के शब्दों से ही मिली है। रामायण को समझने के लिये शब्दवाणी भी उतनी ही सहयोगी और प्रमाण रूप है अधिक क्या लिखें स्वयं पढ़ें और विचार करें जीवन पथ का अनुसरण करें यही कथा का प्रयोजन है। अस्तु

निवेदक

आचार्य कृष्णानन्द

विश्नोई धर्मशाला (मायाकुण्ड)

ऋषिकेश (उत्तराखण्ड)

मो. 9897390866

●●●

राग भुंवरो

सांई सिंवरू सहंस नांव, सिंवरू सिरजण हार
इल अर आभ उपाविया, विण्य थंभा गैणार ।।1।।

सांई- परमेश्वर! हजारों नाम वाले आपको स्मरण करता हूँ। सृष्टि के सृजन-पालन-पोषण कर्ता मै आपका स्मरण करता हूँ। आपकी सृष्टि की उत्पत्ति आकाश, वायु, तेज, जल, धरणी के रूप में प्रत्यक्ष है।

आकाश विहारी निराधार के आधार आप ही है बिना खंभें के ही यह गैणार-गगन टिका हुआ है, गगन में सूर्य, चन्द्र, तारे, बादल आदि आपके ही आश्रय पर चल रहे है, मैं आपको नमन करता हूँ।

ग्रन्थ प्रारम्भ में निर्विघ्न समाप्ति के लिये मंगल करना शास्त्रों का नियम है। यहां पर परमेश्वर से प्रार्थना कवि ने की है- 'कि रामायण के बहाने हरि गुणगान करने के लिये सद्बुद्धि लाभार्थ यह निवेदन हैं।'

लख चवरासी जीव सिर्‌या, बंणी अठारै भार।
सातूं सायर जिण्य सिर्‌या, नवसै नदी कल्हार।।2।।

चौरासी लाख जीव योनियों की सृजना की अंडज, स्वेदज, उदभिज, और जरायुज ये चार प्रकार की सजीव योनियां हैं। अण्ड़े से उत्पन्न होने वाले जीव जो पक्षी हैं वे दस लाख, स्वेदज जो पसीने से उत्पन्न होने वाले कृमि ग्यारह लाख हैं। पेड़-पौधे जो उद्‌भिज कहे जाते हैं वे बीस लाख हैं।

जरायुज जो जैर से जन्म लेते हैं वे पशु तीस लाख हैं और मनुष्य भी जैरज हैं वे चार लाख हैं, जल जन्तु नौ लाख कहे जाते है। इस प्रकार से चौरासी लाख जीव योनियों की सृजना की है।

बंणी अठारै भार-अठारह भार वनस्पति की सृजना की है। अठारह-स्थावर-जड़ योनि की उत्पत्ति की है जिसमें सम्पूर्ण वृक्ष जाति के सूक्ष्म बीजों का विस्तार दरखत रूप से किया है। ये दरखत के बीज ही मूल-सूक्ष्म है। दरखत-विकास रहे या न रहे किन्तु उनका बीज सदैव अपने मूल रूप में विद्यमान रहता है। क्योंकि वह सूक्ष्म है इसलिये आंखों से दर्शनीय नहीं है। भार-अर्थात् वजन। सूक्ष्म तत्व का ही भार-आधार है कहानी यह है कि इसके कंधे पर परिवार का भार है अर्थात् यही परिवार का आधार है। उद्भिज-वन का आधार भार-बीज ही है, बीज को बचाना आवश्यक है बीज रहेगा तो पुन: वनमाली उत्पन्न हो जायेगी।

उसी सृजनहार की सृजना में, पवन, पानी, धरती, आकाश, वर्षा, सूर्य, चन्द्र, तारे तथा पर्वत है। उसी कर्ता ने मूल, आधार, भार से वन-वृक्ष समूहों की रचना की है जो स्थिर जड़ योनि होते हुए भी सभी के आधार-भार-भरण पोषण करने वाले है सूर्य ज्योति से भी परे उससे भी परे सभी कुछ गुरु-परमात्मा के शरण में है। उनसे बाहर कुछ भी नहीं है सभी के सृजन कर्ता-पालन पोषण कर्ता भगवान को मै नमन करता हूँ। सातूं सायर जिण्य सिरया- जिस परमात्मा विष्णु ने सात सायर- समुद्रों की रचना की है। विष्णु पुराण के अनुसार सात सायर को सप्त द्वीप भी कहा है जो भूमि चारों तरफ जल से घिरी हुई होती है उसे द्वीप कहा गया है उनमें जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच शाक, और पुष्कर द्वीप ये सातों द्वीप बनाने वाले सात सायर की रचना, जिस विष्णु भगवान ने की है उनको नमन है। जाम्भोजी ने शब्दवाणी में उद्बोधन किया है-

सप्तदीप नव खंड प्रमाण, उस परमात्मा को ये सप्त द्वीप प्रमाणित करते हैं कि इनके रचना कर्ता कोई है वह वही आदि विष्णु ही हो सकता है, शब्द नं. 29 में भी कहा है-

सात सायर म्हे कुरलै कीयौ, ना मै पीया न रहया तिसायौ।

सात समुद्रों को मैंने पी लिया है न तो पूरा पी सका और नहीं प्यासा ही रहा। अर्थात् सात सायरों के थाघ को जाम्भोजी कहते है कि मैंने पा लिया है उनमें कुछ अमृत तत्व था वह प्राप्त कर लिया है किन्तु प्यास पूरी बुझी नहीं। होठों तक ही अमृत-जल की पहुंच रही है। अभी आगे और भी खोज करने योग्य है यहीं नहीं रूकना है। नवसै नदी कल्हार- नयी नयी बहाव परिवर्तन करने वाली नया रूप धारण करने वाली नदियां और उनके जल में उदित होने वाला कमल जिसने भी बनाया वही हमारे नमन-प्रणाम करने योग्य है उसे हम नमन करते है।

छोटे बड़े ताल तलैया, पहाड़ों से गिरने वाले झरने, धरती से निकलने वाला कूप जल, नदियाँ नाले सभी कुछ गंगा में मिलकर समुद्र में जाकर मिल जाते है। अपने उद्गम स्थान में वापिस समाहित हो जाता है, ''यथा नदीनां बहुवो... गीता-

जिस प्रकार से वर्षा का जल झरना, नालों का रूप धारण कर के बड़ी नदी में मिल जाते हैं और नदी उस जल को वापिस समुद्र में ले जाकर मिला देती है तभी जीव शांत हो जाता है अन्यथा तो आवागमन चलता ही रहेगा। कमल का फूल जल के कीचड़ में ही पैदा होता है बढ़ता है और अपना विकास करता है किन्तु जल में डूबता नहीं है यही इसकी विशेषता भी है। कल्हार- कमल का फूल यही संदेश देता है कि इस संसार रूपी जल में रहो किन्तु मेरी तरह निर्लिप्त भाव से संसार में रहो तो संसारिक त्रासना से बच जाओगे अन्यथा मोह-माया में डूब जाओगे। उसी दिव्य कल्हार की सृजना करने वाले भगवान को मेरा बार-बार नमन है।

च्यार्यौ खैण उपाय करि, सिरज्यो सोह संसार।
असर सिंघारण कारणै, राम लखन लियौ अवतार।।3।।

चार जीव योनियों में ही सम्पूर्ण जीवन परिलक्षित हो जाता है। इन्ही चार योनियों की रचना करके इस संसार को जीवन से भर दिया है। सम्पूर्ण संसार की रचना उस शक्ति युक्त परमात्मा ने की है। तीन गुणों से सम्पन्न

यह सृष्टि है सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण से तीन प्रकार के स्वभाव से देव, दानव, मानव रूप से यह दिव्य, त्रिगुणा विष्णु आत्मिका सृष्टि को सृजनहार ने बनाई है। उन्हीं देवाधिदेव को नमन है। विष्णु सत्व गुण से पालन-पोषण कर्ता रजोगुण से ब्रह्माजी उत्पति कर्ता कहा गया है। सुर- यानि सम्यक् युक्ति युक्त जीवन। किन्तु जो उद्दण्ड, मर्यादा विहिन नियमों की अवहेलना करने वाले असुर हो गये।

उन असुरों को वाणी द्वारा नहीं समझाया जा सकता और नहीं सामान्य जन उन्हें मार ही सकता। इसलिये असुरों को मारने के लिये राम-लक्ष्मण के रूप मे भगवान विष्णु ने अवतार धारण किया। सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय कैसे बने इसके लिये पालण-पोषण कर्ता विष्णु ही विभिन्न अवतारो के रूप में आते हैं। गुरु जाम्भोजी ने कहा है-

"म्हे ऊंडे नीर अवतार लियो, नव अवतार नमो नारायण, ते पण रूप हमारा थीयूं" 5 "मच्छ, कच्छ, वराह, नृसिह, बावन परशुराम, राम, लक्ष्मण, कृष्ण और बुद्ध। ये नौ अवतार नमन करने योग्य है इन्हे मेरा नमन है "राम रूप होय राक्षस हडिया" 67 "राम लक्ष्मण की पाहल "श्रीराम सिर मुकुट बंधायौ" 94 "राम रजा क्यूं दीन्ही दानी "75

बंध्या छुड़ावण देवता, वाचा साच विचारि।
लंक लिवी किम रामचंद, राणौ रावण मारि।।4।।

देवता- सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुद्ध, वृहस्पति, शुक्र और शनि ये सप्त देवता हैं। इन्हे देवता इसलिये कहा जाता है क्योकि ये देते है। सूर्य ऊर्जा, चन्द्र अमृत, मंगल सेनापति, बुद्ध-बुद्धि, वृहस्पति-आध्यात्मिक गुण, शुक्र कला कौशल सौन्दर्य का, गुरु शनि वायु तत्व रूप है। वायु प्रवाह द्वारा संचालन करता है।

गुरु जाम्भोजी ने कहा भी है-

नव ग्रह रावण पाये बंध्या। तिस विहसुर नर शंक भयाणौ। 69

"इन रावण के द्वारा बंदी किये हुए देवताओं को छुड़ाने के लिये

रावण के पास ऐसा काया कौशल विज्ञान था जैसा आधुनिक युग में है। इन देवताओं से सेवा ले रहे थे।

वाचा साच विचारी- वचन सत्य होने चाहिये' ऐसा विचार करके भगवान विष्णु ने राम लक्ष्मण के रूप में अवतार लिया। भगवान विष्णु ने नृसिंह रूप धारण करके प्रहलाद को वचन दिया था। उस वचन को पूर्ण करने के लिये त्रेतायुग में विष्णु ही राम लक्ष्मण के रूप में अवतार लेकर आये। कहा है (शब्दवाणी-118) तथा अन्य भी वचन दिये हुय थे उनको पूर्ण करने के लिये राम लिछमण लिन अवतार लिया। जैसे- मनुशत्रुपा को भी भगवान विष्णु ने वचन दिया था कि मै ही तुम्हारे पुत्र के रूप में जन्म लूंगा। नारद जी के शाप वचन को सत्य करना भी प्रयोजन था इत्यादिक।

राम लक्ष्मण ने लंका किस प्रकार से हस्तगत की और राम रावण को किस प्रकार से मारा यह सभी विवरण इस रामायण कथानक के माध्यम से बताने जा रहे हैं, 'रामायण पावन राम चरित श्रवण करें।

राम कौसल्या सुमता लखण, भरत चत्रगुण केकवी विचारि।
दसरथ घरे जलमियां, चौकस कंवर चियारि।।5।।

कौशल्या के राम ने जन्म लिया। कैकेयी के भरत ने जन्म लिया। और सुमित्रा के लक्ष्मण और शत्रुघ्न ने जन्म लिया। अयोध्या के राजा दशरथ के घर तीनों रानियों के गर्भ से चार राजकुमारों ने जन्म लिया। चौकस-सावधान, सचेत, अपने कर्तव्य के प्रति सावधान सचेत रहने वाले चार राजकुमारों का जन्म हुआ।

●●●

राग भंवरो

सेहर मांडण सुन्दरी, जीणि उली उण हारि।
सीत सती रे कारणै, जुड़िया छै चक च्यारि।।6।।

जनक पुरी के राजा विदैही जनक ने अपनी पुत्री सीता के विवाह के लिये सेहर-सेहरा बांधा यानि सीता स्वयंवर की तैयारी की। उस समय सिर पर सेहरा बांधा था जनक सूता सीता बहुत ही सुन्दर थी जिस प्रकार से पेड के पके फल।

सती सुन्दरी के स्वंयवर में विवाह के इच्छुक चार चको के राजा जनकपुरी में एकत्रित हुए थे। चार चक्र- चारो दिसाओं के राजा सीता की प्राप्ति हेतु आये थे। गुरु जाम्भोजी ने भी सीता की महानता बतलायी है

सीत सरीखी तिरिया न देखी, गरब न करीयो काई।।

सीता जैसी तिरिया जाम्भोजी कहते हैं मैंने तो नहीं देखी जिसने राजपुत्री, राज पत्नी होते हुए भी गर्व नहीं किया।

कोवंड कले न आणिया, खसि खसि गया इवांण।
तेड़ो परला पारधी, ज्यौ चाडै गुण बांण।।7।।

राजा जनक की राज सभा में सीता स्वयंवर की शर्त के अनुसार रखा हुआ शिव धनुष-कोवंड-को बड़े-बड़े चार चको के राजा उठाकर धनुष की प्रत्यंचा चढाने लगे किन्तु किसी-हाथों की कलाई, भुजाओं में नहीं आया। अपनी पूरी ताकत लगाई, ताकत लगाकर बैठ गये। गया-इवांण-खाली ही चले गये जौ सीता प्राप्ति में असफल हो गये। जपिया तपिया पोह बिन खपिया, खप खप गया इवांणी। जब राजा जनक विषाद में आ गये और कहने लगे इस धरती पर कोई ऐसा सूरवीर नहीं हैं। जो मेरी प्रतिज्ञा पूरी कर सके मैं अपनी कन्या सीता का विवाह कर सकूं 'तेड़ो'-अभि भी उन सर्वश्रेष्ठ सूरवीरों को बुलाओ जो इस मेरी प्रतिज्ञा को पूरी कर सके। इस धनुष पर डोरी चढा सके। यदि कोई है तो आइये आप का स्वागत है।

कल चांपे नेड़ो लियो, ज्यौ गुण आण्यौ रासि
ले वरमाला कांमणी, सीता ऊभी पासि।।8।।

राजा दसरथ की चुनौती विश्वामित्र ने सुनी और राम की तरफ इसारा किया तब सूरवीरों से भरी सभा में श्रीराम ने अपनी भुजाओं के बल से -धनुष को नजदीक लिया। जैसे ही राम जी धनुष की डोरी को चढ़ाने लगे त्योहि मानो धनुष रास आ गया, काबु में आ गया और शिव धनुष पर डोरी चढ़ा दी। सीता वरमाला लेकर तुरंत आ गयी। श्रीराम जी के गले में विजय-वरमाला डाल दी। राजा जनक सहित सभा में जय जय कार करने लगे।

सोवन कलस रचावियौ, मांड्यौ मोती चाव।
सीता परणी रामचंद, जानी लखण राव।।9।।

विवाह संस्कार करने के लिये हवन, कलश की स्थापना आदि कार्य प्रारम्भ हो गये। सोने का कलश रखा गया जिसमें जल भरा गया। मंडप बनाया जिसमें हीरे मोतियों की झालर लगायी गयी। राम-सीता का विवाह हुआ। उसमें जानी-बाराती प्रमुख रूप से लक्ष्मण कुमार ही थे।

सातूं सायर दायजो, लाखौ कियौ पसाव।
आणंद मंगल गाव्यजै, बाजै विरध बधाव।।10।।

सातों सायर में जो रत्नों की प्राप्ति हुई थी वे सभी कुछ राजा जनक ने अपनी पुत्री को दायजे में (दहेज में) दिया और लाखों का समान दिया। लाखों का पसाव (फैलाव) किया।

यथेष्ट् विवाह होता देखकर आनंद से मंगल गीत गाये जाने लगे। विप्र वेद ध्वनि से आकाश को गुंजायमान करने लगे। शब्द नं. 30 में कहा भी है- जाणी गीत विवाहे गाइये' विवाह में ज्ञानी गीत गाइये। अनेक संगीत वाद्य बजने लगे जिससे दोनो परिवारों की वृद्धि होवे, बधाइयां बंटने लगी।

सांई सभ जुग सिरजिया, सिरज्या धर आकास।
सो वर लाधौ कांमणी, कांई पूरबली परगास।।11।

सांई- (ईश्वर) ने सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की है और धरती-

आकाश, जल, अग्नि, वायु आदि की भी की है, वहीं कर्त्ता-धर्ता सांई ईश्वर यहां राम के रूप में आये हैं। सीता सौभाग्यशालीनी है जो ऐसा दिव्य वर-(पति) प्राप्त हुआ हैं। यह तो कोई पूर्व जन्म के पुण्य का ही परगास-(प्रकाश) फल उपस्थित हुआ है। कहा भी है-

मंडहा मेल ज बीखरी, कीजै कुल आचार
ले सीता घर आविया, राघव लखण कंवार।।12।।

विवाह के रीति रिवाज पूर्ण किये और कलश पूजा मंडप सभी कार्य पूर्ण किये। राम और लक्ष्मण कुमार ये दोनो सीता को लेकर वापिस अयोध्या आ गये। अयोध्या में बधाइयां बंटने लगी। मंगल गीत गाये जाने लगे।

नहेड़ो हुवौ नरपति लागै नहीं ईलाज।
कीकही वारो महलि, लंका छीजण काज्य।।13।।

नहेडा- हाथ के अंगूठे की असह्य पीडा राजा दशरथ को हो गयी, इस पीड़ा का कोई इलाज भी नहीं है पीड़ा सहन करनी पड़ती है राजा ने वैद्यों से इलाज भी करवाया किन्तु पीड़ा ठीक नहीं हुई। उस दिन कैकेयी की राजा के महल में सेवा की बारी थी। तीनों रानियां बारी-बारी से राजा की सेवा में रहती थी, क्योंकि लंका का विनाश करवाने के लिये राजा को पीड़ा होना और कैकेयी का महल में राजा की सेवा करना यह सभी समय का प्रभाव ही था।

सेवा कारण्य सुंदरी, इधको सेयौ नांह।
नींद न सोवै निसछले, बैसी पलोया पांव।।14।।

राजा दसरथ को असहनीय दर्द था। सुन्दरी कैकेयी ने राजा की पीड़ा हरण करने के लिये रात्रि भर सेवा की अन्य दिनों से भी कहीं ज्यादा ही सेवा उस रात्रि में की वह निश्चला राणी, रात्रि में नींद भर सोयी नहीं। राजा दसरथ के चरणों को दबाती रही।

ज्यौ विस घुटयौ कामंणी, सुख छल्य सूतौ राव
मांग ज मांगौ केकयी, तूठो दसरथ राव।।15।।

कैकेयी ने राजा की सेवा नहीं की ऐसा लगता है कि उसने रात्रि भर

विष की घिसाई रगड़ाई की। सेवा का तो बहाना था। राजा की सेवा द्वारा अपने वशीभूत करके वरदान मांगने वाली थी। ये दो वरदान ही राजा के लिये विष ही थे। वह कैकेयी लेने वाली थी, वरदान देना ही राजा के लिये विष-जहर था जो मृत्यु का कारण बना।

राजा को सुख देने के बहाने उन्होने छल-कपट किया था, और राजा को अपने वशीभूत कर लिया था। राजा दसरथ ने रानी कैकेयी की सेवा में प्रसन्न होकर कहा हे सुन्दरी! मै तुम्हारे पर प्रसन्न हूँ। यह राजा दसरथ प्रसन्न हो जाये तो सभी कुछ दे सकता है। वरदान मांगों क्या चाहती हो।

वाचा कारण आपरी, जो म्हां तूठा सांम्य।
सोना रूपा सांकला, कोई म्हांकै नांही कांम।।16।।

हे पति देव! आपके वचन सत्य होते है। आप तो रघुकुल के शिरोमणी हो, "रघुकुल रीति सदा चली आई, प्रांण जाय पर बचन नहीं जाई" आप अयोध्या के पति राजा दसरथ मेरे पर प्रसन्न हो गये है तो अवश्य ही वरदान दीजिये। राजा दशरथ ने सोचा होगा कि यह नारी है इसे क्या चाहिये। अधिक से अधिक स्वर्ण हीरे-मोती आदि पहनने के अंलंकार ही चाहिये यही मांगेगी। यहां क्या कमी है इसकी इच्छा पूरी कर दी जायेगी। किन्तु कैकेयी ने कहा राजन् क्या सोचते हैं? मुझे इन गहनो- अलंकारों की आवश्यकता नहीं है मै इनसे क्या करूगी। ये तो सभी धारण कर चुकी हूँ। आप इस प्रकार की छोटी-ओछी बाते न सोचें।

कर जोडे कहै केकवी, आगल्य उभी सांम्य।
भरत शत्रुध्न राज द्यौ, देसोटो लछमण राम।।17।।

कैकेयी हाथ जोड़कर सामने खड़ी थी, कहने लगी हे मेरे स्याम! यदि आपकी वाचा सत्य है कुछ देना ही चाहते हैं तो कान खोलकर दिल थाम कर सुनों। आपके चार पुत्र है चारों के दो दो जोडे. भरत शत्रुध्न को तो अयोध्या का राज दीजिये और राम लक्ष्मण को दसोटो देश से निकाल-वन में भेज दीजिये। चौदह वर्ष का वनवास राम लक्ष्मण दोनों को कैकेयी ने

दिलाया था। कैकेयी को पता था कि लक्ष्मण अयोध्या में रहेगा तो भरत के राजकार्य में विघ्न करेगा।

बोल बाप जग्य एक छै, एक ज हरि को नांव।
राज ज दीयो राजवी, नगर अजोध्या गांव।।18।।

वचन, बाप, यज्ञ तथा हरिनाम ये सभी एक बार ही होते हैं। बार-बार बदला नहीं जा सकता। जो होगा वही रहेगा। दसरथ कहने लगे मैंने वचन दे दिया है कि मै दूंगा यह मेरा वचन नहीं बदला जा सकता। देवी! मैंने भरत शत्रुध्न को अयोध्या का राज दे दिया। आप प्रसन्न हो जाये।

म्हे जाण्यौ म्हारी सेव छै, वचन ज काढ्यौ मुख।
जाण्यौ छे सुख होयसी, दीन्हौ दूणौ दुख।।19।।

लेकिन दूसरा वरदान राम लक्ष्मण को चौदह वर्ष का वनवास यह वरदान ना मांगों, मैंने यह नहीं समझा था कि कैकेयी सेवा में आज क्यों लगी है यदि जानता तो अपने मुख से वचन कभी नहीं देता। मैंने तो यह समझा था कि कैकेयी की सेवा से सुख होगा किन्तु इसने तो दुःख को दुगुना कर दिया।

वचन ज्यौ हरिचंद छल्यौ, बल्य ज्यौ बावन रूप।
यों दसरथ छलियौ केकवी, चौकस करि मन्य चूक।।20।।

वचन से ही सत्यवादी राजा हरिश्चन्द से विश्वामित्र ने छल किया, और राज्य लेकर विपत्ति में डाल दिया। राजा बली ''स्वर्ग कामो यजेत'' स्वर्ग की प्राप्ति हेतु यज्ञ कर रहा था, भगवान विष्णु ने बलि के साथ छल किया '' तीन पैण्ड कीवी धर सारी ''राजा'' बलि का सर्वस्व छीन लिया और उसे पाताल भेज दिया। उसी प्रकार से कैकेयी ने भी राजा दसरथ के साथ छल किया और सर्वस्व छीन लिया। राजा दसरथ कहने लगे मैं चौकस-सावधान था फिर चूक-भूल हो गयी। इस देवी ने मेरे को महाविपत्ति में डाल दिया।

थूक्या पाछे कुण गिलै, जे लाखीणौ थूक।
भेद न दीजै भारिजा, त्रिया ज तन रो टूक।।21।।

थूकने के बाद ऐसा कौन है जो उसे वापिस चाटकर निगल जाये। वह थूक चाहे लाखीणौ- लाखों का कीमति ही क्यों न हो राजा दसरथ कहते है कि मैंने कैकेयी को वचन दे दिया है तो मै वापिस नहीं लूंगा उस को पूरा करने में मुझे प्राण भी त्यागना पड़े। हमारे यहां तो ''रघुकुल रीति सदा चली आयी, प्राण जाय पर वचन न जायी''- जाम्भोजी ने कहा है- वह वीगूता'' है जो वचन देकर नट जाये। उसकी सुगति नहीं दुर्गति ही होगी। अपनी ही भार्या-स्त्री को अपना भेद नहीं देना चाहिये वैसे तो वह एक दूसरे के तन का ही टुकडा-भाग है। फिर भी अपना निजि भेद नहीं देना चाहिये। मैंने भेद दिया तो उस भार्या-तन के टुकडे ने मेरी यह दुर्दशा कर डाली है उन्हे पता था कि राजा ने एक बार कह दिया वह पूर्ण करेगा। उसने मेरे मुख से राम-लक्ष्मण के वनवास का वरदान ले लिया है मुझे प्राण देकर भी पूर्ण करना होगा।

एक सहोवर सावको, सोकि बहंण संसारि।
दोन्यौ सिरज्या दुखनै, वेह बावली सी लारि।।22।।

सगा भाई यदि उसकी मां मर जाये तो वह सावकों-पराया हो जाता है क्योंकि दूसरी स्त्री घर में आ जाती है तो वह उसे कष्ट देती है अपना न मानकर पराया मानती है उससे द्वेष रखती है। उस बच्चे को मां का स्नेह नहीं मिलता। दूसरी वह स्त्री जिसकी सौत घर में आ जाये तो वह उस बहन से दुःखी रहती है, सौतेला व्यवहार दुःख दायी हो जाता है इन दोनों को मानो विधि ने दुख देने के लिये ही बनाया है। विधि इनके पीछे दुःख देने के लिये पड़े रहती है जिस प्रकार से कोई पागल होकर किसी के पीछे पड़ जाता है।

मायं मूवा पीव सावको, ए दुखिया संसारि।
दसरथ वाचा न टलै, भाई बात विचारि।।23।।

छोटे बच्चे की माता मर जाती है तो पिता सावकों-पराया हो जाता है ये सभी संसार में दुःखी लोग है किन्तु मेरे दिये हुय वचन तो नहीं टलेगें। मै पूरा करूंगा, किन्तु कैकेयी! बात विचार ''ये चारों भाई आपस में बहुत ही प्रेम से पले है' इनके आपस में किसी प्रकार का राग-द्वेष नहीं है अब यदि तूं राम-लक्ष्मण को वनवास भेज रही है तो इन भाइयों के आपस में राग-

द्वेष ब2ढजायेगा। आपसी दूरिया बढ़ेंगी। यह अयोध्या के लिये अच्छा नहीं होगा। इन चारों भाइयों के बारे में पुन विचार करो।

छाडि अजोध्या नीसरया, लीया धणस कंवारि
महि मिंदर घर मालियां, बसस्या वंणी मंझारि।।24।।

राम-लक्ष्मण-सीता सहित अयोध्या को छोड़कर निकल पड़े। हाथ में लक्ष्मण ने धुनष उठा लिया। धरती, महल, पर धून, दौलत, मातपिता सभी को छोड़ कर निकल पड़े। पिता की आज्ञा को शिरोधार्य करके घने वन में जाकर निवास करेगें।

●●●

राग धनांसी

राम अजोध्या राव, लखंण सहोवर नीसरया।
बाला वदे से जाय, नगर अजोध्या पर हरया।।25।।

अयोध्या के राजा राम भाई लक्ष्मण के साथ अयोध्या से नीसरया(निकल पड़े)। अभी बालक ही थे विदेश-वनवास को चल पड़े अपनी जन्म भूमि राजपाट-कुटुम्ब परिवार माता पिता सभी को छोड़ दिया।

पुंवण छतीसूं साथि, कंवर वोलावै नीसरया।
चड़ि वहंता चौडोल्य, अतरा सुखासण वीसरया।।26।।

चार वर्ण प्रसिद्ध है एक एक वर्ण में नौ जातियां मान्य है राम को विदाई देने के लिये पुंवण छतीसूं लोग गये थे। बोलावो- विदाई का अर्थ तो यह है कि उन्हे भेजना होता है।

चड़ी बहंता चौडोल- चौडोल, घोडा, पालकी पर चढकर चलते थे वह राजकुमारों ने त्याग दिया है। इन सभी सुखासनों की ममता को भूला दिया

राघव रिदा विचारय, सीख दिवंता सांभलौ।
सुरनर करै सलांम, अंग उलटौ तन भीभलौ।।27।।

रामलक्ष्मण सीता सहित अयोध्या से विदाई लेते समय हृदय में विचार किया। अब अयोध्या के लोगों से विदा लेकर आगे वनवास की ओर प्रस्थान करना है उन अयोध्या के लोगों को सीख-समझाया कि आप लोग सचेत-सावधान रहो। किसी प्रकार की चिंता न करें, और अयोध्या में शांति से रहे। भरत को राजा बनाये और राजा-प्रजा आपस में तालमेल से रहे, किसी प्रकार से इस घटना को लेकर विरोध न करें। अयोध्या से राम, भाई लक्ष्मण और सीता सहित प्रस्थान किया तब सुर-नर, मानव, गन्धर्व आदि ने नमन किया। पिता के वचन सत्य करने वाले श्रीराम धन्य है। अयोध्या वासी राम जी की सीख मानकर वापिस चल पडे। उनका एक दूसरे के सन्मुख न होकर पीठ हो गयी। राम जी का मुख वन की ओर तथा नगरवासियों का मुख अयोध्या की ओर था। राम जी के शरीर में-भीभलौ-विहवलता थी। आनन्द से शरीर रोमान्चित था। पिता के वचन का पालन की खुशी और वन में भ्रमण तथा अपने संसार में आने का प्रयोजन की सिद्धि यही सभी कार्य सम्पन्न होने जा रहे थे। इसलिये तन ''भीभलौ''

रामां ल्होड़ौ वीर, मन मांहे वेदल थयौ।
नैण न खंडे नीर, कर साहै नेड़ौ लियौ।।28।।

राम का छोटा भाई लक्ष्मण मन में दुखी हो गया। कहां अयोध्या के राजकुमार वहां की सुख सुविधा और कहां अपने परिवार से दूर वनवास। आंखों में आंसुओं की धारा बहने लगी। ''माता मन अणराय, मो सिरजी करतार क्यू'' साखी। रामजी ने अपने छोटे भाई को बडे ही प्यार से हाथ पकड़ कर अपने नजदीक लिया और सान्त्वना दी।

राजा दसरथ जोवै माघ, कंवर कुंणां दिस नीकल्या।
रंग सुरंगी पाघ, प्यारा परदेषी न मिल्या।।29।।

सीता सहित राम लक्ष्मण वन के लिये अयोध्या से निकल कर चल पड़े, राजा दशरथ मार्ग देख रहे हैं कि कुंवर किस दिशा की ओर निकल कर

गये उन राम लक्ष्मण की पागड़ी चित्र विचित्र रंगीली है। वे राजकुमार कहीं भी जायेंगे तो पहचान लीये जायेंगे देश, काल, जाति के अनुसार पगड़ी पहनने का ढंग अलग-अलग होता आया है। मेरे प्यारे सपुत्र परदेशी हो गये है जाते समय भी मिलकर नहीं गये फिर मिलना कब होगा। राजा दशरथ ने पुत्र वियोग में विलाप किया।

राजा दसरथ जोवै माघ, उर मांहे उणति करै।
सरवण तणै सराप्य, राजाजी रूदन करै।।30।।

राजा दशरथ मार्ग को देख रहे हैं कि कहीं जाते हुए एक बार ही दीख जाये।

राजा जी ह्वदय में उंणति करै- अपने आप में हीन भावना कर रहे है। अपने गर्व को गलित कर रहे है' अर्थात मेरी एक भी बात नहीं स्वीकार्य हो रही है। राजा दसरथ ने पिछली बात को याद किया और श्रवण के माता पिता ने अपने पुत्र के वियोग में तडपते हुए राजा जी को शाप दिया था। कि जिस प्रकार से हम अपने पुत्र वियोग मे तड़फते हुए प्राण दे रहे है, उसी प्रकार हे राजन्! आप भी इसी दशा को प्राप्त हो जाओगे। अन्त में ''कृतंस्मर, कृतं स्मर।। जीवन में किये हुए उत्कट-पाप- पुण्य ही याद आते है और पाप-पुण्य जीवन के साथी बनते है राजा जी इस बात का स्मरण करके रोने लगे।

●●●

राग हंसो

चाल्या राम लखंण कंवार, दीन्हा डेरा वंणी मंझारि।
रंग विरंग हुवो घट राव, खेल्यौ हंस पहुंती आव।।31।।

सीता सहित राम लक्ष्मण राजकुमार चल पड़े। आगे चलकर घने वन में डेरा डाल दिया। चित्र कूट धाम ही था जहां पर रमणीक सौम्य जल से पूरित स्थान मे अपना आसन जमाया। राजा जी का शरीर विरंगा हो गया।

जीवन अवस्था में तो चेतना से संयुक्त रंग-राग सौन्दर्य संपन्न था, किन्तु हंस-जीव खेल कर गया और राजा की आयु पूर्ण हो गयी। सुरंग चेतन शरीर विरंगा मृत्यु को प्राप्त हो गया। जीव-हंस उड़गया ज्योति ज्योति में मिल गयी।

एक दिहाड़ौ सौ भी थयौ, राम रमंतौ कुछड़ि लयौ।
एक दिहाड़ौ ओ भी थयौ, राम विना राजा काल कियौ ।।32।।

कवि कहता है कि एक दिन वह भी था जब राम को राजा दशरथ कुछड़ (गोदी) में लेते थे उन्हे खिलाते थे, क्रीडा करते थे। आज एक दिन यह भी आया कि राम के बिना राजा काल (मृत्यु) को प्राप्त हो गये। समय बलवान है कहां किसके साथ क्या हो जाये कहना कठिन है।

राम कहै रीसाय, भरत भली परि बाहड़ो।
महलां उतारया थारी मांय, देस निकाल्या रहखड़ो। 33।।

चित्रकूट में भरत जी भाई राम को मनाने के लिये पीछे आये थे तब लक्ष्मण ने क्रोध करके राम से कहा था कि भरत तो भला है-अच्छा है जो अपने को वापिस बुलाने के लिये आ गया हैं कहा भी हैं - रीस करे रीसाणो।

भरथ भयो अंणराय, राघव रंने पधारियां।
गया तीण ज्यौ तोड़ि, नातो नेह निवारिया।।34।।

लक्ष्मण के खरे-खरे कटु वचनों को श्रवण करके भरत दुखी हो गया। बात सत्य थी भरत ने दुःखी मन से वापसी का मार्ग लिया और अयोध्या लौट आये। तपस्वी की भांति अपने जीवन को बिताते हुए भाई राम के राज्य की धरोहर की रक्षा करते रहे। सीता लक्ष्मण सहित राम ने आगे वन में प्रस्थान किया। राम वैराग्यवान होकर ममता, मोह, माया, राजपाट, को तिनके की भांति तोड़ कर आगे प्रस्थान कर गये। अपने कर्तव्य का निर्वहन करने के लिये राम ने त्याग किया। धर्म की मर्यादा बांधी।

रावण लंका जाय करि, भोज इह गुझ सुंणाय
वै कुंण छा सीता परणग्या, खबरि लियावो जाय।।35।।

सीता स्वयंवर मं लंकाधिपति रावण आया था। धुनष पर डोरी चढा कर सीता से विवाह करना चाहता था। किन्तु होनहार कुछ और ही थी। देवताओं ने सोचा कि यह रावण सफल है इसे यहां से दूर कैसे हटाया जाये। क्योंकि रावण देश भक्त था।

प्रथम अपने देश की रक्षा फिर दूसरे कार्य वह यह देवता जानते थे इसलिये देवताओं ने आकाश वाणी की कि हे रावण! तुम्हारी लंका में आग लग गयी हैं। रावण ने अपना प्रथम कर्तव्य देश की रक्षा का किया और वहां जनकपुरी से चला गया। पीछे मैदान खाली हो गया। रामचन्द्र जी ने धनुष उठा कर जनक का कार्य पूर्ण किया।

रावण ने आगे लंका में जाकर देखा था वहां किसी प्रकार से आग नहीं लगी थी। सभी कुछ सामान्य चल रहा था। तब रावण ने अपने एक सूचना मंत्री भोज को अपने पास बुलाया और इस प्रकार की गुह्य-गुप्त बात भोज को सुनायी। रावण कहने लगा- वे कौन थे जो स्वंयवर में धनुष भंग कर सीता को परण-विवाह कर के ले गये। भोज तुम जाओं और पता लगा कर आओं। वह सीता इस समय कहां होगी, कैसी है उसे उठाकर लाया जा सकता है कि नहीं, जाकर पूरी खब लेकर आओ।

रजपूत रावण राव रो, संक विण्य रमै सिकार।
आंसण्य आयौ राम रै, देख्यौ मढी दवार।।36।।

राजा रावण का दूत-मंत्री भोज बिना किसी शंका-भय के शिकार खेलता हुआ राम जी के आसन-पंचवटी में आ गया। सीता सहित राम लक्ष्मण पंचवटी में पर्ण कुटिया बना कर रहने लगे थे। भोज मढी-पर्ण कुटी के अन्दर प्रवेश कर गया और वहां भी कुछ हिसाब-किताब देखा।

यह मढ़देवल मूल न जोयबा'' शब्द -98

तापस पहुंतो तरै वंण्य, सती रहै उंण ठांय।
काया कुंमलाणी थकी, नर तूं नहरो कांय।।37।।

वह भोज तपस्वी के रूप में वहां पंचवटी में पहुंचा था। जहां सती

सीता रहती थी। सती सीता ने तपस्वी को देखा उसका शरीर बहुत ही दुबला-पतला कुंमलाया हुआ था। वह यात्रा के कष्ट से बहुत ही थका हुआ था। सती सीता कहने लगी हे नर! तुम नहरों-दुखकष्ट या बिमारी से ग्रस्त हो ऐसा क्यों है ?

काया दुख छै कांमणी, भोज कहै मुख भाखि।
हूं परदेशी पंथियो, सती सरण्य मोहि राखि।।38।।

वह पथिक भोज कहने लगा- हे कांमणी! मेरी काया में कष्ट है। आप ने जो पहचान की है वह सत्य है। मै परदेशी पथिक हूं। मुझे अपनी शरण में रखों-

उपदर चाल्यौ उंण दिनां, रवण्य रहयौ जित राति।
पंचमढी हूं चालियौ, पोह विगसी परभाति।।39।।

वह भोज रात्रि को पंचवटी में ही रहा, वह रात्रि में विश्राम नहीं कर रहा था। यही सीता है और इनके पति अयोध्या राजकुमार राम जी यही है इन्होने ही धनुष यज्ञ में सीता को जीता है। अब यहां वनवास में अपने पिता के वचन से चले आयें है। वह रावण का मंत्री भोज पूरी रात्रि उपद्रव करता रहा। और योजना बनाता रहा। प्रभात समय में वहां से सूर्योदय से पूर्व की सभी हिसाब किताब लेकर पंचमढी से चल पडा।

नख चख सगला निरखिया, विध्य सूं करै बखांण।
लंक नगर मां उण कहया, राणी सती तणां सहनांण।।40।।

भोज ने रात्रि निवास के समय सीता को नख से लेकर आंखों तक सम्पूर्ण शरीर को देखा था। वह वापिस समाचार लेकर लंका में रावण के पास चला गया। रावण ने भोज को पास बुलाया और सीता के बारे में समाचार पूछा- उस भोज ने लंका में रावण से सती सीता के सहनाण-सौन्दर्य का वर्णन किया।

इसड़ी तया न चौहटै, न का राय नरिंद।
लिछमी दीठी राजा राम रै, का घरि इंदाण इंद।।41।।

इसड़ी - ऐसी सीता जैसी स्त्री चारों तरफ कहीं नहीं है। नहीं किसी राजा की रानी है और नहीं कोई नरेन्द्र-सम्राट की पत्नी भी है। राजा राम के यहां पर मैंने साक्षात् लक्ष्मी देखी है वह सीता रूप में है, या फिर इन्द्र के घर इन्द्राणी हो सकती है, यह ठीक से मुझे पता नहीं है क्योंकि मैंने इन्द्राणी के सौन्दर्य को देखा नहीं है।

महल्य जिती महि ऊपरै, असी नै देखूं कांय।
बूंटै उपरि कांबली, जे कौ लिवै उठाय।।42।।

भोज कहने लगा- हे राव जी ! मैंने आपके महलों में देखा है तथा इस धरती पर भी देखा है सभी का निरीक्षण किया है किन्तु सीता जैसी सुन्दरी इनमें कोई नहीं है। सौन्दर्य की पराकाष्ठा है। रावण ने जानना चाहा कि उसकी सुरक्षा कैसी है तब भोज ने कहा कुछ भी सुरक्षा नहीं है बूटै-पौधे पर कांबली-कम्बल पड़ा हो जो कोई चाहे वह उठाकर ले जा सकता है। वह जड़ पौधा रोकेगा नही।

सूर उदै संसार मां, जिण खण्डि होय उजास।
सतियां सिरि सीता सती, विध्य सेवै वनवास।।43।।

संसार में जहां सूर्य उदय होता है वहीं प्रकाश होता है जहां सूर्य का प्रकाश नहीं पहुंचता है वहां रात्रि होती है। उसी प्रकार से सीता जहां रहेगी वहीं वह अपनी उपस्थिति दिखायेगी। यहां लंका में आ जायेगी तो लंका को प्रकाशित कर देगी किन्तु केवल बातों से कुछ नहीं होगा।

सतियों में शिरोमंणि सती सीता अपने दुर्भाग्य वशीभूत होकर वनवास में रह रही है वह वनवास में रहने योग्य नहीं है उसके आने से महलों की शोभा बढ़जायेगी।

कै ईसर घरि गोरिजा, कै वा रंभा वर नारि।
अपछरा राजा राम घरि, सीत असी उँण हारि।।44।।

या तो शिव के घर गौरी हैं या फिर रंभा अप्सरा है ऐसी ही अप्सरा राजा राम के घर पर सीता रूप में है सीता भी इन संसार की सर्वश्रेष्ठ स्त्रियों में एक है।

लोभारथ ले चालियौ, मन सुध महलां मांहि।
एकल कथ इसड़ी हुवै, वन मां तया रहाय।।45।।

रावण भोज से कहने लगा- ये गुप्त बातें एकान्त में होनी चाहिए। यह मै क्या सुन रहा हूँ कि सीता वन में रहती है सम्पूर्ण बातें जानने के लिये लोभारथ- लोभार्थी रावण उन महलों में भोज को ले चला जहां पर एक मन एक दिल से वार्तालाप की जा सके, उस कर्म को बिना किसी के बताये कार्य रूप में जो जल लाती है सीता की सेविका हो सकती है बराबरी कैसे कर सकती है।

भूंडो भोज न जाण्य जै, मंदोवरी रा मंझ।
सुदरि सोहै आंगणै, लंबी जिसी स लंझ।।46।।

दस बुद्धिमान राव रावण! आप मुझे भूंडो- बदनाम, झूठा पुरुष नहीं जाने। हे मन्दोवरी के श्रेष्ठ पतिदेव! मै सत्य सपथ खाकर कहता हूँ कि यदि सीता को आप ला सको तो वह आपके स्वर्ण महल के आंगन में शोभायमान होगी। आपका महल भी वास्तव में स्वर्णमय हो जायेगा। उसका सम्पूर्ण शरीर देदीप्यमान है उसकी गरदन-ग्रीवा बहुत ही सुडौल एवं लंझ- लंबी है, वह सीता स्त्री रत्न है।

पाबासर री तिजणी, मान सरोवरि हंझ।
सीह विलुधा सांकल, ज्यौ धण दीसै संझ।।47।।

कुमारी कन्याऐ इच्छित वर प्राप्ति हेतु होली के बाद तीसरे दिन गौरा की पूजा किसी तालाब पर जाकर करती है। उनमें पाबासर- पाबा के तालाब जल पर गौरा की पूजा करने वाली क्षेष्ठ कन्या जैसी सीता है।

जिस प्रकार से मान सरोवर पर हंसिनी शोभा देती है उसी प्रकार से सीता भी पाबासर पर शोभायमान हो रही है। सीता अलंकारो से अलंकृत होकर वैसी ही दिखाई देती है जिस प्रकार से संध्या बेला मे लालिमा से युक्त आकाश दिखाई देता है

दीठो पूरब मालवो, दिखण सूं गुजरात।
उतर देस पचाध सोह, ठुकराईसोहछात।।48।।

भोज कहने लगा! कि मैंने पूर्व, मालवा दक्षिण, गुजरात देखा है। उतर देश पचाद्य-पंजाव भी देखा है। इन देशो में सुन्दरतम स्त्रियां देखी है अनेक राज घराने की ठकुराई भी देखी है किन्तु सती सीता के सामने सभी फीकी पड़ जाती है।

सिंध सुवालख पोकरण, मारू ताह वचीत।
तयां सिरयै सीता तया, नखता सिरि आदीत।।49।।

सिन्ध प्रदेश, सुवालख- श्यालक, नागौर की पट्टी विशेष पोकरण, मरू देश के सभी वचीत- चित्र विचित्र देश। भोज कहता है कि मैंने देखे है। किन्तु इनमें भी सीता के बराबरी करने वाली कोई रत्न नहीं है सीता वैसी ही सर्व शिरोमणि देदीप्यमान हो रही है जैसे नक्षत्रों में आदित्य सूर्य प्रकाशमान है।

दीठी रांणी रावली, मन भीतरि विपलोय।
सीता सरीखी भारिजा, कोई सुरगां होय तो होय।। 50।।

हे दसकन्धर! मैंने आपके भी राज महल में राणियों का मन ही मन में विचार भी किया है विपलोय-विचार किया है गुण अवगुणो की परीक्षा की है किन्तु मुझे निरासा ही हाथ लगी। सीता जैसी भार्या आपके राज दरबार में भी नहीं है।

इस धरती पर तो मैंने देख लिया है कोई स्वर्ग में यदि हो तो हो सकती है क्योंकि स्वर्ग को मैंने देखा नहीं है।

भोज एति दाखवी, रावंण रै घरि जाय।
ज्यौ रंढ़लागी रावंण, बात कही विगताय।।51।।

भोज ने इतनी बातें रावण के घर जाकर कही रावण के मन को खूब टंटोला। बात बढ़ा चढ़ा कर के कही। रावण ने भोज की बातें ध्यान से श्रवण की और सीता का ध्यान करने लगे जब भी वाणी से शब्द निकलता तो हाय सीता हाय सीता ''रावण के अन्तर्मन में बात प्रवेश कर गयी थी। क्योंकि

भोज ने एक-एक बात बड़े ही विचार से कही। विगताय- बीती हुई बातें ही आगे के लिये नींव का कार्य करती है।

सीस गयौ सुकियारथौ, उंणि सुंदरि अरथाय।
सीस पखौ ही सारेस्यां, सीत सटै सिर जाय।। 52।।

रावण के मन ही मन में रटन लग गयी थी और कहने लगा- यदि सीता की प्राप्ति के लिये मेरा सिर भी कट जाये तो सुकियारथौ- शुभ कर्म है। उस सुन्दरी की प्राप्ति के लिये मेरा बलिदान होना श्रेष्ठ है। यदि सीता की प्राप्ति में मेरा सिर कट जाये तो मै बिना सिर के ही कार्य चला लूंगा। यदि सीता के बदले सिर कटता है तो कट जाने दो।

रावण तेड़्या जोयसी, जोयस दिवौ विचार।
सीत हड़्या कांयौ हुवै, जीत कै आवै हारि।।53।।

रावण ने ज्योतिषियों को बुलाया और कहने लगा आप लोग विचार दीजिये। सीता का हरण करने से क्या होगा। जीतकर के आयेंगे या हार करके आ जायेगें

जोतिग बाचै जोयसी, सरबे लग्न विचार।
सीत हड़ै तो कलि संवौ, मरै तो मोख दवार।।54।।

ज्योतिषियों ने ज्योतिष वाचना प्रारम्भ किया। तत्काल के लग्न देखे और विचार किया। कहने लगे- सीता का हरण करोगे तो निश्चित ही कलि संवौ-महा भंयकर युद्ध होगा। काल मंडरायेगा। उसमें बचाव होना कठिन होगा और मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे तो मुक्ति मिल जायेगी।

मंडलीक महूरत साझिया, साझ्या सासत वार।
नर नगर हूं नीसरै, आया पवल्य दवार।। 55।।

मण्डलीक राजा रावण के ज्योतिषियों ने सीता हरण के लिये प्रस्थान का मुहूर्त निकाला। ज्योतिषियों ने शास्त्रों के नियमानुसार ही प्रस्थान का मुहूर्त दिया। नरक्षेष्ठ-मंडलीक राजा रावण नगर से प्रस्थान करके पवल्य द्वार (प्रवेश द्वार) तक आ गया इसी द्वार से लंका से बाहर गमन करेगा।

अह डावौ खर दांहिवौ, साम्हौ पुलै सुनार।
आप ठगावां के बांह ठगा, कहि भोजला विचार।।56।।

अह (सांप) बांये तरफ आ गया। खर (गधा) दांहिवौ - दाहिना आ गया सामने से सुनार आ गया। रावण ने भोज से कहा- कि अब इन सुगुनो का क्या फल है ? हम ठगे जायेगें या उनको ठग कर आयेगें। भोजला विचार कर कहियेगा।

●●●

राग सुहब

सासंत सुणै किसौ सौदागर, लाहौ लै विणजारौ।
जीपण धरती रहै अपरछन्द, तोनै कुंण छै मारंण हारौ।। 57।।

सौदागर- व्यापारी कौन- कौन सा कार्य शास्त्र के अनुसार करेगा। उनका तो यही कार्य है सौदागर का कर्म-धर्म लाभ की प्राप्ति है उसे किसी शास्त्र या नियम की आवश्यकता नहीं है। हे रावण जीपण-जब तक इस धरती पर रहेगा तब तक ऐसा कोई अपरछन्द-छुपा हुआ सूरवीर नहीं है जो तुम्हे मार सके।

मारण हार नहीं को देखू, जे तूं कही नै मारै।
जे बात कही रावण सूं, राणी सुणे विचारै।।58।।

भोज कहने लगा मै देख रहा हूं कि हे रावण! आपको मारने वाला कोई नहीं है यदि मारेगा तो तू ही किसी को मारेगा। ये बात भोज ने रावण से कही, रानी मन्दोदरी ने सभी कुछ सुना और विचार किया कि जिस राजा के मंत्री सलाहकार ही ऐसे भोज जैसे होगें। उस राज्य का विनाश निश्चित है किन्तु अब राजा को कौन समझावे। नियति-होनहार होगी वही होगा। मन्दोदरी ने फिर भी राजा को नियम-मर्यादा पर लाने का भरसक प्रयास जारी रखा।

●●●

राग भुवंरो

रांम खिणावै रामसर, लछमण बांधै पाल्य।
सिरि सोनै रो बेहड़ो, सीतल दे पण्य हारि।।59।।

रामचन्द्र जी रामसर तालाब खुदवाते। लक्ष्मण तालाब की पाल बंधवाते, सिर पर स्वंय कलश उठाकर सीता पानी लाती बेहड़ों-दो घट एक ऊपर दूसरा सिर पर रख लाना यह कार्य सीता करती थी।

प्रथम आवश्यकता जल की होती है वह जल-तालाब नदी कुंवा से प्राप्त किया जाता है। रामजी यही कर रहे थे सभी को जल सुलभ हो जाये इसलिये तालाब खुदवा रहे थे। लक्ष्मण पाल-अर्थात मर्यादा बांध रहे थे जिससे जल सुरक्षित रह सके। सीता जी स्वयं पनिहारिन थी, जल लाकर आपूर्ति करना। सभी जनो को अन्न जल से तृप्त करना।

राम खिणायों राम सर, अगमे नीर अथाह
सीता सरि आवै नही, आकल्य चालै काह।।60।।

राम जी ने रामसर तालाब खुदवाया जिसमें अथाह नीर भरा हुआ था। सभी जल पीने के लिये जीव छोटे बडे. आते थे अपनी प्यास बुझाते थे। उस दिन सदा की भांति सीता भी आ रही थी जल ले जाने के लिए किन्तु आज सीता सदा की भांति शांत स्वभाव वाली नहीं थी। लक्ष्मण ने देखा कि यह वह सीता माता का रूप आज नहीं है, क्रोधित होकर आ रही है मानों कोई न कोई कलह-लड़ाई करने वाली है। क्रोधित होकर चलने में उसकी चाल-ढाल सभी कुछ बदली हुई थी।

हाथ कटोरो सिरि घड़ो, सीता पांणी जाय।
चंपौ मरवौ केवड़ौ, सीचै छै वणराय।।61।।

सीता जी हाथ में तो कटोरा लिये हुए थी और सिर पर पानी का घड़ा था जल लेने के लिये अपनी कुटिया से सरोवर जाती थी। हाथ कटोरा इसलिये कि सीता ने अपनी कुटिया के आस-पास चंपा, मरवा, और केवड़े

के सुगन्धित फूल वाले पौधे लगा रखे थे। उनकी सिंचाई करने के लिये सचेत रहती थी। कि कही ये पौधे बिना जल के मुरझा नहीं जाये, कटोरे से थोडा थोड़ा पानी उन पौधो को पिलाती थी कहीं ये नाजुक पौधे अधिक पानी से सूख न जाये या कम पानी से भी मुरझा न जाये। युक्ति युक्त जल कटोरे से उन्हे पिलाती थी। बालक वत उनका पालण-पौषण करती थी- वे वन भी बदले में फल, फूल, लकड़ी, छाया वर्षा प्रदान करते थे। कहीं ऐसा न हो कि एक तरफा लाभ न ले, सेवा करो और मेवा प्राप्त करो

सोवन मिरघ सरोवरा, सती फिरंतौ दीठ।
इसड़ा मिरघ न मारही, लखण कमावै झूठ।।62।।

स्वर्ण मृग रामसर-सरोबर पर सती सीता ने फिरते हुए देखा। देखते ही सीता के मन मे लोभ जग गया। उसे प्राप्ति का उपाय सोचने लगी लक्ष्मण के पास जाकर कहने लगी। ऐसे सुन्दर मृग को मारेगा नहीं तो लक्ष्मण की ये बड़ी बड़ी बाते, एवं बाण झूठा है। हे लक्ष्मण आप इन व्यर्थ के बाणो को छोड़ दीजिये और बड़ी बड़ी वीरता की बाते भी न करें।

सोवन मिरघ सरोवरां, निरख्यौ नजरि नीहाल्य।
छाले घड़ो ज्यौ बाहड़ी, आई मिरघौ भाल्य।।63।।

सरोवर पर सोने का मृग देखा, उस सौन्दर्य युक्त सोने के मृग को देखकर नजरि-दृष्टि निहाल्य-आनन्दित हो गयी सीता जल से घड़ा भरकर वापिस बाहड़ी-आयी। सीता को मृग बहुत ही प्यारा लगा। दिल मे बैठ गया। अब उसे भूलना असंभव हो गया। अपने बच्छे को गाय स्मरण रखती है उसी प्रकार पुत्रवत सीता उस मृग को नहीं भूला सकी।

हीर झलके हिरण रै, चौकस रतन चियार
उरि उपरि ओपै भलौ, कांचू दे किरतार।।64।।

हिरण के स्वर्ण मय शरीर के उपर हीरे चमचमाहट कर रहे हैं चारो रतन, हीरा, मोती, पुखराज और मूंगा, माणिक्य चौकस चारों तरफ झिल मिल झिलमिल चमकते हुए शोभायमान हो रहे हैं। सीता ने अपनी आंखों से

देखा और मन ही मन विचार करने लगी मेरे शरीर पर कांचू (कांचली) इस मृग छाल की बन जाये तो बहुत ही शोभा होगी मै शोभायमान सुन्दरी दिखने लगूंगी यह हो सकता है। किरतार-भगवान ने ही मेरे लिये इस मृग को भेजा होगा। इस समय मुझे इसकी आवश्यकता भी है।

कूडा लछमंण धंणहड़ा, राम तुम्हारा बांण।
इसड़ा मिरघ नं मारहौ, कूड़ा करौ डफांण।।65।।

सीता कहने लगी हे लक्ष्मण! आप का देवरपना और राम का धणी-पति मालिकपना झूठा है और राम के बाण भी झूठे है जैसा आप कहते है अपने तथा अपने बाणों का बखान करते है ये सभी झूठे है ऐसा दिव्य स्वर्णमय हीरे लगे हुए हिरण को जिंदा या मूर्दा नहीं ला सकते तो क्यो झूठा डफाण-थोथी बातें करते है " थोथा ढोल बाजै घणा" जिमै कणुन दाणू"

सुण्य सीता लछमंण कहै, सोवन मिरघ न होय।
राम विछोहण तम छलणं, दांणौ हंदै कोय।।66।।

लक्ष्मण जी कहने लगे- हे सीता मेरी बात सुनो,! सोने का मृग नहीं हो सकता, यह तो कोई दानव है जो तुम्हारे हमारे साथ धोखा करने-छलने आया है। तुम्हारी इतनी प्रीति इस नकली बनावटी माया मृग पर हो गयी है तो अवश्य ही तुम्हे राम से अलग कर देगा यह छल-कपट तुम्हारे साथ होने वाला है, माया का मृग तो मोहित करके दुनियां को नाच नचा रहा है, दुनियां धोखे मे आ जाती है और दु:खी हो जाती है। हरि स्मरण-सेवा सभी छूट जाता है यही सीता तुम्हारे साथ भी होने वाला है इसलिये सब ध्यान रहे यही तुम्हारी समझदारी है कैकेयी ने हमारे साथ छल किया था इससे वनवास में निवास कर रहे है यह दूसरा छल भी उपस्थित हो गया है।

'पैसो कीयौ दाणवां, वन खंड चोर बईठ।
सीता दरसण भोलवी, कोई आयौ दैत वसीठ।।67।।

हे सीता! दानवों ने इस वनखण्ड में प्रवेश कर लिया है, ये चोर की तरह छुपकर प्रवेश कर गये है। ये मायावी राक्षस अनेकानेक माया रचित शरीरों से मोहित करते हैं। तुमने इस मृग का दर्शन किया है वह असली नहीं

है मायावी है। अवश्य ही कोई दानव मृग के रूप में घूम रहा है। हे देवी! मोह माया में पड़कर भूल मत कर अन्यथा इस माया के चक्कर में तो सम्पूर्ण संसार ही भटक रहा है। तुम्हे सावधान रहना चाहिये। हम इस समय असुरक्षित वन में है यहां हमारे साथ कुछ अनहोनी हो सकती है इसलिये सचेत रहो यह स्वर्ण मृग नहीं है यह तो कोई विशेष दैत्य है। कोई न कोई उपद्रव करेगा। स्त्रियां सौन्दर्य को देखकर स्वभाविक आकृष्ट हो जाती है। किन्तु सीता सती तुम कोई सामान्य स्त्री नहीं हो।

●●●

राग जैतसरी

दांमणौ, मरवौ बाहियौ बारि, सेहलउ सालउ करूं वणराय।
लाखणौ वन खंडे वन फले जाय। सोवंनो मिरघलौ चरि चरि जाय।।68।।

सदा हरे भरे सुगन्धित पेड़-पौधे तुलसी मरवा आदि को सीता कहने लगी मै लगाती हूं। अपनी कुटिया के चारो तरफ वन राजि शोभायमान हो रही है उन्हे बच्चे की तरह सहलाती हूँ, सींचाई करती हूं, खाद डालती हूं रखवाली करती हूं। वन की अभिवृद्धि करती हूं। जिससे यहां का पर्यावरण शुद्ध पवित्र बना रहे, मै इनकी सेवा करती हूं इन्हे बड़ा करती हूं तो ये भी मुझे फल-फूल सुगन्धित वर्षा छाया आदि देते हैं। लक्ष्मण तो वन खण्ड में कहीं दूर वनफल लाने चले जाते हैं और आप राम तो सदा समाधि-ध्यान में रहते हैं आपको तो दीन दुनियां का कुछ पता ही नहीं है तथा यह स्वर्ण मृगला मेरी बाड़ी को चर जाता है, तहस नहस कर देता है, कहा भी है राम रूप में जाम्भोजी ने-

कारिबो मिरघौ आवै नित बारि, मो नहीं कांचवौ तो भरतार।
पांय पडूं राघौ मिरघलौ मारि, श्री राम हो लाखण रिदा न विसारि।।69।।

श्रीराम जी के सन्मुख होकर सीता कहने लगी- यह कारिवां-चित कबरा स्वर्ण पर हीरे जडे.हुए विचित्र यह मृग रोज ही यहां दरवाजे पर आता है मेरे शरीर ढकने के लिये कांचली-कपड़ा नहीं है आप जैसे सर्व समर्थ मेरे पतिदेव हैं मैं आपके चरण कमलों को साष्टांग प्रणाम करती हूँ हे राघव! इस मृग की छाल मुझे चाहिये कैसे भी करें यह कार्य तो आपको पतिदेव होने के नाते से करना ही होगा। आप मेरे पति श्रेष्ठ श्रीराम हो लक्ष्मण की तरह सुनकर टाल-मटोल नहीं करना, भूल मत जाना।

जां नहीं नासिका तां किसौ सोड़, जां नहीं पीहरौ तां किसौ कोड़।
जां नहीं मात नै जहां नहीं तात, कैने कहूं सखी गुझरी बात।।70।।

जिसके नाक नहीं है उसके कैसी सोड (शर्म) शोभा है अर्थात् नक् कटा हो गया है" संसारिक मान मर्यादा चली गयी है उसके आगे कुछ कहना व्यर्थ ही है भैंस के आगे वीण बजाने जैसा है। जिसके पीहर नहीं है उसको कोड-प्रेम भाव किससे होगा। पीहर-पीव-पिता का घर जहां बेटी का कोड-प्रेमभाव वापिस ससुराल से पीहर जाने की इच्छा रहती है। वह इच्छा अन्तिम मृत्यु तक नहीं मिटती है। मेरी मां मेरे पिता मेरे भाई बहन इनसे मिलने की प्रबल इच्छा ही कोड है यदि पीहर ही नहीं रहा तो कोड कैसे रहेगा। जहां माता पिता नहीं है यहां वनवास में अब कोई नहीं है केवल मात्र राम लक्ष्मण है इनसे तो अपने दिल की बात कह चुकी हूँ, ये लोग तो "देख्या अण देख्या सुण्या अणसुण्या क्षिमा रूप तप कीजै" 103 देखी हुई को अनदेखी कर रहे है और सुनी हुई बात को अनसुनी कर रहे है क्षमा कर देना ही तपस्या है। हूँ।

बाप दे दांन तो सासरै मांन, सासरै मांन जे बाप दै दांन।
त्री आभरंण नहीं पिव किसौ मोह, पेट छालै प्रथी डेडरा सोह।। 71।।

यदि अपनी पुत्री को दायजा-दान देगा तो उसका ससुराल में सम्मान होगा और यदि पुत्री का ससुराल में सम्मान होगा तो पिता दान देगा।

अपनी त्रिया-स्त्री को आभरण-गहना, अलंकार नहीं दे सकता तो फिर पति से पत्नी मोह कैसे करेगी। पति पत्नी का आपसी प्रेम भाव तो तभी

बना रहेगा जब एक दूसरे की भावना-इच्छा का समादर करेंगे।

पति यदि पत्नी को भोजन देता है इतना ही प्रयाप्त नहीं है। पेट तो इस पृथ्वी पर डेडरा-मेढक आदि सभी जीव जन्तु भर लेते है।

कांय हुवै अति की कीध कलाप, पलांतर पावै ज पुनं रै पाप।
गंवरी नै पूजी मै रूद्र री नारी, मन वंछयौवर दिवै एण्य संसारि।।72।।

सीता पुन: कहने लगी- अब क्या होगा अत्यधिक कलाप-आलबाल बकने से। अब यहां कौन किसकी सुनता है। यह सुख-दुख, उतार-चढाव पूर्व जन्म के किये हुए पुण्य-पाप का ही फल है।

मैंने रूद्र-शिव की पत्नी गौरी की पूजा की थी, जिसका फल मुझे मन वांछित- मैंने जैसा चाहा था वह वर श्रीराम के रूप में मिल गया है।

जांणू छूं लोक जांणू छूं ब्रह्मंड जांणू छूं दीप जांणू छूं नवखंड।
जांणू छूं जीवरी जाति छै जेथ्य, सौवनौ मिरघलौ सिरजियौ तेथ।। 73।।

लक्ष्मण ने सीता को समझाते हुए इस प्रकार से कहा- मै इस लोक को जानता हूँ। मैं इस ब्रह्मण्ड को भी जानता हूँ। मै सात दीप नव खण्ड प्रमाण की सृष्टि को भी जानता हूँ। जितनी भी जीव योनियां-जातियां है उनको भी सभी को जानता हूँ। जिसने भी यह सोने का मृग रचा है उसको भी जानता हूँ अर्थात् हे सीता मै सभी को जानता हूं। यह स्वर्ण मृग मायावी दानवों द्वारा रचित है। इसके भोलावे में नहीं आना।

जांणू छूं मृतक सुरग पयांल, मारियै मिरघ बन्धै जंमजाल।
लाखण कहै सुंण साच विचार, अवर क्यौ मांगि देइ दै भरतार।। 74।।

इतना निश्चित है कि इस मायावी मृग को मारने से हम जंमजाल-जंजाल विपत्ति मे बन्ध जायेंगे'' बनवास का समय विपत्ति में पड़ जायेगा। यहां वन- के प्राकृतिक सौन्दर्य से वचिंत हो जायेगे। इसलिये कुछ समय वनवास का बचा हुआ है उसे व्यर्थ के जंजाल-झगड़े में नहीं नष्ट करें यही लक्ष्मण कहने लगा मेरा अभिमत है।

लक्ष्मण कहने लगे हे देवी! यह जिद-हठ छोड़ दे। यह मेरा वचन है मांग पूरी की जायेगी। तुम्हारी मांग-इच्छा सदा पूर्ण करते आये हैं। अब क्यों

नहीं करेगें। अन्य कुछ मांग लें।

थे जांणौ निठाहड़ी जायसी केथ,
म्हे जलजोगंणी जावां क्रखेति।
म्हे मसवासंणी चड़ां कंवलास।
नहीं कांचवौ नां हं थांरै पास।।75।।

सीता कहने लगी- आप जानते होगे कि यह निठाहड़ी-आलसी निठ्ल्ली कहां जायेगी।

किन्तु मै जल जोगणी बनकर कुरूक्षेत्र चली जाऊंगी। मैं मसवासणी- एक माह तक व्रत करके कैलाश पर चली जाऊंगी। मेरे को पहनने की कांचली स्वर्ण मृग चर्म की नहीं मिलेगी तो मैं तुम्हारे पास नहीं रहूंगी।

क्यौ चड़ै सामहां, पाणियां दीह, मोसती भाखियौ लोहड़ लीह।
कहियौ करैस्यौ न करौ नाटि, कहियौ छे जोय पटोलड़ी गांठि।। 76।।

बारात बनाकर- सवार होकर सामहां-सामने, पाणियां-जल कलश दीह- देखकर शुभ शकुन मानकर क्यो चढ़कर चले थे। यदि ऐसा ही करना था। (विवाह की सफलता के लिये सामने जल का कलशा आ जाये तो अच्छे शकुन माने जाते हैं। राम की बारात में अच्छे शकुन हुए होगें)

सीता कहती हैं कि आपको मेरी इच्छा पूरी नहीं करनी थी तो विवाह मंडप में प्रवेश ही क्यों किया।

सीता कहती है कि मै सती हूं। मेरा कहा हुआ लौह पर लीक है जो कभी मिटेगी नही। लौहड-लोहा-लीहलीक लकीर है भाखियों कही हुई । आपने विवाह होते समय बचन दिये थे कि आप जैसा कहोगी वैसा में करूंगा। अब मुकर -नाट क्यों रहे हो।

ये विवाह समय दिये हुए वचन रेशम वस्त्र की दी हुई गांठ की तरह है जो कभी खुलेगी नही। ज्यो खोलने की कोशिश करोगे त्यूं कसती ही जायेगी। (पटौलड़ी-रेशम की गांठ)

●●●

राग भुंवरौ

राज गह बाल गह तिया गह, तयो न मेटयौ जाय।

रांम पधारयौ वन खंडे, मिरघै घातण घाव।।77।।

भगवान राम ने सीता लक्ष्मण के संवाद को रोकते हुए कहा- भाई लक्ष्मण! राजहठ, बाल हठ, त्रियाहठ, ये तीनों हठ-मिटाये नहीं जाते। किन्तु पूरा करना ही होता है। इसलिये मै वन में इस कपटी स्वर्ण मृग के पीछे जाता हूं। ऐसा कहते हुए राम मृग को मारने के लिये घातण घाव- मारने के लिये चल पडे।

(लक्ष्मण को सचेत करते हुए कहा कि मै जाता हूं किन्तु भाई तुम सीता की रक्षा करना।

मारयौ मिरघौ न मरै, मिरघ खैले मिरघ छाल।

तीन्य बांण गुंण तांणिया, कियौ कुरंगै काल।।78।।

मारने पर भी मृग मरता नहीं है अर्थात सामान्य बाणों से वह मायावी मृग मरने में नहीं आता। ज्यों ज्यों राम जी बाण चलाते हैं वह दाव-कुदाव खेल जाता है। क्योंकि वह कपटी था।

आगे रामजी ने उनकी माया-छल कपट का जबाव देने के लिये तीन बांण एक साथ चढा लिये। तीन गुण, सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण, गुणज प्रकृति में समाहित है इन तीन गुणो को तीन बांण से विफल किया जा सकता है।

त्रय गुण्यो विषया वेदा, निस्त्रय गुण्यो भवार्जुना गीता कियो कुरंगे काल-कुरंग-बनावटी, अप्राकृतिक मृग काल मृत्यु को प्राप्त हो गया।
तीर पुलै गुण बाण हयो, तपत बूझो धारा जल बूंठै।

मिरघै पड़तै यो कहयौ, हयो रांम ज लखंण कंवार।

लाखण नांव ज लेवतां, पायौ मोख दवार।।79।।

रामजी ने जब तीन बाण एक साथ मारे तब वह मृग धरती पर गिर

पड़ा और गिरते हुए ये कहा- हे लक्ष्मण हे लक्ष्मण! मैं राम मारा गया' वह कपटी हरिण लक्ष्मण का नाम जीवन के अन्त समय मे ले रहा था तब वह मोक्ष को प्राप्त हो गया।

मिंदर वैठी मै सुण्यौ म्हारै कान्य गई भुंणकार।
लक्ष्मण वीर विछोहियौ सती तणौ भरतार।।80।।

सीता कहने लगी है लक्ष्मण! मैं मिंदर-पंचवटी कुटिया मे बैठी थी वही मैंने सुना- मेरे कानो में भुंणकर-शब्द ध्वनि पहुंची है तुम्हारे भाई राम का हम से विछोहियो- बिछोड़ा वियोग हो गया है मैं सती सीता मेरे भरतार-पतिदेव राम का विलग होना हो गया।

जतरी ऊगौ आथवै, अतरी बाजै पूंण।
राम कही नै मारिसी, राम ज मारै कूंण।।81।।

लक्ष्मण कहने लगा- जब तक सूर्य ऊगता है और आथवै छिपता है। जब तक पवन चल रही है तब तक राम को कौन मार सकता है। राम मर जायेगे तो ये सभी प्राकृतिक तत्व भी मर जायेंगे इस लिये प्रकृति से उत्पन्न जीव जन्तु राम को नहीं मार सकते यदि मारना चाहेंगे तो राम ही किसी को मार सकते है, बचाना चाहे तो बचा भी सकते हैं।

सुण्य लछमण सीता कहै, तौ मन्य हुई संजोय।
राम मूवां रल्य आंवणौ, ओ घर मोनै होय।।82।।

सीता कहने लगी- हे लक्ष्मण सुनो- तुम्हारे मन मे कुछ विकार आ गया है। तुम्हारे मन मे संयोग की भावना आ गयी है तुम यह समझते होगे कि राम मारा जायेगा तो रल्य आवणौ-पवित्र देवर भाभी का सम्बन्ध भंग करना चाहते होगे। सीता को पत्नी रूप मे स्वीकार कर लूं यह विचार यदि आ गया है तो यह तुम्हारी भावना पूर्ण कभी नहीं होगी। इसलिये राम विपत्ति मे है उन्हे बचाने के लिये अतिशीघ्र जाओ।

सुण सीतां लछमण कहै, इसड़ी नावै दाय।
रामचंद मांहरै वीर छै, हूं र जती तूं मांय।।83।।

लक्ष्मण ने कहा हे सीते! श्रवण करो। आपने जो कटु बचन कहे हैं ये मेरे को दाय-अच्छे नहीं लगे हैं। ऐसी बात जो आपने कहा वह ठीक नहीं है। मेरे मन को पीड़ा पहुचाने वाली है।

रामचन्द्र जी मेरे बड़े भाई है जो पिता तुल्य है। मैं लक्ष्मण जति हूं तूं मेरी माँ के समान पवित्र हो। आपको ऐसे वचन नहीं कहना चाहिये।

सुण्यं लछमणं सीतां कहे, उठ अर आघौ जाह।
मुगट धंणी कंणी मारियौ, राम अयोध्या राव।।84।।

सीता कहती है हे लक्ष्मण! सुनो यहां से उठ जाओं और आघौ (दूर) चले जाओ। मेरे पास बैठे हुए क्या कर रहे हो। जो मै कहती हूं वह तो करता नहीं है।

सीता कहने लगी- मेरे पति देव मुकुट मणी के स्वामी अयोध्या के राजा राम को तो किसी ने मार दिया है। तुम यहां बैठे बैठे बाते बना रहे हो।

जती ज उठ्यौ कोप करि, कर सूं काढी कार'
लीह न लोपै राजा राम री, हंम तंम ओही विचार।। 85।।

सीता के कठोर वचन सुनकर जती लक्ष्मण कोप करके उठ खड़ा हुआ।

और हाथ से कार-रेखा खीची झोपड़ी के चारो तरफ रेखा खीच कर यति लक्ष्मण ने कहा-हे सीता! लीह-लकीर रेखा मैंने जो राजा राम के नाम-मर्यादा की खींच दी है। कृपा करके इस को लोपना नहीं है। इससे बाहर नहीं आना है। मेरा और तुम्हारा यही विचार-मर्यादा है। अब मै जाता हूँ।

डगडग डैरू बावियौ, तपसी ऊभौ वारि।
भिछिया कांयन घात ही, श्रीराम री नारि।। 86।।

डगडग डेरू- डमरूं बजाया। एक तपस्वी बाहर खड़ा हुआ। सीता ने अपनी सुरक्षित झोंपड़ी से प्रथम तो डमरू की आवाज सुनी बाहर आकर देखा तो एक तपस्वी खड़ा है। रावण-तपस्वी ने बाहर आयी हुई सती सीता को देखा और विचार किया कि यही वह जनक दुलारी सती सौन्दर्य की

पराकाष्ठा सीता है। जैसी मेरे को भोज ने बतायी थी वह यही है। थोड़ा सावधान होकर कहने लगा - हे राम की नारी! खड़ी-खड़ी क्या देख रही हो भिक्षा क्यों नहीं देती हो। आप तो अयोध्या की रानी और वैदेही राजा जनक की राजदुलारी हो। क्या घर पर आया हुआ तपस्वी खाली जायेगा। भिक्षुक ज्यादा देर प्रतीक्षा नहीं कर सकता।

मैंने आदि परमतत्व प्राप्त कर लिया है इसलिये हे देवी! सच्चा भिक्षुक अधिकारी हूं

तपस्वी ने सीता कहै, सुणौ हमारी सीख
कार बड़ी राजा राम री, किण्य विध्य घातुं भीख।।87।।

तपस्वी को सीता कहने लगी- हे तपस्वी! मेरी बात-सीख सुनो। इस झोपड़ी के चारो तरफ कार- रेखा मर्यादा की रेखा राजा राम की सबसे बडी है मै इस कार को लोप कर बाहर आ नहीं सकती मै अन्दर, आप बाहर कैसे भिक्षा दे सकती हूँ आपको भिक्षा लेनी है तो आपही अन्दर आ जाइये। वह तपस्वी भेष में रावण कहने लगा- मै विरक्त तपस्वी साधु हूँ, मै अन्दर आ नहीं सकता-

सुण सीता तपसी कहै, सुणौ हमारी सीख
कर सूं पाटो मेल द्यौ, पग दे घातौ भीख।।88।।

तपस्वी रावण कहने लगा- हे सीता! मेरी सीख- सुझाव तुम सुनो! जिस राजा राम की कार की बात कर रही हो बाहर आने मे समर्थ नहीं हो तो भी एक उपाय है इस कार पर अपने हाथ से पाटो- पीढा रख दो। फिर उस पाटे पर पैर रखकर भिक्षा दे दो। कही योगी तपस्वी की बात भी मान्य होनी चाहिये।

सीता ल्याई भीखड़ी, छालि वन फलां थाल।
उचकि दांणौ ले चालियौ, जाणि उंगलियां बाल।।89।।

सीता जी ने तपस्वी के वचनों पर विश्वास कर लिया और वनफलों से थाली भरकर भिक्षा ले आयी।

राव रावण को भिक्षा कहां लेनी थी उसने तो उचक कर आगे लंबे हाथ कर के सीता की अंगुलियां पकड कर बाहर खींच लिया। जैसे बालक की अंगुलि पकड़कर उठा लेते है, उसी प्रकार सीता का हरण-अपहरण कर लिया और अतिशीघ्र चोर की भांति वहां से छुपकर चल पड़ा।

गुरड पंखां घट छावियौ, धर हरियौ असमांण।
रावण रूधौ वारियां, लंक न लाभै जांण।।90।।

रावण सीता को लेकर चल पड़ा तब भगवान विष्णु का वाहन गरूड जी अपनी पंखो से आच्छादित करते हुए तथा घरर हरियौ- आकाश मे धर-धर की आवाज करते हुए आ पहुंचा।

रावण के जाने के मार्ग को रोक दिया। गरूड़ जी कहने लगे हे रावण! मेरे रहते हुऐ तू माता सीता को लेकर लंका में नहीं जा सकता ये मेरे स्वामी विष्णु की पत्नी अर्धांगिनी लक्ष्मी है तुम्हारे यहां माया रह सकती है किन्तु लक्ष्मी नहीं रह सकती।

सुण्य रावण सीता कहै, वाच दिवौ मो बांह
गुरड़ पलाडू म्हारै साम्यरा, कुसले लंका जांह।।91।।

सीता कहने लगी हे रावण सुनो! आप मुझे हाथ उठाकर वचन दे तो मै अपने स्वामी विष्णु के वाहन गरूड़ को रोक दूगी। तुम्हारा मार्ग साफ हो जायेगा' आप सकुशल लंका जा सकते हो।

रांणौ रावंण व्यासियौ, सांभल्य राणी सीव।
सूंपूं लंक स तोरवी, भाट जनक री धीव।।92।।

राणा रावण सीता की बात का उपहास उड़ाते हुए हंसने लगा। व्यासियौ- अपने कार्य में सफल होकर प्रसन्नता की हंसी हंसने लगा। हे सीत! सीता तू सावधान होकर बात करो, मैं तुझे अपने मन को प्रसन्नता की बात कहता हूं जो सुनोगी तो तुम भी बहुत प्रसन्न हो जाओगी। मै तुझे श्रेष्ठ स्वर्णमयी लंका सौप दूंगा। अपनी पटरानी बनाऊंगा। आप तो जनक की बेटी हो वनवासी राम से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है।

तूं रावण मो बाप छै, मंदोवरी मो मांय।
जितरै आवै म्हारा बाहरू, तूं बांभंण हूं गांय।।93।।

हे रावण! तुम मेरे बाप- पिताजी हो, मंदोदरी मेरी मां है। जब तक मुझे ले जाने के लिये वाहरू-सैनिक नहीं आ जाते हैं तब तक मै गाय हूं और आप ब्राह्मण हैं ब्राह्मण गाय की रक्षा करेगा ही। बाप बेटी की रक्षा करेगा ही।

(सीता ने रावण को बाप कहा और मंदोदरी को मां कहा है- एक बार रावण ने अपने सैनिकों को भेजा कि जाओ अपने राज्य में जो भी बसता है उनसे कर- टैक्स ले आओ। सैनिको ने वनवासी ऋषियों से भी टैक्स मांगा। तब उन्होंने अपने खून का घड़ा भर कर रावण के लिये दे दिया। जब सैनिको ने राजा के सामने रक्त से भरा घड़ा रखा तब रावण ने पूछा इसमें क्या है। तब सेवकों ने कहा- राजन इस घड़े में ऋषियों का खून है उन्होंने आपके पास भेजा है टैक्स के रूप में राजन् इसे स्वीकार करो। रावण स्वयं विद्वान ज्ञाता था। उन्होंने कहा कि यह ऋषियों का खून मेरी मृत्यु का कारण बन सकता है। आप लोग इस रक्त से भरे हुए घड़े को राजा जनक के राज्य में ले जाकर गाड़ दो। सैनिकों ने ऐसा ही किया, राजा जनक के यहां भयंकर अकाल पड़ गया। वर्षा के अभाव में जनता में त्राहि त्राहि होने लगी।

जनता ने जाकर राजा से पुकार करी, राजा ने ज्योतिषियों से पूछा तब उन्होने बताया राजन्! आप स्वयं अपने खेत में जाकर हल चलाएँ। रानी -भातो-भोजन लेकर जाये तभी वर्षा संभव होगी। राजा जनक ने खेत में हल जोता रानी भोजन लेकर आयी। ज्योंहि हल चलाया त्योंहि हल के आगे के तीखे अस्त्र को सीत कहते है उसी सीत से जमीन के अन्दर से एक घड़ा टकरा कर निकल गया। उस घड़े में जो एक सुन्दर कन्या प्रगट हो गयी। सीत से निकलने वाली कन्या का नाम सीता रख दिया गया। राजा रानी अपनी कन्या भगवान का प्रसाद मानकर घर ले गये। उसका पालन-पोषण किया वही सीता है। जिसको रावण अपहरण करके ले जा रहा था। इसलिये सीता ने कहा रावण! वही तुम्हारा धन खून था। उससे मै जनम लेने वाली सीता तुम्हारी पुत्री हूँ तू मेरा बाप है पुत्री की तरह ले जा सकता है इस मेरे

स्वामी के वाहन गुरूड़ का मैं रोक दूंगी। तू निर्भय होकर लंका मै जा सकता है। (जनश्रुति से यह कथा प्रचलित है)

रीण पड़ी दिन आथवौ, गीध विलंब्यौ आय।
रथ घोड़ा कुटका किया, रावण जांण न पाय।।94।।

सीता को लेकर रावण आगे चला दिन-सूर्य छिप गया। रात्रि आ गयी। एक गृधराज सामने आकर विलंब्यौं-चिपक गया और रावण का रथ घोड़ो का टुकडा टुकडा कर दिया सवारी साधन टूट गया रावण आगे नहीं बढ़पाया।

रावण के दस सिर थे-और बीस भुजाएँ थी।

अर्थात् रावण-**अति बुधवन्तों सीता काज लुभाणो।**

रावण अति बुद्धिमान था। दस व्यक्तियों के पास जितनी बुद्धि होती है उतनी रावण अकेले के पास थी। दस आदमी में जितनी ताकत होती है उतनी रावण अकेले के पास थी। बुद्धि का क्षेत्र शिर-मस्तिष्क होता है ताकत का क्षेत्र भुजाएँ होती हैं ''इसलिये दस की ताकत होती उतनी रावण अकेले के पास थी।

''**एक कहे बात झूठी, दस कहै सौ साची**'' रावण ने अपनी बुद्धि और पूरी ताकत से गीधराज का सामना किया पंखराज गीध का विहंडन करके मारकर के सीता को लेकर लंका में पहुंच गया।

मारि मिरघ का वड़ि कीयौ, कांम कियौ दरिहाल।
सूनां लछमंण झूंपडा, सीता कवंण हवाल।।95।।

लक्ष्मण राम जी के पास पहुंच गया। रामजी ने कपटी मृग मार कर दरिहाल-दु:ख दायी कार्य कर डाला। दर्द भरा कार्य कर डाला। इसी जंजाल में पड़ जाने से आगे का कार्य कष्ट दायी हो गया।

राम जी कहने लगे भाई लक्ष्मण! झोपड़ा पंचवटी सूनी हो गयी है वहां रक्षा के लिये रखा था किन्तु तुमने अपने भाई की आज्ञा का उल्लघंन

किया है। अब जाकर देखते हैं सीता का क्या हाल चाल है।

अभावण दीसै धवल, कंवला काग बईठ
ज्यौ धंण दीठी नांह विण्य, धंण विण्य नांह मं दीठ।।96।।

राम लक्ष्मण दोनों पंचवटी कुटिया में पहुंचे आगे चलकर अभावण-अप्रिय दिखाई दे रही थी पंचवटी की शोभा। कुटिया के कंवला-दीवारों पर कौवे बैठे

वीस भुजा दससीर ज, वीसे खड्ग संमाहि।
पंखराय नै विहंड करि, लंक पंहूतो जाय।।97।।

हुए कुरूर वाणी बोल रहे थे जैसे पत्नी पति के वियोग में दीखती है। उसी प्रकार से बिना पत्नी के पति भी उदासीन दुखी दिखता है। उसी प्रकार से यह पंचवटी भी श्रृंगार-खुशी रहित दिखाई देती है यहां गृह लक्ष्मी सती सीता नहीं है।

राम रोवै लछंमण धीरवै, गहला राम न रोय।
सीत गई तो जांण दे, ले लोटी मुख धोय।।98।।

सीता पंचवटी में नहीं मिली राम रोने-विलाप करने लगे, लक्ष्मण धैर्य बंधाने लगे। हे भाई राम! आप गहला- बावला हो गये हो यह समय रोने का नहीं है। धैर्य धारण करो और सीता की खोज करने का उपाय करो। सीता अपनी इच्छा से गयी है उसे जबरन स्त्री बलात् से ले जाने वाला कोई नहीं है। आप सीता को जाने दीजिये। उनका कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। वह सती सामर्थ्यवान है कोई उनके सामने आंख उठाकर भी नहीं देख सकता।

हे राम! आपके आंखों में आंसुओं की धारा बह रही है ले लोटी-मिट्टी की सुराही जिसमें जल रखा जाता है आप इसमें से जल लेकर मुंह आंखे धो डालिये। स्वस्थ हो जाइये।

हे राम! आप नारायण होकर नर का चरित्र कर रहे हैं, सीता के साथ छल कियां है न कि रावण ने आपके साथ। पहले रावण को सूरवीर

ज्ञानी होने का वचन दिया था फिर सीता को भेज कर दहसिर का दस मस्तक छेद्या-काट डाला।

राम रोवै लछमण धीरवै, गणवंत मेल्है चीस।
सीत गयी तो जांण दे, अवर अणाऊं बीस।।99।।

राम सीता के वियोग मे रोते है। लक्ष्मण धैर्य बंधाते है। यहां पर किस्किन्धा पर्वत पर हनुमान जी से मिलन हो जाता है। सारी बाते हनुमान जी को बता देते है, उन्हे कोई ऐसा सहयोगी मिल जाये और सीता की खोज, रावण की मृत्यु, सीता की वापसी में सहयोगी बन सके इसी तलाश में पर्वत पर हनुमान जी सुग्रीव आदि से भेटं वार्तालाप मित्रता हो गयी। गणवंत-गणाना ईस वानरो में श्रेष्ठ तथा सेवको में शिरोमणि हनुमान जी मारे चीस-किलकारी मारते हैं राम लक्ष्मण को धैर्य बंधाते हैं अपनी वीरता का प्रदर्शन करते यहां पर हनुमान कहने लगे सीता गयी है यह निश्चित है। जबरदस्ती किसी ने नहीं की है यदि सीता अपनी इच्छा से कुछ विशेष प्रयोजन हेतु गयी है तो जाने दो। सीता जैसी अवर-अन्य बीस सीता और ला दूंगा।

गहला हंणवत बावला, तो मन्य किसी जगीस।
सीता नै सहंस पूजही, तूं रे अणावै बीस।।100।।

हे हनवंत- तूं गहला-गूंगा, बावला, पागल है तुम्हारे मन में यह कैसी जगीस-ज्ञान जागृत हुआ है जो ऐसी वार्ता कर रहा है सीता-लक्ष्मी को हजारों-हजारों जन समुदाय पूजते है' अर्थात लक्ष्मी-धन की प्राप्ति हेतु हजारों-हजारों जन आदरणीय मान कर स्मरण, मंत्र द्वारा पूजा करते है तूं हनुमंत कहता है कि मै बीस सीता और लाकर दे दूंगा। सीता तो एक ही है बीस कैसै हो सकती है तुम कहां से लाकर दोगे। असली सीता एक ही लाने का प्रयास करो। राम कहने लगे बिना-लक्ष्मी के मैं कैसे पालन-पोषण करूंगा। गृह लक्ष्मी से ही घर की शोभा है सभी का यथा युक्त पालन पोषण होता है। बिना गृह लक्ष्मी के घर -परिवार कैसा।

हित माता गुंण भारिजा, विड़ता बंधव च्यारि।
राम रोवंतौ क्यौं रहै, गई ज सीता नारि।।101।।

हितैषी-सदा ही हित की सोचने वाली माता-सद्‌गुणी-सदगुणो से सु सम्पन्न भार्या-पत्नी, अपने नजदीकी भाई मित्र और सहोदर भाई इनको भुलाया नहीं जा सकता। ये विपति काल में काम आते हैं। राम कहने लगे सर्वगुण सम्पन्न मेरी भार्या- भरण-पोषण करने वाली चली गयी और आप लोग चुप होने की बात कह रहे हैं।

एक लुकाठी न जगै, नी उजियारो होय।
सीत गई लछमंण मारियै, राम अकेलो होय।।102।।

अकेली लकड़ी- लुकाठी-जलती नहीं है जब जलेगी नहीं तो उजियारा कैसे होगा। गृहस्थ जीवन अकेला नहीं हो सकता। घर में उजियारा-प्रकाश कैसे होगा। हे लक्ष्मण! सीता चली गयी। या किसी ने मार दी। किन्तु राम अकेला हो गया है।

स्त्री -पुरुष दो पहियों से संसार की गति होती है अन्यथा गाड़ी वहीं ठप हो जायेगी। गतिमान विकास रूक जायेगा।

परि पुरषां ज पांहणी, पांणी गई ज दूरी।
चाचर वाड़ै वा गई, बैस सभा तै चूरी।।103।।

सीता कहां गयी होगी यह अनुमान ही हो सकता है। या तो सीता पर पुरुषों द्वारा अपहरण कर ली गयी हो। पांहणी-हाथों में चढ़गयी हो। या जल लेने के लिये कहीं दूर चली गयी हो, या सीता चाचर वाड़े नृत्य शाला में चली गयी हो, क्या वहीं पर बैठी नृत्य में लीन हो गयी होगी। क्या हुआ होगा यह तो निश्चित कहना कठिन है।

पहलू मारै पुरिस नै, साथ्य सती पण्य होय
तया भरौसो जन करो, गहला राम न रोय।।104।।

हे राम! प्रथम तो अपने पुरूष-पति को मार डालती है फिर उसके साथ सती भी हो जाती है स्त्रियों का क्या भरोसा किया जावे उनका मन बुद्धि कभी बदल जाता है कुछ भी नहीं कहा जा सकता है कि यह कब क्या करने वाली है।

लक्ष्मण कहते हैं राम! स्त्री के वियोग में रोना नहीं चाहिये यह कैसी मर्यादा एक तरफा सिद्धि होगी। सीता हमे छोड़कर चली गयी वह रोती है या नहीं आप देखें। सीता के साथ अनहोनी घटना घटित हो गयी है तो उसका निवारण करें रोने से कुछ नहीं होगा।

लक्ष्मण को जो कटु वचन सीता ने कहे थे उनको स्मरण करके लक्ष्मण सीता पर कुपित हैं इसलिये ऐसे वचन कर रहे है।

●●●

राग जैतसरी

क्यौं वीसरै दांन, क्यौ बीसरै मांन।
क्यौं वीसरै, जुगति सूं जीमियौ धांन।
क्यौ वीसरै, सांप नै सीस रो घाव।
क्यौ वीसरै वैरियां, जदि पड़ै दाव।।105।।

भाई लक्ष्मण! दिया हुआ सुपात्र को दान कैसे भुलाया जा सकता है। किसी ने सम्मान-आदर किया है तो उसको कैसे भुलाया जा सकता है युक्ति पूर्वक किया हुआ सु-स्वादिष्ट भोजन कैसे भुलाया जा सकता है सांप-सर्प या शत्रु के सिर पर किया हुआ घाव-चौट कैसे भूल सकता है। दुश्मन-वैरी वह दाव-समय को देखता है जब मौका आ जायेगा तब वह क्यों चूकेगा। अर्थात् अपना कार्य कर ही जायेगा।

कांबल ओढया, क्यौ वीसरे चीर।
सीता क्यौ वीसरै लाखणां वीर।।106।।

नीम की निबोली चूसने से दाख को कैसे भूल सकते हैं चंदन के शीतल सुगन्धित लेप को शरीर पर राख मलने से कैसे भूला जा सकता है। कंबल ओढने से मखमली चीर को कैसे भूल सकता है। हे लक्ष्मण भाई-सीता को मै कैसे भूल सकता हूं। इन संसारिक वस्तुओं को प्राप्त करके।

न वीसरै मात पिता, तंणौ नांव
न वीसरै नगर अजो धिया गांव
खाडो पिया गात, नारेलिया सीस
हंसि नै दिखालै रांणी, दांत बतीस।।107।।

भाई लक्ष्मण- माता पिता जो नाम रख देते है वह अपना नाम हो जाता है उसे कभी भूलता नहीं है। अपनी जन्म भूमि अयोध्या को भी कैसे भूल सकते है। उसी प्रकार से खांडोपीय- सुन्दर मुखाकृति वाली सीता नारेलिय-नारियल जैसे सुन्दर सुडौल सिर वाली तथा जब हंसती थी तब बतीस दंत पंक्ति सुन्दर दिखती थी। ऐसी सौन्दर्य गुणो की प्रतिमूर्ति सीता को कैसे भुलाया जा सकता है

●●●

राग भुंवरौ

कांय विदुहौ रामचंद, कांय ज मूक्या मांण।
घड़ी महूरत ताल मां, आंण दिऊ फुरमांण।।108।।

सुग्रीव ने राम जी को आश्वासन देते हुए कहा- हे राम चन्द्र जी! आप कांय विदुहौ-क्यों दुखी हो रहे हो तथा अपनी मान मर्यादा बल बुद्धि भगवता को खो रहे हो। एक मुहूर्त में एक ही ताल-निर्बाध गति से वानरो की सेना को बुलाकर आज्ञा देता हूं जो सीता की खोज करके शीघ्राति-शीघ्र शुभ समाचार दे देगें।

धरती उपरि आभ तल्य, अती न देस्यौं जांण।
अपरबल सेन्या राम री, कूंण करै सुभियांण।।109।।

सुग्रीव कहते हैं हे राम! इस सम्पूर्ण धरती उपर या आकाश में कही भी सीता का अपहरण करने वाला होगा उसे आपकी सेना के सूरवीर जाने नहीं देगें अवश्य ही पकड़ लेंगे, मेरी अपर बल अपरिमित बल वाली सेना है

वह आपकी ही है, इस आपकी सेना का सुभियाण-लेखा-जोखा कौन कर सकता है। अनगिनत अनंत सेना मेरे पास है वह आपकी ही है।

सुरजन जी पुनियां-

दिखणी बीड़ौ दोहरौ, सूर रहया मुख मोड़ि।
बीड़ौ अंगद उठावियौ, अरज करै कर जोड़ि ।।110।।

सीता की खोज करने का उपक्रम सुग्रीव ने प्रारम्भ किया अपने प्रमुख सैनिको को बुलाया और अपनी अपनी योग्यतानुसार सीता खोज का कार्य चारों दिशाओं में प्रारम्भ किया। अन्य तीन दिशाओं में जाने के लिये तो सूरवीर तैयार हो गये। किन्तु दक्षिण दिशा में जाना सीता की खोज करने का कार्य कठिन था इसलिये सूरवीर वानर जाने को तैयार नहीं हुए। अपना मुख मोड़ लिया। उस समय सेनापति बालि के पुत्र अंगद ने बीड़ौ-चुनौती स्वीकार करके हाथ जोड़कर अर्ज करने लगा- कि मै अकेला नहीं जा सकता मेरे साथ अन्य दूसरे भट्ट-सूर भेजिये।

राम र लछमंण परठवै, बीड़ौ लियौ उठाय।
बारां भड़ा सूं सांवतां, सीख दीया सुरराय।।111।।

राम लक्ष्मण के द्वारा भेजे गये अंगद, हनुमान, जामवन्त, आदि बारह सावंत-सूरवीरों ने राम कार्य करने का बीड़ा-ध्वज उठा ली। राम जी ने उन्हे बड़े प्रेम सादर सीख-विदाई दी, तथा उन्हे दक्षिण दिशा लंका में जाने की शिक्षा प्रदान की उन्हे सचेत किया। दक्षिण दिशा में मन को एकाग्र करके चल पड़े। "**काय दह दिस दिल पसरायौ**" शब्द नं.7 अन्य दिशाओं से मन को हटाकर उन वानर प्रधानों ने दक्षिण दिशा में मन को एकाग्र करके चल पड़े।

पखवाड़ौ पूरो हुवो, बोह दुख सहया सरीर।
तिसनां करि सांवत रहया, खार समंद कै तीर।।112।।

पन्द्रह दिन पूरे हो गये उन दिनों में बहुत कष्ट सहन किया भूख प्यास को सांवत सूरवीरों ने सहन किया। खारे समुंद्र के तीर तक पहुंच गये किन्तु अब तक सती सीता का कुछ भी पता नहीं चला।

सुरंग पंखेरू उड़िया, जोधा जल री चाहि।
सांवत सगला धर धस्या, जल सोवंन कुण्ड मांहि।।113।।

उन सूरवीर योद्धाओं को जल पीने की इच्छा थी तब जल की खोज में इधर-उधर भटकते हुऐ एक सुरंग-गुफा से पक्षी उड़ते हुए दिखाई दिये उन्होने अनुमान किया कि पक्षी उड़ रहे हैं तो अवश्य ही वहां पर जल होगा।

यह अनुमान है, अनुमित स्थान सुरंग में प्रवेश कर गये। वह सुरंग बहुत ही गहरी थी सभी मानों धरती में धंस गये हों। वहां सुहावने मधुर शीतल जल से कुण्ड भरा हुआ था। प्यासों ने जल सेवन करके प्यास बुझाई।

जल पीयो चंपगिर चड़या, सागर अथघ अथाय।
अंगद कहै रे वन चरां, कूण तिरै जल मांहि।।114।।

सभी ने सुख पूर्वक जल पीया और चंप गिर- पहाड पर चढ़गये। आगे आंखे फेला कर देखा तो अथाह जल ही जल दिखायी दिया। जहां तक दृष्टि जा रही थी वहीं से आगे तक खारा जल अथाघ-जिसका थाघ- अन्त नहीं लिया जा सकता दिखाई दिया। सेनापति बालि पुत्र अंगद कहने लगा- रे वन चरो। आप में से कौन ऐसा तैरने वाला है जो इस अथाह समुद्र को पार कर सके।

हंम हंम हणवंत हरखियौ, कहि सूं कियौ किलाव।
हणं वंत सायर कूदियौ, जांणै आभै बीज सलाह।115।।

हनुमंत जी ने हर्षित होकर कहा कि मैं, मैं ही जाऊंगा। ऐसा कहते हुए किलकारी मारी। हनुमान जी ने समुद्र मे छलांग लगाई ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसा बादलों में बिजली क्रोधती है। समुद्र में एक चमकती हुई रेखा खिंच गयी। आकाश में सलाह- (श्लाका) दिख रही थी।

जल निध्य सायर लोपियौ, लंक पाछै जुंवलाह।
दाव बतावै डोकरी, अंज सुत कुदि अंवलाहं।।116।।

जल निधि सायर-समुद्र को हनुमान जी पार करके लंका को भी पीछे छोड़ दिया। जोश में होस खो बैठे थे। जुवलाह-लंका और समुंद्र दोनो

ही पीछे छूट गये। एक डोकरी, बुढिया ने हनुमान जी को दाव-तरीका बताते हुए कहा हे अंजनी सुत-अंवलाह-वापिस पीछे छलांग लगाओ आप लंका में पहुंच जाओगे।

कूद्यौ जोध जुगति सूं, सुरनर सीख संमीठ।
जांणि पंखेरू अंबरा, लंका आय बईठ।।117।।

योद्धा हनुमान जी वापिस युक्ति पूर्वक कूदा-छलांग लगाई कि कहीं पहले की तरह अन्यत्र न चला जांऊ, अबकी बार सुरनर आदि की सीख को समेट कर धारण करके आचरण में लाये, तब जैसे आकाश में पक्षी उड़ता हुआ आकर धरती पर बैठ जाता है उसी प्रकार से हनुमान जी भी लंका में आकर बैठ गये।

पणिहारया री पगडंडी, बात करै पंणिहारि।
अपछर आंणी राजा राम री, लंका छीजंण हारि।।118।।

हनुमान जी लंका में तो पंहुच गये किन्तु आगे सीता का पता कैसे लगाये। रात्री में रावण के महल में प्रविष्ट हुए किन्तु वहां सीता का कुछ पता नहीं चला। राक्षसों की दिनचर्या को देखा बैसुध सोये हुए वहां पवित्रा लक्ष्मी सीता कैसे हो सकती है, चारो तरफ मद्यपान से दुर्गन्ध का वातावरण देखकर हनुमान जी अतिशीघ्र ही महल से बाहर आ गये। एक वनवासी शुद्ध वातावरण मे जीने वाला देव-मानव, ब्रह्मचारी कैसे वहां दुषित वातावरण मे रह सकता है जल्दी-जल्दी बाहर बगीचे में आ गये। हनुमान जी ने विचार किया और पता लगाने के लिये पनिहारिनों-जल लाने वाली महिलाओं के मार्ग के किनारे आकर चुपके से बैठ गये। आगे पनिहारिने आपस मे बाते करती हुइ को हनुमान जी ने सुना-

आपस मे एक दूसरी से बातें करती हुई आती जाती हैं- एक ने कहा सखी! अपनी लंका के राजा रावण ने राजा राम की अप्सरां जैसी सुन्दर पत्नी का हरण कर लिया है। दूसरी ने कहा- लंका छीजण हार- लंका का विनाश करवाने के लिये लाया है-

हे पण्यहारी बापड़ी मत कहै, खोड़ियौ सुवर जाय।
दाधै दवै क लाकड़ै, कोई नायक मारिसी आय।।119।।

हे पनिहारिन! बपड़ी-ऐसी राजा की निंदा वाली बात मत कहो। दूसरी कहने लगी- यहां पर हमारी बात कौन सुनता है जो राजा तक पहुंचा देगा। तीसरी सखी कहने लगी तुम लोग समझती नहीं हो। यहां पर पगडंडी के किनारे एक व्यक्ति खोड़िया-लंगडा वानर बैठा हुआ, वह हमारी बाते सुनकर राजा तक पहुंचा देगा। खोड़िया सुवर-अर्थात् लंगडा सूरवीर वानर है। चंचल तो होगा ही वह कह देगा। इसलिये चुप ही भली है।

सूखी लकड़ी के साथ आली-हरि लकड़ी भी जल जाती है। यह दोषी-निर्दोषी किसी को भी नहीं छोड़ती है इस समय लंका में आग लगी हुई है कोई नायक आकर विना मतलब हमे मारेगा। राज निंद्या नहीं करे तो ही ठीक रहेगा।

चौथी कहने लगी वह सीता कहां है उस अपछरा का दर्शन तो करें। पांचवी महिला कहने लगी बहन! तुम्हे पता नहीं है वह तो राजा के अशोक वन में रहती है। वहां राक्षिणियों का पहरा दिन-रात रहता है। हमें वहां कौन जाने देगा। जल्दी-जल्दी चलो घर में और कार्य भी तो करना है।

इस प्रकार से उन लंका की महिलाओं की आपसी वार्तालाप को सुनकर सीता का पता लगा लिया और लंका की क्या स्थिति है, राजा से प्रजा प्रसन्न नहीं है यह भी पता चल गयी। आगे की कार्य वाही कितनी सरलता से हो सकती है यह सभी जानकर हनुमान जी ने अशोक वाटिका में प्रवेश किया।

कै मुवौ कै मारियौ, सुपनै आयौ सांम्य।
श्री राम रो मूंदड़ौ, कुण रन मां ल्यायौ राम।।120।।

अशोक वाटिका में सीता शोक मग्न थी। राम का स्मरण कर रही थी। लक्ष्मण को कटु वचन कहे थे उन पर पश्चाताप कर रही थी। हनुमान जी ने अति सूक्ष्म रूप धारण करके अशोक वृक्ष पर बैठ कर श्री राम की अंगूठी जो साथ में लेकर आये थे वह सीता की गोदी मे डाल दी। सीता ने देखा और

आश्चर्य चकित होकर कहने लगी। विलाप करते हुए कहा-यह राम जी की अंगूठी मेरे पास कैसे आ गयी। कै मुवाँ- क्या रामचन्द्रजी ने मेरे वियोग में प्राण त्याग दिये। कै मारियो- या किसी ने मार दिया। राम जी के जीवन जीते हुए तो उनसे कोई छीनकर नहीं ला सकता। या मै कोई सपना देख रही हूं या सचमुच ही यह घटना सत्य है यह श्रीराम जी की मुदड़ी वहां वनवास से यहां लंका में कौन लाया।

न मूवौ न मारियौ, न सुपने आयौ साम्य।
श्रीराम रो मूदंड़ौ, ल्यायौ छै हणौमांन।।121।।

हनुमान जी प्रगट रूप से सामने आकर कहने लगे, हे माता सीता। न तो राम मरे हैं और नहीं किसी ने मारा है और नहीं आप राम का सुपना ले रही हैं। इस राम जी की अंगूठी को यह तुम्हारे सामने नतमस्तक हनुमान लाया है।

घड़ी न ढीली मेल्हता, मेल्ह न करता कांम।
लछमण अजूं न आवियौ, तातां खोजां राम।।122।।

वह राम का भाई लक्ष्मण मुझे एक घड़ी भी सूनी नहीं छोड़ता था यानि ढील जब तक-सूर्य उदय होता है या तपता है। आकाश में नक्षत्र उग रहे है मौजूद है। तब तक रामचंद्र जी दूसरा विवाह नहीं करेंगे। जब तक राम मे अपनी राम पना है शक्ति है। तबतक राम जी दूसरा विवाह नहीं करेंगे। हे सीता! आप निश्चित रहों।

नहीं देता था। मुझे अकेली छोड़कर और कोई कार्य भी नहीं करता था वह मेरा परम हितैषी देवर लक्ष्मण अब तक क्यों नहीं आया। लक्ष्मण का कार्य तो अतिशीघ्र होता था इतनी देरी क्यो की है। (सीता लक्ष्मण के बारे में जानना चाहती है लक्ष्मण को मैंने कटु वचन कहे थे वे मेरे पर कुपित तो नहीं है)

राम कंवर कुसले नही, कहिनै किसो विचार।
श्री फल आयौ साम्य नै, बैठा बणी मंझार।।123।।

श्री राम तथा राजकुमार लक्ष्मण सकुशल है कि नही। हनुमान जी आप सच्ची बात कहिये । यदि कुशल होते तो इतनी देर नहीं लगाते अपने विचार कहो।

सीता कहने लगी- क्या राम के दूसरे विवाह के लिये श्री फल-नारियल आ गया है। वहीं वन में ही बैठे हैं या कहीं वापिस लौट गये हैं। हनुमान जी अपनी सत्य बात कहो-

पोह विण्य पूरी न पड़ै, पग विण्य पंथ न होय।
श्री राम रै नांव विण्य, भलौ न कहिसी कोय।।124।।

अपने गन्तव्य स्थान में पहुंचना है तो पोह-मार्ग-चलना होगा। केवल गांव का मार्ग पूछने से गांव नहीं पहुंच सकता वहां पहुंचने के लिये तो पैरों से चलना ही पड़ेगा। श्री राम जी के नाम- मर्यादा विना तो दुनियां में भला आदमी कौन कहेगा। दुनियां के नियम-धर्म ही मानव की अच्छाइयों को प्रगट करता है।

सूरतपंता फीरि करै, अखते नखत रहाय
अवर न परणै रामचन्द्र, जब लग कांई बसाय।।125।।

सूर्य अपनी गर्मी या ऊष्मा का त्याग नहीं कर सकता नक्षत्र अपना स्वभाव नहीं त्याग सकते उसी प्रकार श्री रामचन्द्र सीता के अलावा किसी भी परस्त्री का स्मरण नहीं कर सकते।

आडा डूंगर वीझवंण, बीच माछला गयंद।
सीत कहै रे बंदरा, किणि विध लोपिया समंद।।126।।

सीता कहने लगी हे वानर! मैंने अपनी आंखो से लंका मे आते समय देखा है कि जहां से तुम चले हो वहां से लंका तक कई विघ्न बाधाएँ है जैसे आडा डूंगर- बीच में बड़े बड़े पहाड़ है। वीझवणां बीच मे घना घनघोर वन है। वन में बड़े बड़े खुंखार जंगली जानवर सिंह, हाथी आदि हैं। मगरमच्छों से युक्त खारा समुद्र है। तुम वानर जाति के बलवान फुर्तिले मानव हो तो पहाड़, वन, वन्यजीव जन्तुओं को तो पार कर सकते हो किन्तु यह बतलाओ कि मगरमच्छ आदि जीवों से भरे हुए समुद्र को पार कैसे किया।

सत सिंवरयौ सीता तणौ, लछमणं तणौ ज बांण।
श्री राम रौ मूंदड़ौ, क्यौ र भुजा रो पांण।।127।।

हनुमान जी कहने लगे- हे माता सीता! आपके सत का स्मरण किया। लक्ष्मण के बाणों का स्मरण किया। श्रीराम जी की अंगूठी का स्मरण किया ये तीन ताकत मुझे प्राप्त हुई है। चौथी ताकत भुजाओ के भी पीछे कैसे रह सकती है इन सहारो से मैं सभी बाधाएँ पार करके आ गया हूँ। ईश्वर कृपा, गुरुकृपा, शास्त्रकृपा चौथी अपने आप की कृपा ये चारों प्राप्त हो जाती हैं तो सभी कुछ सुलभ हो जाता है।

सीता मन्य आणंद हुवौ, कान्य सुंणी कुसलात।
कितरा सांवंत राम रै, कितरौ राघव साथ।।128।।

हनुमान जी के द्वारा सच्ची विश्वसनीय वार्ता कानो से श्रवण करके सीता बहुत ही आनन्दित हुई, आगे पूछा- आपके जैसे कितने सांवत शूरवीर राम के साथ हैं और कितनी सेना राम के साथ हैं यहां लंका मे कब आ रहे है ?

छेड़ा फिरै राजा राम रा, हुवै वन खंडा खेड़।
भाई सदा चितारय जै, भाइया भाजै भीड़।।129।।

राजा राम जी के नाम से छेड़ा (पत्रिका) भेजी जा रही है। वन खंडो मे सेना एकत्रित हो रही हैं। विपति काल मे सदा ही भाई याद किया जाता है। सुग्रीव राजा के भाई बन्धु यत्र तत्र वन मे रहते है। तथा सुग्रीव को राम जी ने अपना मित्र-भाई बना लिया है सुग्रीव सेना एकत्रित कर रहे है। भाई की सहायता भाई ही कर सकता है। भाइया भाजै भीड़- भाई ही विपति काल मे सहयोग करता है।

तेतीस कोड़ी देवता, अरि गंजण अरि मौड़
श्रीराम रै साथ मां, वांदर छपन करोड़ि।।130।।

तेतीस कोटि-तेतीस तरह के देवता है वे सभी शत्रुओं के विनाशक है। शत्रुओं के भी शत्रु है। देव-दानवों का आपसी वैर तो जगत प्रसिद्ध हैं वे सभी देवता रामजी का साथ दे रहे हैं।

श्रीरामजी के साथ में छप्पन कोटि की वानर सेना भी है। वनवासी वानरों की सेना से राम सुसज्जित हैं।

धरती माता वाहरयौ, भार सहियौ न जाय।
खबरि हुई सूं आयस्यै, घड़ी यो छट भाय।।131।।

धरती माता ने ब्रह्मा, विष्णुजी के सामने जाकर पुकार करी है कि अब मेरे से पापियों का भार सहन नहीं होता। हे भगवन्! आइये मेरे भार को दूर कीजिये, वही विष्णु ही राम लक्ष्मण के रूप में धरती पर अवतार धारण करके आये हैं। उन्हे खबर मिलते ही कि सीता लंका मे है तो अतिशीघ्र ही आ जायेंगे। खबर मिलने की ही देरी है उसके बाद तो एक घड़ी भी देर नहीं करेंगे। अब पाप का घड़ा भर चूका है यो छट-छलकने ही वाला है। अवश्य ही फूटेगा।

माहे जाल न मौरियां, रुते न बूठो मेह।
सांजन चूकि न आवियां, घणौज बूठो मेह।132।।

माघ-महिना बसन्त का आगमन प्रारम्भ हो जाता है सभी वृक्ष बसन्त ऋतु मे फूलते फलते हैं। मरुभूमि मे जाल का वृक्ष भी माघ महिने मोर आता है। जिससे उसके फल पील बनती है। यदि वसन्त ऋतु मे नहीं पुष्पित होगा तो फल की आसा करना व्यर्थ ही है। उसी प्रकार वर्षा ऋतु आने पर श्रावण-भादवा सूखा चला जायेगा तो फसल सूख जायेगी। फसल सूखने के बाद चाहे कितना ही पानी वर्षता रहे उससे क्या लाभ। सीता कहती है कि समय चूक गया साजन-रामजी नहीं आये तो फिर भले ही आते रहना कोई लाभ नहीं अर्थात् सीता नहीं मिलेगी।

(रावण ने एक माह का समय निर्धारित किया है उसके बाद सीता संसार में रामजी को नहीं मिलेगी।)

थापण्यं मोसो जे कियौ, पर नारी सूं नेह।
पढियां ने मेहो कहै, नीत नवला एह।।133।।

यहां कवि मेहो जी अपनी आत्म कथा हनुमान जी के माध्यम से

कहते है। हनुमान जी के पक्ष मे- हनुमान जी कहते है कि रामजी ने मुझे यहां थापन- स्थापना करने वाला संदेश वाहक बना कर भेजा है। इसलिये मेरा संवाद परस्त्री-सीता से हो रहा है। कहां मै वनवासी बाल ब्रह्मचारी मुझे इन बातों से क्या लेना देना है। किन्तु सीता से स्नेह हो गया वार्तालाप हो रही है यह मेरे लिये मोह माया ठीक नहीं है अपनी उदासीनता प्रगट कर रहे हैं पढ़े लिखे लोगों से मेहोजी कहते हैं कि यह तो नयी ही नीति है ऐसा पहले तो मेरे साथ कभी वर्ताव नहीं हुआ है कि ब्रह्मचारी होकर गृहस्थ लोगों से वार्तालाप करे।

मेहोजी अपने लिये कह रहे हैं कि गुरु जाम्भोजी ने मेरे को थापन की पदवी दी है। अर्थात जाम्भाणी संस्कार कर्ता मुझे बनाया है तब परनारी- पर धन से मुझे लगाव हो गया है क्योंकि मुझे पुरोहित का कार्य सौपा गया है। तो पुरोहित यजमान से दक्षिणा चाहता है मै परधन परायी जेब की तरफ देखता हूं। "**नीत नवला एह**" पढ़े लिखे लोगो से मेहोजी कहते है कि यह तो नयी ही नीति है। पूर्व में हमारे कुल परिवार में तो ऐसा परनारी- परधन से स्नेह नहीं था हम किसान खेती खड़ आदमी है।

रामायण कथा के माध्यम से मेहोजी ने अपना संक्षिप्त परिचय दिया है और अपने पुरोहिताई कार्य के प्रति उदासीनता प्रगट की है। उधर हनुमान जी भी अपनी उदासीनता प्रगट कर रहे हैं। यही कवि की काव्य चतुराई है।

हणंवंत सारै वीणती, माता भूख मरांह।
बाड़ी दीसै बोह फली, कहो त वनफल ल्यांह।।134।।

हनुमंत एवं माता सीता के बीच कुशल समाचार एवं परिचय की वार्तालाप हुई किन्तु माता का भाव तो प्रथम अन्न जल खाने पिलाने का होता है किन्तु सीता माता ने कुछ भी नहीं पूछा।

सुभ्यागत आगन्तुक का प्रथम सत्कार आओजी, बैठोजी, पीयो पानी ये तीन बात मोल नहीं आणी।

हनुमान जी को भूख लगी थी सामने मधुर फलों का बाग लगा था। पके हुए लाल-लाल फल हनुमान जी को दीख रहे थे। "**भूखा क्या नहीं**

करता" फिर माता सीता की आज्ञा बिना फल कैसे तोड़ सकते हैं।

हनुमान ने विनती करते हुए कहा- हे माता भूख लगी है। यहां वन फलों की बाड़ी-बगीची फलो से लदी हुई दीख रही है मै हनुमान आपका पुत्र भूख से मर रहा हूं। यदि आप आज्ञा दो तो फल तोड़ कर खांऊ। और अपनी भूख शांत करू।

सुण्य हंणवंत सीतां कहै, पड़या वनफल लेह।
म्हारौ कहियौ जै करै, लंक दिस पांव न देह।।135।।

सीता कहने लगी हे हनुमान मेरी बात सुनो। तुम्हे भूख लगी है तो भूख मिटाना प्रथम कर्तव्य है। किन्तु पककर अपने आप नीचे गिर गये है वे ही फल लेना। पेड़ के उपर से फल मत तोड़ना। यदि ऐसा करेंगे तो कच्चे फल डालियां भी टूट जायंगी। इससे पेड़ो को बहुत हानि हो जायेगी। बेटा यह हरा भरा फल दायी बाग है इसे तहस-नहस नहीं कर देना अन्यथा दोष लगेगा। सत्य बात तो यह है कि तू मेरा कहना मानता है तो लंका की तरफ पैर भी नहीं रखना। यहां लंका के लोग रावण बने हुए हैं तुम्हारा वापिस जाना असंभव कर देंगे।

रावण संवौ न राजवी, लंका संवौ न थांन।
कही पराई जो सुणै, जां सिर नांही कांन।।136।।

रावण जैसा प्रतापी, अतिबुधवन्तो राजा नहीं है। लंका जैसा कोई स्थान-गढ़नहीं है किन्तु राजा रावण कान का कच्चा है। अपने कानो से जो कुछ भी सत्य झूठ सुन लेता है उसी को स्वीकार कर लेता है वह निंदक पुरुषों पर विश्वास ज्यादा ही करता है।

जिनकी बुद्धि स्वयं विचार नहीं करती है उनके अपने कान नहीं होते है दूसरों के कान ही बुद्धि ही कार्य करती है। उन पर क्या भरोसा किया जावे। यह रावण दूसरों के हाथो मे खेलता है।

शब्द नं. 85 मे गुरुदेव जाम्भोजी ने संसार की श्रेष्ठ विभूतियों का इस शब्द में वर्णन किया है।

लंक उपाड़ू सूं जड़ा, सायर अंबा तांह।
मारुं रावण राजियौ, ले जू देख तांह।।137।।

हे मात सीते! आप रावण का भय मुझे न दिखायें। आपकी, आज्ञा हो तो इस अंबा-धरती पर समुद्र है तथा लंका है इन दोनो को ही जड़ से उखाड़ कर फेंक दूंगा।

रावण राजा को मार डालूंगा। या उसके देखते-देखते सामने ही तुम्हे ले जाऊंगा।

उंमति भणीजै तीन्य जंण, हंणवंत लछमण राम।
तीन्यौ आवै वाहरूं, इण्य विध्य पाछी जाव।।138।।

सीता कहने लगी- ऐसे मैं वापिस नहीं जाऊंगी। मुझे उमंति अडीक-प्रतीक्षा तीन जनो की है। जिनमे प्रथम हनुमंत दूसरे लछमण तथा तीसरे राम स्वयं आये तो वापिस जा सकती हूं। ये तीनो मुझे ले जाने के लिये वाहरू-रक्षक रूप मे आये तो मैं इस रीति-रिवाज सम्मान से वापिस जाऊंगी।

वंद्यौ न छूटै देवता, रहै ज रावण राज।
सीत हड़ी किम जांणियै, राम रहै किम लाज।।139।।

हनुमान जी! मैं तुम्हारे साथ वापिस चली जांऊ तो देवताओं को रावण ने बंदी बना रखा है वे कैसे छुटेंगे रावण को कौन मारेगा रावण जिंदा रहेगा। रावण ने सिता का हरण किया है उसका क्या होगा। रावण को पता क्या पड़ेगा कि सीता हरण का क्या फल होता है। संसार के लोगो को भी पता कैसे चलेगा कि स्त्री हरण का क्या फल होता है। राम का संसार मे आने का क्या प्रयोजन रह जाता है।

बाग विधुस्यौ रावलौ, बन रो कियो विणास।
मारूलां रे वंदरा, संगठ काढूं सांस।।140।।

माता सीता की आज्ञा शिरोधार्य करके हनुमान जी ने रावण के बाग मे प्रवेश किया। वहां देखा कि नीचे गिरे हुए फल तो नहीं थे यदि कोई था तो भी सड़ा गला हुआ ही था क्या खाये, उन्होने युक्ति से कार्य किया सीता

माता का वचन भी लोप न हो और खाने को फल भी मिल जाये। पीपल पूजन हूं गयी, कुल अपणै की लाज। पीपल पूज्या हरि मिलै, एक पंथ दोय काज।।

युक्ति पूर्वक कार्य किया-पहले पेड़ों को हिलाया उससे बहुत सारे पके फल नीचे धरती पर गिर जाते हनुमान जी उठा-उठा कर के झाड़-झाड़ धो-धो करके खाते जाते। वन के रक्षक रावण के दूतों ने आकर देखा कि वहां के वन मानव कोई वानर पेड़ों से फल गिराता जा रहा है खाता ही जा रहा है उसे यह मालूम ही नहीं है कि यहां कोई रखवालें भी है।

इस मंद बुद्धि मानव ने राजा के बाग को विध्वंस कर दिया है वन का विनाश कर डाला। वे सेवक समूह वहां जाकर बोले रे वानर! तुम को मार डालेंगे। तुम्हारे प्रांण निकाल देंगे हम सभी मिलकर आये है यहां से हट जाओ।

असर दांणौ खड़ि आवियां, करि समाहया सार।
मारयौ बंदर न मुवौ, भागा बोह हथियार।।141।।

असुरों के सेना नायक बाग के रखवाले सभी मिलकर आये। हाथ में अस्त्र-शस्त्र उठाये हुए थे। सभी मिलकर शस्त्रों से चोट मारने लगे। उनके मारने से वानर हनुमान जी नहीं मरे, चोट नहीं लगी। बहुत से हथियार ही टूट गये।

कुंभै खांडौ भानियौ, असरां उरि अंणराय।
मोत बतावै बांदरौ, सांभल्य राणां राव।।142।।

इन सामान्य सैनिको से कुछ बात नहीं बनी तब जाकर कुंभकरण को जगाया। कुभ करण ने हनुमान पर खाण्डा (तलवार) चलाई वह भी टूट गयी किन्तु हनुमंत का कुछ नहीं बिगड़ा। मेघनाद ने हनुमान जी पर शक्ति बाण ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। ब्रह्मास्त्र के अस्त्र-शस्त्र का सम्मान करते हुए हनुमान जी ब्रह्म फांस में बन्ध गये।

वानर हनुमंत को ब्रह्मफांस में फंसा कर मेघनाद ने रावण की राज

सभा में उपस्थित किया। मेघ ने रावण से कहा कि हे राजन् यह वही वानर है जो रावला बाग को विध्वंस कर रहा था।

रावण ने हनुमंत जी से पूरा परिचय जाना और रावण ने कहा कि यह वानर मारने पर भी मरता क्यों नहीं है। हनुमान जी ने कहा लंकेश! मै तुम्हारे मारने से मर नहीं सकता, मुझे अमरता राम जी की कृपा से प्राप्त है। तब रावण ने कहा तो अपनी मौत तुम स्वयं ही बतला दो। आगे हनुमान जी अपनी स्वयं की मौत बतलाते हैं और कहते हैं! रावण संभल जाओ। सीता को वापिस लौटा दो राम जी से क्षमा याचना करो वे बड़े ही दयालु हैं तुम्हे क्षमा कर देगें।

पूंछड सूत पलेटि कै, दियौ वसंदर लाय।
दाझि मरै ज्यौ बांदरौ, अवसे टलै बलाय।।143।।

पूंछ के सूत- रूई लपेट कर उसके आग लगा दिया जाय। आग से दाझि मरेगा। जल कर यह वानर मर जायेगा क्योंकि यह अवश-वश में आने वाला नहीं है। यह अलाय-बलाय कोई प्रेत आदि है, वायु रूप में है इसको कैसे पकड़ सकते हैं। आग में जलेगा तो यहां से भाग जायेगा। यह आई हुई बलाय-छाया टल जायेगी।

पूंछड़ सूत पलेटि कै, दियौ वसंदर लाय।
हणंवंत कूद्यौ छोह करि, झाला गैणी लगाय।।144।।

जैसी सबुद्धि हनुमान जी ने असुरों को दी वैसा ही किया गया सम्पूर्ण लंका का सूत, तेल एकत्रित करके पूंछ में लपेट कर आग लगा दी, हनुमान जी ने क्रोधित होकर छलांग लगायी। अग्नि की ज्वाला आकाश में ऊपर उठने लगी।

समंदर गड़ो ज्यौ ऊकल्यौ, गणूं उड़ाई झाल।
कहि मेहा इणि बंदरै, लंक कीवी परजाल।।145।।

सागर ओले जैसा था। वह भी अग्नि के ताप से उबलने लगा। हनुमान जी ने अग्नि ताप फैला दी। मेहोजी कहते है कि इस वानर ने लंका को जला दिया।

घरि घरि दीवा देवरा, घरि घरि हुवौ उजास।
कहि मेहा इणि लंकरा, ढहि ढहि पड़ै अवास।।146।।

लंका निवासी लोग मन्दिर-देवरा मे दीपक नहीं जलाते थे। हनुमान जी ने लोगों को सचेत किया कि घर ही मन्दिर-देव स्थान हैं जहां पर ज्योति-दीपक-हवन होना चाहिये। यह देव-मानव की संस्कृति है। अब आप लोग दानवता त्याग कर देवत्व को स्वीकार कीजिये यही बताने के लिये हनुमान जी ने घर घर दीवा देवरा बना दिया। घर घर मे उजास-प्रकाश कर दिया। रावण के महल को तो ढह ढह कर आवास-महल गिरने लगे। रावण को संकेत दिया कि अब तुम्हारा यह स्वर्ण महल उज्ज्वल नहीं रहेगा। तुम्हारी प्रतिष्ठा गिर जाने वाली है तुम्हारी कमाई काली होने वाली है सचेत हो जाओ। हनुमान जी ने लंका मे आग लगा दी

काला हुवा कांगरा, लंका पड़ियौ सोर।
पवण चलावै चोह दिस, जालंधर को जोर।।147।।

चित्र विचित्र चित्रकारी की हुई- कांगरा-काले पड़ गये। अग्नि का धूआं लगने से ही तथा लंका में चारो तरफ सौर-अवाजे आने लगी बचाओ बचाओ की। पवन पुत्र हनुमान वायु रूप में ही थे अग्नि वायु से ही प्रज्वलित होती है, आगे बढती है। जालंधर-जल को धारण करने वाली प्रचंड वेग वाली वायु चलने लगी। अपनी पूरी ताकत से हनुमान जी द्वारा लगायी हुई आग को प्रचंड कर रही थी।

दाझै मंडप मेडिया, कंचण कालो होय।
पड़दां रहती पदमणी, परगट दीठा होय।।148।।

हनुमान द्वारा लगायी हुई आग से लंका के मंडप, मेडिया, जलने लगे स्वर्ण मयी लंका काली हो गयी। राजा रावण चोर होगा तो लंका तो काली हो ही जायेगी। उसकी प्रतिष्ठा गिर ही जायेगी।

पदमिनियां सौन्दर्य युक्त नारियां "असूर्यापश्या नारी" जो कभी सूर्य का दर्शन नहीं करती थी। राज महल में ही जिनका निवास था वे रानियां पद्मिनियां थी वे आग को देखकर महलों से बाहर निकल आयी। जिन्हे

कभी देखा नहीं था आज वे प्रगट मैदान में खडी थी।

झब झब बोलै वास दे, पुंवणे कियौ प्रयांण।
सबल गुन्हा श्री राम रा, रहंण न लहिसी रांण।।149।।

आग जल रही थी तब झब झब की आवाज कर रही थी। लंका निवासी सभी एक जुबान से कहने लगे कि रावण ने राम के प्रति अपराध, किया है, यह स्त्री हरण का पाप सबल है यह पाप सभी को ले डूबेगा। हम नागरिक तो नहीं बच पायेगें। किन्तु राजा रावण उनका कुल परिवार भी नहीं बच पायेगा। यह प्रबल अग्नि

भूंडी किवी रे बांदरा, चोह चकि कियौ चाव।
मरकट मुंड उतारिस्यूं, भणै ज रांणौ राव।।150।।

राजा रावण कहने लगा-रे वानर तुमने अच्छा नहीं किया। चारो दिशाओं में तुमने तहलका मचा दिया। अपने आप को प्रसिद्ध कर दिया। रे मरकट! मै तुम्हारा मुंड-सिर काट डालूंगा।

सोवन नगरी सूल थी, अब तै कियो कसूल।
सबल गुन्हां श्री राम रा, भली गयौ नर भूल।।151।।

रावण कहने लगा मेरी सोने की नगरी अच्छी थी। अब तुमने कसूल कर दिया अर्थात् सोने की नगरी को काली कर दी। ये सभी गड़बडियां राम द्वारा हनुमान को भेज कर के की है। वह राम नर भूल गया है। उनके साथ क्या क्या हुआ है। अयोध्या से निष्कासित, सीता हरण, वन में वास, पिता का मरण और आगे क्या क्या होने वाला है। यह राम नर भूल जाता है एक वानर को यहां भेजकर क्या क्या नहीं करवा रहा है। ये सब अपराध राम का है।

हंणवत आयौ सांभल्यौ, परगट किवी पिछांण।
ऐ परवाडा तूं करै, श्री राम रै तांण।।152।।

लंका जलाकर सावधानी पूर्वक संभल कर हनुमान जी रावण के राज दरबार में आये। अब तक तो रावण ने सामान्य परिचय एक वानर के रूप में सुना था किन्तु अब प्रत्यक्ष रूप से रावण ने देखा पहचाना। रावण

कहने लगा- यह कार्य तूं करता है। अनहोनी घटना घटित करता है किस के बल पर कौन है तेरा यहां जो तुमसे करवाता है ओर तो कोई नहीं क्या श्रीराम के तांण- बलपर यह कार्य करता है सत्य बतलाओ।

कहि मेहा इण्य वंदरै, क्यौ परजाली लंक।
हणौ हेयाई एकलै, घंणे ज मांनी संक।।153।।

कवि मेहोजी कहते हैं कि इस वनवासी वानर ने लंका में आग क्यों लगाई? स्वयं कवि ही दूसरी पंक्ति में जबाव देते है कि इस लिये लंका जलाई यहां दो प्रयोजन होते है। प्रथम तो हनुमान जी अपनी ताकत देख रहे है, और निश्चय कर लेते है कि इस लंका को तो मै अकेले हराकर के सीता को ले जा सकता हूं। दूसरा कारण यह बतलाते है कि ऐसा करके लंका की आम जनता, सेना तथा रावण के दिल दिमाग में शंका-दहशत फैलानी है युद्ध में इन लोगों को निरूत्साहित करना है। जिससे लंका पर विजय सरलता से प्राप्त की जा सके।

सीत संदेसो मोकले, हणवंत मांड्यौ हाथि।
चेरी चौकस राम री, जग जीवंण रै साथि।।154।।

रावण के दरबार से हनुमान जी वापिस सीता के पास आये और राम जी को संदेशा क्या देना है उसके लिये हाथ फैलाया। निशानी प्राप्त करने के लिये हाथ फैलाये।

सीता कहने लगी हे हनुमान! श्री राम लक्ष्मण से जाकर मेरा संदेशा यह कहना कि मै रामजी की ही चैरी (दासी) हूं। सदा ही अपने नियम धर्म पर सावधान हूं। मै शरीर से भले की लंका में हूं किन्तु मन से जगजीवन श्री राम जी के साथ हूं।

लोयंण वरसै लाछिका, ओलू करै अपार।
औगुण ऊपरी गुंण करौ, थारी मूरत नै धंनकार।।155।।

सीता ने हनुमान जी द्वारा रामजी को संदेशा ''लोयण-आंखों में आंसुओं द्वारा दिया। लाछिका-(लक्ष्मीजी), साक्षात् राम विष्णु के वियोग में आंसुओं की वर्षा द्वारा सभी कुछ बता रही थी। ओलू- (याद) स्मरण अबाध

गति से करती हुई वचनों द्वारा सभी कुछ नहीं कहा जाता वह अश्रुओं द्वारा कह दिया जाता है वहीं हनुमान जी ने देखा। प्रत्यक्ष भाव विभोर होती हुई सीता को देखा।

प्रगट वचन द्वारा कहने लगी- हे देव! आप बडे दयालु हो मैंने औगुण (अपराध) किया। उस अपराध (औगुण) का ध्यान न रखते हुए मेरे पर गुण-कृपा करी है जो संदेश वाहक भेजा है आपकी दिव्य ज्योति मूर्ति को धन्य है।

बाल्य लंका ज्यौ बाहड़यौ, आयौ समंद के तीर।
खुसी हुवौ श्री रामचन्द, लखण कंवर को बीर।।156।।

हनुमान जी लंका जलाकर, सीता का संदेशा लेकर वापिस संमुद्र को पार करके जहां अंगद आदि वानर प्रतीक्षा कर रहे थे वहां लौट आये। सभी साथी बड़ी खुशी से विजय पताका लहराते हुए राम लक्ष्मण के पास पहुंचे। उनकी खुशी देखकर लक्ष्मण के भाई श्री रामचंद जी भी बहुत प्रसन्न हुए।

हंणवंत आयौ सांभल्यौ, ल्यायो सीत री सार।
माथै मांण्यक किल किल्यौ, रहस्यौ लंखण कंवार।।157।।

कुमार लक्ष्मण ने देखा और रहस्य को समझा कि हनुमान सीता की खबर (संदेशा) लेकर आया है। हनुमान जी मांणिक्य नग की तरह सूर्य का नग माणिक्य की तरह चमचमा रहा है। तेजस्वी हो रहा है सूर्य की भांति प्रकाशमान हो रहा है। अवश्य ही सफल होकर आया है। अन्यथा ऐसा दिव्य तेज कहां से प्रगट होता है। वर्षा को देखकर बादलों का अनुमान होता है।

हंणवंत ऊभौ बोहबली, लछमंण पूछै बात।
कुंण नर सीता ले गयौ, किंण नर घाती घात।।158।।

महान् बलवान हनुमान जी हाथ जोडे खड़ा था। लिछमंण ने हनुमान जी से पूछा कि यह बतलाओं। ऐसा कौन है जो सीता का अपहरण करके ले गया। किस नर ने हमारे पीछे से चोर की तरह घात किया चोरी करने में

सफल होगया। वह घातक चोर कौन है।

कुंण राकस किण देसरौ, कुंण नर किण रै पाट।
कुंण नर राम समै, घड़ी, किण नर पाड़ी वाट।। 159।।

कौन राक्षस किस देश का है वह कौन नर है ? और किस देश का राजा हैं ऐसा कौन नर है जो राम के समान उत्पन्न हुआ। किस नर ने मर्यादा भंग की हैं ? किस नरेश ने नियम -धर्म की अवहेलना की है ?

माथै मुगट सुहावंणौ, पैठो डेरू वाय।
रांणौ रावंण ले गयौ, लंक नगर रो राव।।160।।

हनुमान जी ने बतलाया कि हे लक्ष्मण! आप कुपित न हो, सीता का इतना दोष नहीं है आप उस स्वर्ण मृग के पीछे चले गये तब जिनके सिर पर स्वर्ण हीरा जड़ित राज मुकुट शोभायमान होता है। वह जगत प्रसिद्ध लंकापति रावण सीता को लेगया है। सीता भुलावै में आ गयी।

उस रावण ने योगी का भेस बनाया और '' डग डग डेरू बावियो झूठा योगी बनकर आया था सीता को छल-बल से अपहरण करके ले गया है वह लंका नगरी का राजा है। वहां सीता सुरक्षित है।

गल्य ईसर का आभरंठा, परमेसर के गति
सीता दरसंण भोलवी, जाण्यौ आयौ श्री जगनांथ।।161।।

आगे फिर हनुमान जी ने विस्तार से बताया। भोलावे मे आने का कारण बताते हुए कहा- उस नकली वेश धारी रावण ने अपने गले में ईश्वर-शिव के आमरण-सर्प माला भस्म आदि डाल रखे थे। परमेश्वर-शिव जैसा रूप बनाया हुआ था। सीता ने इस प्रकार के बाह्य वेशभूषा को देखा तो उन्हे विश्वास हो गया कि ये तो हमारे कुल देवता जगन्नाथ-शिव ही आ गये हैं। सीता भोलावे मे आ गयी भ्रमित हो गयी। इसमें सीता को दोषी या अन्य किसी प्रकार से लांछन लगाना ठीक नहीं है।

मंदोवरि महलां उतरै, सीता सत भोलावंण।
आई बाग मंदोवरी, सीता करिसी रावंण।।162।।

पटरानी मंदोदरी राज महल से उतर कर अशोक वाटिका में सीता

के पास आई सीता को सती पतिव्रता का पाठ पढाने के लिये मंदोदरी का अशोक वाटिका में आना हुआ। पाटमदे राणी मंदोदरी भोलावणा-समझाते हुए कहने लगी- हे सीते! रावण आयेगा और तुम्हें अपनी पत्नी बनायेगा सावधान रहना तूं देवी! सती पति भव्रता राम की पत्नी लक्ष्मी हो अपने सत को नहीं छोड़ना। रावण तुम्हारे साथ जबरदस्ती नहीं कर सकता किन्तु तुमने ही यदि अपना सतीत्व छोड़ दिया तो फिर कुछ नहीं हो सकता।

अल्यो मं चवै मंदोवरी, अलियै लागै पाप।
सी रावंण कियौ न कीजसी, सीके रावंण बाप।।163।।

सीता कहने लगी- हे मंदोवरी! अल्यौ- आल बाल झूठी बाते न बोलो अलिया लागै पाप- झूठ बोलने से पाप लगता है ? सीता को रावण अपनी कभी लेना नहीं पाया है। नहीं आगे कभी पत्नी बना पायेगा।

क्योंकि सीता के रावण बाप- पिता लगता है। आप इस बात सें बेफिकर रहे। आप ही पटरानी बनी रहोगी। तुम्हे किसी प्रकार का खतरा नहीं है।

जांहरा म्हे सिवरंण करां, नितरा करां अवास।
सीता सती कहावंती, क्यौ छोड्यौ पिव पास।।164।।

मंदोवरी कहने लगी- जिस पतिदेव को हम परमेश्वर मानती है उनका ही स्मरण करती है। उनके साथ ही निवास करती है किन्तु हे सीता! तुम अपने को सती कहाती हो तो, अपने पति का साथ क्यों छोड़ दिया। यहां लंका में रावण के साथ क्यों आ गयी। सती स्त्रियों के साथ तो कोई जोर जबरदस्ती नहीं की जाती है। सती तो अपने वचनों से भस्म कर देती है।

क्यौ भेली जै त्रंकट गढ, क्यौं तूटै दसवीस।
तो नै दीण रंडेपणौ, छोडावंण तेतीस।।165।।

सीता कहने लगी- हे मंदोवरी! मै अपने राम का साथ छोड़कर यहां लंका में क्यो आयी हूं वह तत्व की बात आप श्रवण करे। यह तुम्हारा लंका राज्य त्रिकूट पर्वत पर बसा हुआ है चारो तरफ समंद्र की खाई सुरक्षा की बाड़ है। यह क्यों भेलीजै-अर्थात सभी के लिये सुलभ कैसे होगा उसे सुलभ

करवाने हेतु मै लंका में आयी हूं। अब से यह लंका सभी के लिये निवास करने योग्य हो जायेगी। इसलिये मेरा आगमन हुआ है।

दूसरी बात यह है कि रावण के दस सिर और बीस भुजाएँ है अर्थात् दस आदमियों की जितनी बुद्धि है उतनी रावण अकेले में है बुद्धि का क्षेत्र सिर होता है और जितनी दस व्यक्तियों की भुजाओं में ताकत है उतनी रावण अकेले की भुजाओं में ताकत है ये दससिर और बीस भुजाएँ कैसे टूटेगी यदि मै लंका में न आती तो। तीसरी बात यह कि हे मन्दोवरी! तुम पटरानी हो सौभाग्यवती हो तुम्हारे राज्य में गलत कार्य होता है तो तुम्हे भी रोकने का अधिकार है तभी सौभाग्यशालिनी बन रह सकती है। अब इस समय लंका में अन्याय होने लगा है।

तुम्हारा रंडेपणा विधवापना आने वाला है वह दिलाने के लिये मै लंका में आयी हूं। तथा चौथी बात यह है कि तेतीस कोटि देवताओं को रावण ने बंदी बना रखा है, ये चार कारण मौजूद है इनको दूर करने का कार्य है इसलिये मेरा आना हुआ है।

अकलि गई मति हड़ि हो, रावण वन खंड चोर पहुंतो।
पासै जांतो मांहै लीयौ, जंवर जगायौ सूतो।।166।।

मंदोदरी रावण के पास पहुंची और अपने पति रावण को समझाते हुए कहने लगी- हे पति देव! आपकी अकल-बुद्धि का लोभ ने हरण कर लिया है आपके पवित्र सिद्धान्त का हरण हो गया है आप सतपंथ को छोड़ चुके हैं। आपके यहां राजमहल में कहां स्त्रियों की कमी है। आप चोर की भांति-वन खंड में पहुंचे थे, वहां से वनदेवी सीता को घर ले आये हो, यह तो तुम्हारा काल है। यह तो यहां लंका तक पहुंच ही नहीं सकता था। वही वनखण्ड पंचवटी से ही वापिस लौट रहा था किन्तु उस सीता रूपी काल को लंका के अन्दर ले आये। आपकी मृत्यु-काल जंवर सो रहा था। उस सूते हुए काल को आपने जगा दिया है-

रली करौ थे पूजा रचावौ, सूतो काल जगायौ।
वन खंडरी सतवंती सीता, रावण ले घरि आयौ।।167।।

हे पति देव! आप राग रंग में डूबे हुए हो। अनेक देवी देवताओं की पूजा करवा रहे हो। ये तुम्हारे जगे हुए काल को नहीं रोक सकते आपने ही सोये हुए काल-मृत्यु को जगा दिया है वन खंड में रहने वाली सतवंती तपस्विनी सीता को लेकर घर आ गये हो यही तुम्हारी काल-मृत्यु है जागृत-सचेत की हुई सीता मृत्यु बहुत ही खतरनाक हो जाती है।

रावण ले सीता घरि आयौ, रांमै पड़यौ दिहाड़ौ।
सोवनं लंक बधावौ बाज्यौ, धंन रस आज प्रवाड़ौ।।168।।

रावण सीता को लेकर लंका में आ गया पीछे राम के यहां-डाका पड़ गया। सोने की लंका में बधाइयां बंटने लगी, मंगल गीत गाये जाने लगे। मंदोदरी कहती है कि आज का दिन धन्य है जो रावण के किये हुए कुकर्म उजागर किये जा रहे है। लंका पति रावण को आज उसकी करणी का फल प्राप्ति का समय आ गया है।

जपियै लौ लखण कंवार, सुरनर सेन चलायसी।
तोलै लो धर असमांण, अनव्या कंध नुवावेसी।। 169।।

जपियै लो- कुछ समय से शांत, चुप मौन बैठा हुआ लक्ष्मण राजकुमार जब कार्य प्रारम्भ कर देगा। तब वह बहुत खतरनाक सिद्ध होगा। लक्ष्मण सुर-नर की सेना का प्रधान बनकर आ जायेगा। वह धरती असमान को तोल लेगा। धरती को ऊपर उठा देगा स्थिर कर देगा वह लक्ष्मण शेषनाग का ही अवतार है अर्थात् सम्पूर्ण धरती एवं अन्तरिक्ष को नाप लेगा। जो नमन भाव को नहीं जानते, उन्हे झुका देगा। नमन करना सीखा देगें।

वन खंड मां दोय पुरिस भणी जै, वस्यौ न आवै नैड़ी
मांहरी ओलग वरो उठावै, लंका लाख अहेड़ी।।170।।

वन खंड में दो पुरुष रहते है राम लक्ष्मण। बस्ती गांव नगरी के तो नजदीक ही नहीं आते। रावण कहने लगा मेरे पास लंका में एक लाख अहेड़ी (शिकारी) सैनिक हैं, ये मेरे विश्वास पात्र सैनिक एक अवाज के साथ मेरा आदेश शिरोधार्य कर लेगे। मेरी विशाल सेना की बराबरी वे दो वनवासी पुरुष कैसे करेगें।

कहै तै बंधु सैंण हंकारू, कोट गढां का राजा।
जौगी जंगम सह चुग मारू, एक न मेल्हूं साजा।।171।।

रावण कहने लगा मन्दोदरी! तुम कहो तो मेरे भाई बन्धु मित्रों को बुला लू। कहो तो बड़े-बड़े कोट किलों के राजाओं को बुलालूं। वनवासी योगी जंगम सन्यासी सभी को एक एक चुन चुन के मार डालूंगा। जो राम का साथ देगा उन्हे एक को भी नहीं छोडूंगा। जिन्दा वापिस जाने नहीं दूंगा।

वारै तेज तिरै जल पाहंण, दीवल जगै ज पाणी।
जास तणी तै कार न लोपी, तास घरंणि क्यौ आंणी।। 172।।

मन्दोदरी कहने लगी-उन राम लक्ष्मण के तेज से जल पर पत्थर तैर जाते है उनके तेज से जल से भी दीपक जलते है। उस राम लक्ष्मण की दी हुई मर्यादा की लकीर आपने नहीं लोपी उनकी गृह लक्ष्मी सीता को आप चोर की भांति क्यों ले आये।

बड़ि विण वाद न कीजै राणा, अथघ न पैसे पांणी।
राज गयौ रांडेपो आयौ, भंणै मंदोवरी रांणी।।173।।

मन्दोदरी कहने लगी हे राणा जी! "**बराबरी से कीजियै, व्याह बैर और प्रीत**" आपकी और राम जी की बराबरी नहीं है इसलिये व्यर्थ का विवाद नहीं करे जो कोई जल का थाघ नहीं जानता है तो उसमें प्रवेश नहीं करना चाहिये, विना तिरै डूब जायेगा। राज तो चला ही गया और रावण पति देव का मारा जाना निश्चित है। मेरा रंडेपा-विधवापना आ गया है इस प्रकार से मंदोदरी राणी ने राजा से निवेदन किया उसे समझाया।

थारै लछंमण रांम भंणी जै, म्हारे कुंभ करंनो।
जिणि रै पेटि संमावै सायर, कांपै पांणी अंनो।।174।।

हे मन्दोदरी! तुमने तो राम लिछमण की सूरवीरो में गिनती की है मेरे भाई कुंभकरण है। क्या राम लक्ष्मण और कुंभ करण की बराबरी है ? जिस कुंभकरण के पेट में सायर समा जाता है यह तो इतना पानी पी जाता है और अन्न जल तो कुंभ करण को देखकर डर के मारे कांपने लग जाते है। अन्न जल तो इतना खाता पीता है जिसका कोई अन्त पार ही नहीं है।

सुर तेतीसू जूं जूं करता, सूकै कंठ वरंनो।
सूकैला कंठ वरंन, कुंभकरण भड़ मारिसी।।175।।

रावण कहने लगा- ये तेतीस कोटि देवता तो मेरे सामने जूंजूं जी हजूरी करते हुए हाथ जोड़े खड़े रहते हैं। मेरी एक हुंकार से इनके कंठ सूख जाते है जबान मुंह से निकलती नहीं है तथा इनका वर्ण- चेहरा रंग भी फीका पड़ जाता है। इन्हे रामलक्ष्मण तथा इनके सहयोगी देवताओं को तो बलवान मेरा भाई कुंभकरण ही मार डालेगा।

जितरो तेज पुंवण अरू पांणी, अतरो गंणौ भंणी जै।
जितरो तेज दहूं दल मांहे, अतरो राघौ दीजै।।176।।

जितना तेज पवन और जल में है उतना तो हनुमान जी अकेले में ही है जितना तेज दसो दलो में है उतना सभी कुछ राम जी का ही दिया हुआ है हे पति देव! इनके भरोसे आप युद्ध के मैदान में उतरने की कोशिश न करें।

च्यारि चकि अर तिहूं त्रलोके, सुरगि पयांल भंणी जै।
अतरो तो लाखंण पंतावै, लाखंण अंत न लीजै।।177।।

मन्दोदरी कहने लगी- चारो दिशाओं में तीनों लोकों में स्वर्ग तथा पाताल में इनमें ऐसा कोई नहीं है जो लक्ष्मण का सामना कर सके। ये तो सामान्य रूप में बतलाये है जंहा तक जानकारी है किन्तु वास्तव में तो लक्ष्मण की शक्ति का तो अन्त पार नहीं है। अबाध गति से लक्ष्मण की शक्ति का प्रसार है।

उचक्य मेर जो ऊपरी रेड़ै, थामां कवंण अधारै।
कहै मंदोवरी सुंणि हो रावण, कोप्यौ लाखण मारै।।178।।

मन्दोवरी कहने लगी हे रावण! श्रवण करो। यदि तुम्हारी लंका उपर कोई हनुमान जैसा वीर योद्धा उचक्य-कूदकर मेरू पर्वत का एक खण्ड फेक कर मारेगा तो यह बतलाओ कि तुम्हारे यहां कौन-सा वीर है जो उसको रोक लेगा। सत्य कहती हूं कि लक्ष्मण कुपित हो जायेगा तो सभी को मार डालेगा।

खाय पीय विलसै धन मेरो, रामै रांम पुकारै
हे कोई इणि लंक नगर मां, तया गलौ दे मारै।।179।।

रावण कहने लगा- यह मंदोदरी पटरानी मेरा ही खाती पीती है। राग रंग सौन्दर्य शृंगार करती है। और बार-बार राम का नाम पुकार रही है। यहां उपस्थित है कोई इस लंका नगरी मे जो इस त्रिया को यहां से ले जाकर गला दबा कर मार डाले।

अलियौ, चवै मंदोवरी रांणी, बात किसी मन सुधी।
जे मै आंणी सीता रांणी, तू क्यौ वैर विलुधी।।180।।

रावण कहने लगा- हे मंदोदरी राणी! तुम अलियौ- विना सुलझी हुई आल बाल झूठी-मिठी बात न बोलो तेरे मन मे इतना द्वेष क्यों हो रहा है। सौतिया डाह से क्यों जल रही है। मै सीता रानी को ले आया हूं तो तुम सीता तथा मेरे से बैर भाव में क्यो लिप्त हो गयी है।

तै सारीखी पाटंमदे राणी, सहंस कंरूलो औरे।
जोगी जंगम सह चुग मारूं, कांढू देसोटे रे।।181।।

हे मंदोवरी रानी! तुम अपने आप को क्या समझती हो। तुम जैसी पाटमदे राणी हजारो और भी कर लूगा। तुम उन वनवासी जोगी जंगम का डर दिखाती हो उनको सभी को चुन-चुन कर मार डालूंगा। यदि कोई मरने से बच गया तो उन्हे देश निकाला दे दूंगा। मेरी नगरी में प्रवेश ही वर्जित कर दिया जायेगा। अब तुम यह बताओं किसका भय दिखा रही हो।

संदक सूती सूहिणौ लाधौ, लंका लाखंण आयो।
लाखंण आयो लंका लीवी, सायर सेत बंधायो।।182।।

मन्दोदरी रावण को समझाते हुए कहने लगी- हे पतिदेव! मै थोड़ी देर के लिये सो रही थी। सोऐ हुए को मुझे सपना आया। संदक-कुछ क्षणों के लिये ही सो पायी थी। मेरी नींद तो उड़ गयी है। उस निद्रा में सपना आ गया। मैंने स्वप्न में देखा कि लक्ष्मण सेना सहित लंका में आ गया है। केवल आया नहीं उसने लंका को जीत कर अपने हाथ में ले ली है। समुद्र पार करने

के लिये सेतु (पुल) भी बांध लिया है।

जिण री आंण मांनै सहकोई, जिण सूं वाद न कीजै।
कहै मंदोवरी सुंण हो रावंण, लंक नगर गढ़लीजै।।183।।

जिन मर्यादा पुरूषोतम राम की आंण- मार्यादा-नियम सभी कोई मानते है उनसे व्यर्थ का वाद-विवाद राणा जी नहीं कीजै "गढलंका की सुरक्षा कीजिये

जुग छतीसू सूझै रावण, अठोतरि कुल जांणै।
सूर तेतीसू जू जू करता, वैसे आय पगांणै।।184।।

रावण कहता है कि हे मंदोदरी! आप मुझे मत समझाओं मैं कोई अज्ञानी नहीं हूं। मुझे छतीस युगों की सूझ-दिखाई देती है मैं एक सौ आठ कुल-परंपरा को जानता हूं। देवता लोग मेरे सामने जी हुजूरी करते हुए मेरे पगाणे बैठते है। ऐसा प्रचलित है कि बड़ा आदमी-चारपाई के सिरहाने बैठता है वह उसका बड़प्पन दर्शाता है। छोटा आदमी चारपाई के पगाणें की तरफ बैठता है यह उसके छोटा पन को दर्शाता है।

लंक नगर गढ़भीतरि थारौ, नाह मंदोवरि मांण।
आवैला वनचर खेड़, कुंभ करण भड़ मारिसी।। 185।।

मंदोदरी कहने लगी हे स्वामी! जब से आप सती सीता का अपहरण करके लाये हैं तभी से आपका लंका के भीतर मान-सम्मान नहीं रह गया है। लोग दबी जबान से आपकी निंदा करते हैं जिस राजा की प्रजा निंदा करने लग जाये तो उस राजा का विनाश निश्चित है यह जनता जनार्दन है इसकी भावना को भी देखों आप बार-बार कुंभकरण का नाम लेते हैं। वह तो भोजन भट्ट है खाता है और सोता है उसके भरोसे से आप लंका की सुरक्षा नहीं कर सकते उस आलसी को तो वानरों की सेना आयेगी और मार डालेगी।

लछमंण तेड़ै बंदरा, हणवंत वहलौ आव।
रावण मारि लंक लिवां, सती छुडावण जाय।।186।।

लक्ष्मण जी ने वानरो को निमंत्रण देकर बुलाया, और हनुमान जी से कहाँ -जल्दी आ जाओ। रावण को मारना है लंका लेनी है, और सती सीता को रावण के जंजाल से छुड़ाना है इसके लिये लंका में जाना है।

रीछां सहति अठारे पंदम, कोड़ि खंधारा हीव।
मारां दैता दांणवां, जम लग घातां सीव।।187।।

रीछो समेत अठारह पदम वानरो की सेना है, उनकी सवारी के लिये करोड़ों की संख्या में कंधारी घोडे.कंधार के घोडे युद्ध में दाव पेच से लडने में कुशल हैं। हे वानर सेना के प्रधानों चलो दैव्य-दानवों को मारते हैं उन्हें सीधा यमपुरी-मृत्यु की सीमा में पहुंचा देते हैं।

●●●

राग सुहब

संदक रीछ रल्या रिण बंदर, हंणवंत आगू चालै।
दीठी लंक सोवनी मैड़ी, बादल मांहि मुकालै।।188।।

लक्ष्मण जी के निमन्त्रण से सभी रीछ वानर वनवासी वनचर एकत्रित हो गये, सेना तैयारी के साथ चल पड़ी। हनुमान जी सेना के आगे चल रहे थे। कुछ दिन पूर्व ही मार्ग देखकर आये थे। समुद्र किनारे पहुंच कर स्वर्णमयी महल मैड़ी-मन्दिरों वाली लंका को दूर से ही देखा। काला समुद्र का जल बादल जैसा दिखाई दे रहा था। उसमें सोने की लंका की परिछांई पड़ रही थी मानों बादलों में बिजली चमक रही है।

घणहर घोर घुरै इंद बाजै, मांहे बीज झमालै।
हंणव अधूले लंक प्रजाली, वीर तो रांवण न्हालै।। 189।।

उन राम की सेना ने समुंद्र किनारे जाकर लंका को दूर से ही देखा और वहां के बजने वाले बाजो की घनघोर ध्वनि को श्रवण किया, मानों घने कजरारे बादल भंयकर गर्जना कर रहे है। इन्द्र देवता स्वयं ही ऐरावत पर

सवार होकर आ गये हैं उन बादलों- में बिजली चमक रही हो अर्थात् सोने की लंका बिजली की तरह चमकती हुई को वानर सेना ने दूर से ही देखा।

वानरों ने सुना था कि हनुमान ने सम्पूर्ण लंका को जला दी किन्तु ऐसा नहीं है यदि ऐसा होता तो यह सोने की चमक बिजली की तरह कैसे दिखाई देती स्वर्ण तो काला पड़ गया था। इसलिये वानर सेना कहने लगी हनुमान ने लंका तो जलाई किन्तु अधूरी ही जलाई। लंका पति रावण तो वास्तव में सूरवीर है। उसे इस बात का किन्चित भी भय नहीं है वह तो राग-रंग-भोग विलास में डूबा हुआ है।

समंदर पाज बंधाई राघव, राम नाम गिर तिरिया।
सौ जोजन संमंदर लोपै, लंका आय उतरियां।।190।।

राम नाम के पत्थर समुंद्र के जल मे डालते गये और जल पर पत्थर तैरने लगे, इस प्रकार से राम जी ने समुद्र पर सेतु तैयार करवा दिया। सौ योजन लंबे समुद्र को राम जी सहित वानरों की सेना ने पार करके लंका में आकर अपना आसन जमा लिया। यानि लंका में पहुंच गये।

विभीषण आय विलगौ पाए, लाखंण लंका दीवी।
आप तंणौ जंन औलख आपे, पाछै लंका लीवी।।191।।

रावण को छोटा भाई विभीषण ने आकर राम जी के चरणों में प्रणाम किया। विभीषण की नम्रता देखकर शरणागत की रक्षा करते हुए लक्ष्मण ने लंका का राज तिलिक कर दिया। राम जी ने अपना होने से विभीषण की पहचान करके फिर से लंका का उपहार इनाम दिया।

कहै वभीषंण सुंण हो रांवण, थिर रावत घंण सूरा।
वेल्हा थेल्हा बे तेड़ावौ, बात करौ, वंण वीरा।।192।।

राम जी की विशाल सेना को देखकर राम जी का आशीर्वाद लेकर विभीषण वापस रावण के पास पहुंचा और कहने लगा-हे मेरे भाई रावण मेरी बात सुनो। राम जी की सेना में युद्ध में स्थिर रहने वाले बहुत से रावत हैं। वे योद्धा हैं तुम्हारे पास उनका सामना करने वाला कोई नहीं है। इसलिये आपके वेल्हा-मित्र, थेल्हा- धनकुबेर है उनको बुला लो उनसे समझौते की

बात करो। उन वन वीरों से बात करें और युद्ध को टाल दिया जावे।

....

सीता द्यौ अर राम मनावौ, मेल्हो साहस धीरां।।193।।

हे मेरे भाई! सीता को वापिस लौटा दो और राम को मना लो किसी साहसी सेवक को दूत बना कर भेजो। आपकी और अपने कुल परिवार एवं लंका की भलाई इस में ही है।

कहै ज रांवण सुंण वभीषण, सिर सूं सीता देस्यौ।
लाखे पाजे कांम न सरिसी, महरावंण रथ लेस्यौ।।194।।

रावण कहने लगा विभीषण मेरी बात सुनो। सीता वापिस नहीं दूगां। यह सिर कटा दूंगा किन्तु सीता वापिस नहीं दूंगा। मुझे डराओ मत मेरे पास लाखों की संख्या में सेना है। यदि इनसे भी कार्य नहीं होगा तो मै महरावंण को रथ सहित बुला लूंगा।

सौ कोड़ी जितवाह बुलाऊ, रांम तणां दल खेस्यौ।
बांदर मारू रीछ सिंघारू, एक जांण न देस्यौ।।195।।

करोड़ों की संख्या में युद्ध भूमि में विजयी वीरो को बुला लूंगा। राम के दल को मार डालेगे कुछ वापिस भाग जायेगे बन्दरों को मार डालूगां रीछों को भी संहार कर दूंगा। यहां लंका में आये हुए एक को भी वापिस जिंदा नहीं जाने दूंगा।

कहै वभीषंण सुण हो राघव, रावंण खोज अपूठौ।
मेछ मरै सिरि आई दांणौ, कहयौ न मानै झूठौ।।196।।

रावण को सद्बुद्धि देकर विभीषण वापिस राम जी के पास आये और कहने लगे- रावण ने तो उल्टा-विनाश का मार्ग ले लिया। राजा को तो विकास का पंथ पकड़ना था किन्तु यहां तो विपरीत ही हो रहा है अब मैंने तो समझ लिया है इस निर्णय पर पहुचा हूं कि ये मलेच्छ-राक्षस मारे जायेगें। दानवों के सिर पर मृत्यु मंडरा रही है ये लोग झूठे है सच्चाई को नहीं मानते है। इन्हें कोई सच्ची बात कहे तो उल्टी ही लगती है जब काल आ जाता है

तो ऐसी ही विपरीत बुद्धि हो जाती है।

घाट घड़े छल बल सह जांणै, अलख न पूजै कोई।
जतरा बांण करां सूं चाडै, रावंण रो रिप सोई।।197।।

विभीषण ने रावण का भेद बताते हुए आगे कहा- रावण की तरह ही जो युद्ध के दाव पेच जानता है। सभी प्रकार से छल-कपट करना जानता हो। रावण में कितना बल है उसका थाघ जानता हो उसमें छूपी हुई शक्ति कहां पर और कितनी है उसके बारे में जानता हो वही रावण की बराबरी कर सकता है अपनी पहुंच रावंण के बराबर हो सकती है। रावण के जितने सिर भुजाएँ है उतने बाण एक साथ चढ़ा कर उनका साथ ही छेदन-भेदन कर सके वही रावण का रिपु- बराबरी वाला योद्धा हो सकता है रावण को मार सकता है। यह सम्पूर्ण भेद विभीषण ने राम को बतला दिया।

●●●

राग राम गिरी

पूछै बहंण विराही रे, पंथियां कवंण भोम्य सूं आयौ।
कहि पीहर री कुसलात।।198।।

रावण की बहन विराही घर पर आये हुए किसी पथिक से अपने पीहर लंका का समाचार पूछती है। हे पथिक! तुम किस भूमि देश से आए हो। यदि मेरे पीहर लंका से आया है तो मेरे पीहर की कुशल क्षेम कहो।

पीहर री कुसलात बात, वीर विषै मंन खाधी।
अठौतरि सै बहनां हुंती, काली काय र गाढी।
कहि नै रे वीरा पंथी बात।।199।।

हे पथिक! मेरे पीहर की कुशल क्षेम कहिये कुछ पीहर की नयी बाते है तो बतलाओ। मेरा भाई रावण विषय वासना में अन्धा हो गया है यह

वासना ही रावण को खा जायेगी। हम एक सौ आठ बहिने थी। हमारी इज्जत न करके भाई ने काली करके घर से निकाल दी थी। क्योंकि भाई विषय वासना में लिप्त था। भाई रावण अत्याचारी है मान मर्यादा, धर्म कर्म के विरूद्ध है। हे वीरा भाई पथिक मेरे पीहर लंका की कुशलता बताओ।

लछमंण गुंणो पठायों, पूछै बहंण विराही रे पंथिया।
कंवण भोम्य सूं आयो।।200।।

विराही कहने लगी मैंने सुना है कि लक्ष्मण ने हनुमान जी को सीता की खोज करने के लिये लंका में भेजा था। उससे आगे क्या हुआ। कहो पथिक कौन भूमि से आए। यदि मेरे पीहर लंका से आया है। तो कुशलता की बात कहो।

....

लंका नगरी हीलोहलौ, रूध्या च्यारो घाट।।201।।

वह पथिक आगे की वार्ता विराही को सुनाते हुए कहता है। हे विराही! लंका नगर में राम की वानर सेना प्रवेश कर गयी है। लंक नगरी में हो हल्ला-गुल्ला हो रहा है ऐसा मै सुनकर आया हू। सभी लोग घबरा गये हैं चारो तरफ लोग आन्दोलित हो गये है। लंका के चारों घाट-दरवाजे राम की सेना ने अवरूद्ध कर दिया है।

रूध्या च्यारयौ घाट हे बंहणौ, ढोल दमामा बाजै।
लछंमण बांण असी पर छूटै, जांणै इंद गराजै।।202।।

उस पथिक ने विराही को लंका में हो रहे युद्ध की कथा सुनाते हुए कहा- हे बहन! उन राम जी की सेना ने चारों घाट रोक दिये है युद्ध प्रारम्भ हो चुका है ढोल दमामा, युद्ध के बाजे बजने लगे हैं। लक्ष्मण जी के बांण चल रहे है कमान से तीर ऐसे निकल रहे है मांनो इन्द्र देवता वर्षा के समय गर्जना कर रहे हैं।

असी जोयण सी ऊंची लंका, समंद सरीखी खाई।
सीता काजै व्रगह मातौ, भूल लंक गुमांई।।203।।

त्रिकूट पर्वत पर बसी हुई असी योजन समुद्र से ऊंचाई पर लंका है उसके चारो तरफ समुंद्र की खाई है लंका सुरक्षित है किन्तु रावण सीता के लिये, बरगला गया है भ्रमित हो गया है। भूल कर के लंका को खो दिया है अब लंका रावण के हाथ से निकल गयी है।

राम तंणै दल सोर उपंनू, राघौ वेद हंकारयौ।
बूटी जड़ीज सोध र ल्यावौ, कंवर हुवै ज्यौ सारौ।।204।।

राम रावण युद्ध चल ही रहा था। मेघनाद द्वारा चलाया गया शक्ति बाण लक्ष्मण के लग गया। दोनो ओर से युद्ध रूक गया। लक्ष्मण मूर्छित हो गये तब राम के दल में शोर-उच्च स्वर से शब्दों की ध्वनि होने लगी। राम जी ने कहा इसके इलाज के लिये जल्दी से वैद्य को बुलावे इस शक्ति बाण से मूर्छित लक्ष्मण को पुन: स्वस्थ करने के लिये जड़ी बूंटी ढूंढ़करके लाओ जिसके लगाने से लक्ष्मण ठीक हो सके।

परचै सेती सपर चलावौ, पुंवंण पराक्रम धावै
भूता दैतां संक न मांनै, पोह पहलू आवै।।205।।

हनुमान जी सुखेण वैद्य को लेकर आये और लक्ष्मण के इलाज के लिये कहा-वैद्य ने बतलाया कि ऐसे व्यक्ति को जड़ी, बूटी लेने के लिये भेजो। जो बूंटी की पहचान जानता हो। जो अतिशीघ्र ही जा सके। पवन से तेज गति से भाग कर जा सके, भूत-प्रेत-दैत्य आदि से डरे नही, तथा सूर्योदय होने से पूर्व ही आ जाये।

दसरथ हुवै तो जांणजै, कै भरथि भाजै भीड़
अजोध्या अलगी रही, अब कुंण पैसे पीड़।।206।।

श्री राम जी भाई लक्ष्मण की दशा को देखकर विलाप करते हुए कहने लगे- इस विपति काल में पिता दशरथ होते तो अपने पुत्रों के भयंकर दुख को जान लेते पिता जी तो स्वर्ग वासी हो चुके हैं या भाई भरत यहां होता तो मेरे दुख को दूर कर देता हैं क्योंकि भाई ही विपति काल मे काम आते हैं। क्योंकि अयोध्या यहां से बहुत दूर है भरत कैसे आ सकता है। अब

मेरी पीड़ा को यहां कौन समझेगा और दूर करने की कोशिश करेगा, विपरीत काल में अपने स्वजन याद आते है।

त्रिया ज हाटि विसाहंणौ, दिनां च्यारि को सीर
तिण्य रै कारण मारियौ, लाखण सरसो वीर।।207।।

स्त्री और भाई में बड़ा अन्तर है स्त्री को तो स्वयंवर में जीत करके विवाह किया जाता है उसे तो " वीर भोग्या बसुन्धरा" वीर होगा वही जीत कर ले जायेगा। किन्तु भाई सहोदर होता है। उसको जीत कर नहीं बनाया जाता है। राम जी कहने लगे सीता के लिये भाई लक्ष्मण मृत्यु के मुंह में पंहुच रहा है।

हणवंत अजूं न आवियो, गयौ ज मूली लीण।
काज पराया सीवला, जां दुखै तां पीड़।।208।।

जब राम जी दुख में विलाप कर रहे थे, उस समय हनुमान जी ने आगे बढकर कहा था कि मै हनुमान आपका सेवक आपकी कृपा से जड़ी बूटी लेने जा रहा हूं। किन्तु दुख की घड़ी में समय बीतता नहीं है राम लक्ष्मण के पास बैठे हुए बिलाप करते हुए कहने लगे हनुमान जी गये तो है किन्तु अब तक लौटकर आये क्यो नही।

जड़ी-बूटी लेने के लिये गया है कही सूर्योदय हो गया तो फिर जड़ी बूटी लाना ही व्यर्थ हो जायेगा। काज पराया सीवला ठंडा ही होता है कार्य करने में इतनी शीघ्रता-उतावलापना नहीं होता है। हनुमान क्या जाने मेरी पीड़ा को जिसको पीड़ा होती है दुख भी उसी को ही होता है।

राम पठायो बंदर धायो, बंदर मेर पहूंतो।
जड़ी बूंटी पिछाणै नांही, जड़ो उपाडंण ढूको।।209।।

राम के द्वारा भेजा हुआ वानर शिरोमणी हनुमान अतिशीघ्र ही जड़ी बुटी वाले सुमेरू पर पहुंच गया। किन्तु हनुमान जी को जड़ी-बूटी की पहचान नहीं थी। वहां बहुत सारी जड़ी-बुटियां थी कौन सी संजीवन बूंटी होगी तब उन सभी जड़ी बूटियों को उखाड़ने लगे और पोटली बांधकर वहां से चल पड़े। सोचा वैद्य जी अपने आप इनमे से संजीवनी जड़ी बूंटी को खोज लेगें।

जड़ो उपाड़ि र कांधै लीयौ, ले हंणवंत घरि आयौ।
घसि करि मूली ऊपर लाई, सूतौ कंवर जगायौ।।210।।

हनुमान जी संजीवन बूटी सहित सभी घास फूस एकत्रित करके कंधे पर रखकर वापिस लंका में आ गये। वैद्यराज ने उनमें से संजीवन बूटी लेकर घिसकर लक्ष्मण के घाव पर लगाई और सोये हुए राजकुमार लक्ष्मण को जगा दिया। मूर्छित अवस्था से वापिस सचेत कर दिया।

भड़ मह रांवण बीड़ौ लीयौ, ठग विद्या मंन खेलू।
राम र लछमणं बांधर ल्याऊ, लंका ताक उखेलू।।211।।

रावण तथा उसके पुत्र मेघनांद की योजना विफल हो गयी। लक्ष्मण पुनः युद्ध भूमि में तैयार खडा था। तब रावण का दूसरा भाई महारावण ने युद्ध करने का बीड़ा उठाया। यानि चुनौती स्वीकार की। इस बार मायावी महारावण राम लक्ष्मण के सामने तो लड़ नहीं सकता था किन्तु अपनी मायावी ठग विद्या से खेल खेलने लगा था।

रावण से कहने लगा- मै अब की बार राम और लक्ष्मण को बांधकर लाऊंगा। तुम्हारे सामने खड़ा करूंगा तथा लंका के दरवाजे को उन्होने बंद कर दिया है उस दरवाजे को खोल दूंगा।

राज करि तूं राणा रावंण, सवा घड़ी रथ पेलूं।
बांदर मांरू रीछ सिंघारू, साबित एक न मेल्हूं।।212।।

हे राणा रावंण! तुम सुख पूर्वक राज करो, मै महरावण सवा घड़ी तक रथ पर बैठकर युद्ध करूंगा। इन वानरो को मार डालूंगा। रीछो का संहार कर डालूंगा। इन मे से एक को भी साबित-सकुशल वापसि नहीं जाने दूंगा।

मह रावण लंक सूं निसरयौ, अवर न लीयौ साथ।
ठग मूली महरांवणै, दीन्ही रामै हाथ।।213।।

महरावण लंका से अकेला ही बाहर युद्ध भूमि में जहां राम का आसन था वहां निकल पड़ा। महरावण ने माया से बनी ठग वाली दिल दिमाग को भ्रमित करने वाली ठगमूली अपने हाथ से राम को दी। राम उससे मोहित चेतना शून्य हो गये।

कुंभ करंण महरावणौ देव, विषम ज्यौ नांथ।
मारां नांह मंदोवरी, लंक चड़ै थारै हाथ।।214।।

हनुमान जी विभीषण से कहने लगे। हे लंका पति नाथ। रावण की तरह कुंभकरण और महारावण की स्थिति भी विषम है ये दोनों भी कुछ नहीं कर पायेगे। अतिशीघ्र ही मंदोदरी के स्वामी रावण को मार देगें। मंदोदरी तथा लंका तुम्हारे ही हाथ में आ जायेगी। तुम ही लंका के अधिपति लंकेश बन जाओगे।

●●●

राग सुहब

चौह दिस देख हंणौ सिर धूण्यौ, राम विना दल सूनूं।
अहलौ गयौ पराक्रम सांमी, झुरवै बाग विछुनूं।।215।।

राम रावण का युद्ध चल रहा था। यथा स्थान यथा योग्य योद्धा नियुक्त किये गये थे। उस समय महरावण और राम लक्ष्मण का युद्ध चल रहा था। महरावण ठगमूली- मायावी विद्या के द्वारा राम लक्ष्मण को लेकर पाताल में चला गया था।

इधर राम के सेनापति हनुमान जी ने देखा कि राम लक्ष्मण दोनो ही गायब है हनुमान जी ने चारो तरफ देखा कहीं दिखाई नहीं दिये। हनुमान जी अपना सिर पकडकर बैठ गये। सिर हिलाने लगे, अपना सिर पटकने लगे कि यह क्या हो गया। राम, लक्ष्मण के बिना तो दल सूना है हनुमान जी विलाप करने लगे हे स्वामी! हमारा पराक्रम व्यर्थ ही चला गया। जिस कार्य के लिये जिसके लिये आये थे वे स्वामी तो है ही नहीं अब क्या करे किसके लिये युद्ध किया जाये। हनुमान जी अपने स्वामी राम लक्ष्मण के बिछुड जाने से दुखी होकर रोने-चिल्लाने विलाप करने लगे।

लंक ढंढोली समंदज डोहयौ, जल नगरी पंथ लाधौ।
बात कहै तो वीर बतावां, जहां राम जंण बांध्यौ।।216।।

हनुमान जी ने हार नहीं मानी राम लक्ष्मण को खोजने के लिये चल पडे सम्पूर्ण लंका ढिढोली-खोज करली तथा समुंद्र के अन्दर या बाहर खोज करली किन्तु यहां तो कही राम लक्ष्मण का पता नहीं चला। फिर भी खोज जारी रखी तो एक जल नगरी यानि पाताल मे जाने का मार्ग हनुमान जी को मिला। उस गुफा के अन्दर प्रवेश करके आगे बढे तो एक व्यक्ति मिला उससे राम लक्ष्मण के बारे में पूछा- वह कहने लगा वीर-भाई! पहले अपना परिचय बताओं आप कौन हैं क्यों पूछते है। यदि मुझे विश्वास हो जायेगा तो आगे का मार्ग बताउंगा। जहां राम लक्ष्मण बंधे हुए है -

अंजंणी जायौ गणौ भंणी जूं, सारूं असरयां कांमो।
मुंह की मांगी दिऊ बधाई, बौड़ौ लछमंण रांमौ।।217।।

हनुमान जी अपना परिचय देते हुए कहते है कि मै अंजनी का पुत्र हनुमान मेरा नाम है मै बिगडे. हुए कार्य को बना देता हूं यही मेरा कार्य है मै तुम्हे मुंह की मांगी बधाई दूंगा। मुझे राम लक्ष्मण कहां है यह बतला दो। यही आपका मेरे कार्य में सहयोग होगा। मैं राम लक्ष्मण को वापिस ले जाने के लिये आया हूं।

ऊंची मैड़ी मंडप छाजा, उत छै लछमंण रांमो।
माला देई रै मढ़ आंगी, दीठा दोय बरियांमो।।218।।

वह संदेश वाहक बताते हुए कहने लगा- हे पथिक! जो तुम्हारे सामने ऊची मैड़ी-मन्दिर दिखाई देता है। उसके मण्डप-चौक में मन्दिर के छाजै के नीचे वहां राम लक्ष्मण है। वह मढ-मन्दिर माला देवी का है उसके आगे दोय वीरश्रेष्ठ पुरुष मैंने देखे है।

मछ रैणायर सुरंग पहुंतौ, छलकरि नगरी पैठो।
माला देई परी स टाली, आपे आसंण्य बैठो।।219।।

मगरमच्छ वाले समुन्द्र में हनुमान जी ने सुरंग प्रवेश किया। जिस प्रकार से महरावण राम लक्ष्मण को छलकर लाया था उसी प्रकार से हनुमान

जी भी छल-बल युक्ति से महरावण की पाताल नगरी में प्रवेश किया। वहां पहुच गया जहां राम लक्ष्मण बैठे थे। हनुमान जी मालादेवी के मठ में पहले पहुंचे। जहां माला देवी की मूर्ति थी उसको तो वहां से हटा कर जल में फेरू दिया और आप स्वयं मालादेवी के रूप में बैठ गये।

करो सिनांन सिनांनी हुंता, एक खड़ग दोय तोड़ूं।
माला देइ रै मढ़ आगी, ले ले मुंड चहोड़ूं।।220।।

हनुमान जी माला देवो बने हुए देख रहे है यहां क्या क्या पाखण्ड होता है उसी समय महारावण आया और कहने लगा- आप दोनो सिनांनी हो इसलिये प्रथम स्नांन कर लो फिर मैं दोनों के सिर धड़ से काटकर एक ही खड़ग से अलग कर दूंगा। माला देवी के मठ-मन्दिर के आगे दोनो के मुंड-सिर लेकर माला देवी को खून चढाऊंगा। तुम्हारी विश्नोइयों की लोक प्रसिद्धि सनांनी के नाम से है। विश्नोईयों को सनांनी कहकर पुकारते है यहां मेहोजी भी सनांनी है इसलिये राम लक्ष्मण को सिनांनी - विश्नोई बतलाया है।

पड़पच करि करि पिण्ड छलंता, न कोई तंत न मंतो।
लछमंण तो रामचंद जी सिवंरयौ, रांम सिवरयौ हंणवंतो।।221।।

हनुमान जी ने महारावण का पाखण्ड देखा। यह महारावण पड़पची-पांखण्डी है और पाखण्ड करके अपना पेट भरता है इसको यह भी पता नहीं है कि यहां मढ़में माला देवी है या कोई देव है। इसके पास न तो कोई तंत्र है नहीं कोई मंत्र ही है उसी समय लक्ष्मण जी ने रामचन्द्र जी का स्मरण किया और रामजी ने हनुमान जी का स्मरण किया।

भड़ महरावण खड़ग उभारयौ, जेथ गंणौ दाकलियो।
हाथां खड़ग पड़्यौ महरावण, थड़हां पड़ि थड़ हड़ियौ।।222।।

उस वीर महारावण ने हाथ मे खड़ग लेकर राम लक्ष्मण का गला काटने के लिये उपर उठाया। उसी समय वहीं मालादेवी के रूप में हनुमान जी ने जोर से आवाज मारी हुंकार किया। महारावण अचेत हो गया। हाथों से खड़ग गिर गया और स्वयं वहीं थड़हा-चौखट पर ही थर-थर कांपते हुए गिर गया।

महारावण की भुजा उपाड़ी, गंणौ पराक्रम कीयौ
रोवै माय मुवै महरावण, गढ़ भीतर लो लीयौ।।223।।

हनुमान जी ने महरावण की भुजा उखाड़ कर फेंक दी हनुमान जी ने ऐसा भंयकर पराक्रम किया। महारावण के मरने पर उनकी माता रोने लगी। हनुमान जी ने भीतरी गढ़- मुख्य गढ़अन्त:पुर को जीत लिया है। महरावण रावण का शक्तिशाली योद्धा था उस पर रावण का दारोमदार था वह मारा गया। रावण की रीढ़की हड्डी टूट गयी।

हणवंत मारूं कलाइयां, तै लाधी जल सोर।
पैसी पयांले जुध कियौ, दैत मल्या करि जोर।।224।।

लंकाधिपति रावण को जब इस दुर्घटना की सूचना मिली तब कहने लगा- इस हनुमान को मैं अपनी भुजाओं से मार डालूंगा। इसको पाताल जाने के लिये जलद्गोत-सुरंग कैसे प्राप्त हो गयी, इस हनुमान ने लंका से बाहर पताल में जाकर युद्ध करके दैत्यौं को अपनी ही ताकत से मार डाला।

हाथल ही कै गल्य हथै, रेड़ी परी उपाडि।
रावण कहै मंदोवरी, पड़ी पयांले धाडि।।225।।

हनुमान जी ने विना शस्त्र के केवल अपनी भुजाओं के बल से ही महारावण का गला दबा दिया और उसकी भुजाएँ उखाड़ कर फेंक दी। महारावण को हनुमान जी ने पाताल में जाकर मार डाला। तब मंदोदरी रावण से कहने लगी हे पति देव! अब तो चेत जाओ। पाताल में ही धाड़ि-डाका पड़ गया है अब कहां छुपोगे।

बीड़ो फिरियो साथ मां, जे को लीय उठाय।
कुंण तोड़ै गढ़ कांगरौ पैहरावै पातिसाह।।226।।

श्रीराम जी की सेना में चुनौती दी गयी कि इस लंका गढके महलों में दरवाजे तोड़कर के प्रवेश कौन करेगा। और गढ़के रक्षकों को मार कर गढ़की चित्रकारी का तहस-नहस कौन करेगा। कौन ऐसा सूरवीर वानर सेना में है जो बादशाह राजा रावण को हरावै-पराजित कर सके।

बीड़ो बबरि उठावियौ, रूघपति काढी रेख।
सोला बीसी सांभली, दुरसि करि तूं देख।।227।।

उन राम जी की सेना के बीच में से ही एक बबरि नाम का सैनिक खड़ा हुआ और चुनौति स्वीकार कर ली और उन सौलह बीसी सैनिको ने चुनौति को स्वीकृति प्रदान की जो बबरि के साथ थे। रामचन्द्रजी ने उन्हें धन्यवाद दिया और रेखा खीच दी यानि मर्यादा बांध दी कि यह महत्वपूर्ण कार्य बबरि सहित ये सोलह बीसी ही करेंगे। हे बबरि! इस कार्य को तुम तुरंत करो मै देखता हूं ऐसा श्री राम जी का आदेश हुआ।

झींटो हरि सिणगारियो, परसंण लागा पोड़।
कूदी करां सूं तोड़िया, दुरंग मंडल रो मोड़।।228।।

हरि राम जी ने झीटे वानर का श्रृंगार कर के प्रथम लंका में प्रवेश के लिये तैयार किया। लंकागढ़का विध्वंस करने के लिये सेना सहित बबर और झीटा चले तब युद्ध के बाजे बजाये जाने लगे उन्होने छलांग लगाकर अपने ही हाथों से दुर्ग-मण्डल दरवाजे को तोड़ दिया। लंका के अन्तपुर में राम जी की सेना को प्रवेश करवा दिया। अब तक जो अभेय लंका थी वह सर्व सुलभ करवा दी गयी।

गलियारो गढ़ ऊपरै, करे वीलगो पाय।
खुशी हुवौ श्री रामचंद, दीन्ही मुकति लिखाय।।229।।

उन बबर झीटा ने गढ़के ऊपर चढने के लिये गली-मार्ग बना दिया अपने ही हाथो से महल के कांगरे-छजे तोड-डाले। गढ़के भीतर निर्बाध गति से प्रवेश करने योग्य बना दिया। इस प्रकार की वीरता को देखकर रामचंद्र जी बहुत प्रसन्न हुए उनके लिये जीवन युक्ति और मुक्ति लिखवा दी। यानि ये आशीर्वाद राम जी से उनको मिल गये थे।

राम पठाया बंदर धाया, बंदर लंक पहुंता।
तोड़ै हाट उपाड़ै मैड़ी, भानै रथ संजुता।।230।।

लंका का दरवाजा टूट गया था। वनवासी वानर सेना लंका में प्रवेश कर गयी जो राम जी द्वारा भेजी गयी थी। उन्होने लंका नगर की शोभा प्रथम

बार ही देखी थी। वह लंका का बाजार विचित्र ही था। वानर आश्चर्य चकित होकर देखते और तोड़कर पता कर रहे थे कि इन में क्या छुपा हुआ है। मन्दिर मैड़ी में प्रवेश करके देख रहे थे कि यहां पर देवता कहां छुपकर बैठा है जब मैड़ी में कोई देवता नहीं मिला तब उन्हे उखाड़ कर फेंकने लगे। देव-ज्योति के बिना तो मन्दिर शून्य हो जाता है। उसे तो उखाड़ फेंकना ही ठीक था। युद्ध भूमि में जाने के लिये लंका के सेनापति के रथ को तोड़ डाला। जब राम-लक्ष्मण पैदल है तो रावण रथपर कैसे हो सकता है।

अंन धंन लिछमी धूड़ रलावै, करै भंडार सह रीतां
लंक नगर मां ताली बाजी, देखिज बंदर कीता।।231।।

लंका में अन्न, धन, रूपये, पैसों के भण्डार भरे थे, उन्हें वानर सेना ने धूल में मिला दिया। अर्थात् व्यर्थ ही मानकर तिरस्कार कर दिया। सारे भण्डार खाली कर दिये, वानर सेना के लिये भोजन की व्यवस्था लंका के भण्डार से वानरों ने प्रारम्भ कर दी। जिससे भण्डार खाली हो गये, लंका के लोगों ने देखा कि ये इस प्रकार की वानर सेना कितनी है। इसका तो कोई अन्तपार ही नहीं है।

राम र लछमंण बांधे र ल्यायो, घरि घरि हुई कड़ाही।
महारावण की मिटी दुहाई, फिरगी राम दुहाई।।232।।

जब महारावण राम लक्ष्मण को माया-ठगमूली से अचेत करके बांध कर लाया था तब घर -घर कड़ाही चढाकर मिष्ठान भोजन बनाया था किन्तु राम लक्ष्मण को छुड़ाकर महरावण को हनुमान ने मार डाला था तब महरावण की दुहाई जय-जयकार मिट गयी थी और राम जी की दुहाई-जय जयकार होने लगी थी।

महरावण सू सरीन काई, सरैन कुंभै भाई।
बांदर आय भुरजे लागा, लोपी सायर खाई।।233।।

महारावण से कुछ कार्य नहीं बना और भाई कुंभकरण से भी कुछ भी कार्य सफल नहीं हुआ। यहां लंका में वानर सेना ने प्रवेश कर लिया है तथा भुरजे-महलो के उपर चढ़चुके हैं। सागर रूपी खाई को पार करके आ

गये है। यह दशा लंका की हो रही है।

लंक विलूधा बांदरा, चंदण काला नाग।
कापड़ चोपड़ लूंटियै, लीजै घोड़ा गाय।।234।।

लंका को चारों ओर वानर सेना ने घेर लिया। स्वर्ण महलों पर चढ़कर बैठ गये। जिस प्रकार से चंदन वृक्षों पर नाग लिपट जाते है ऐसे ही वानर महलो के लिपटे हुए मालुम पड़ रहे थे। उन वनवासी राम की सेना ने लंका में लूटपाट मचानी शुरू कर दी। कपड़े, चौपड़, घी, तेल, घोड़ा गाय आदि। रावण का अधिकार इन पर था। किन्तु आम जनता की कमाई की वस्तु केवल अकेला रावण कैसे उपभोग कर सकता था जिसको जो चाहिये वे ले जाये। इन वस्तुऔ पर सभी का अधिकार है।

मारयौ दोढो भाभरौ, वल्या नीसाणा घाव।
जो झड़ झालै वांदरा, सोई बतावौ राव।।235।।

रावण के पास जाकर कोई लंका का सैनिक सूचना देता है कि हे रावजी! लंका के ड्योढी-दरवाजे पर जो भाभरा-बलवान पहरेदार था उसको वानर सेना ने मार डाला है और आगे भी अनेक वीरों को मारने का पराक्रम चल रहा है अपनी सेना लंका में एक ऐसा कोई सूरवीर हो तो वहां भेजा जाये। जो इन वानरों का सामना कर सके, उनके युद्ध कौशल का जबाब दे सके, उनकी मार को सहन कर सके।

लछमंण रांम पधारिया, पदंम अठारा साथ।
लंका लेसी लाखणौ, जगजीवण रै साथ।।236।।

राम और लक्ष्मण लंका मे आये हैं साथ मे अठारा पदम वानरों की सेना है निश्चित ही लक्ष्मण लंका ले लेगा। रावण को मार देगा, क्योंकि लक्ष्मण-जो शेषनाग के अवतार हैं वे अकेले नहीं है। उनके साथ में जगजीवन-रामजी है। उनका कार्य खाली नहीं जायेगा। अवश्य ही सफल होगा। पदम अठारा जुथप बंदर। "राम चरित मानस" पदम अठारा साथ, महादेव आवैलो। "साखी"

महाभारत में अठारह अक्षौहिणी सेना थी। यहां रामजी के साथ भी अठारह पदम-श्रेष्ठ वीरो की सेना थी।

जहां पर राम लक्ष्मण दोनो की जोड़ी हो वही विजय होगी। जहां पर कृष्ण अर्जुन हो विजय वही होगी।

मारयौ दोढो भाभरौ, दोढियै हुवौ संगरांम।
रावंण सीता मांगियै, आया लछंमण राम।।237।।

राम की सेना ने डयोढी पर रक्षक भाभरौ को वही दयोढी-दरवाजे पर ही संग्राम में मार डाला। राम और लक्ष्मण सीता को वापिस ले जाने के लिये आये है वे रावण से भीख नहीं मांगेगे। भयंकर संग्राम होगा उसमें जो जितेगा वही सीता को ले जायेगा।

बादल दीसै बरसणां, गहरी सुणियै गाज।
देवं दांणौ जुध मांडियौ, कूंण छुड़ावै आज।।238।।

लंका में राम-रावण का युद्ध हो रहा था। युद्ध में गहर गंभीर ध्वनि दूर दूर तक सुनायी दे रही थी। सैनिको के पैरो से उठी हुई धूली आकाश में मंडरा रही थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मांनो आकाश धूल से आच्छादित काले कजरारे बादलों की भांति दिख रहा था। उसमें सूरवीरों की गर्जना हो रही थी। मानो बादल गहर गंभीर गर्जना कर रहे है। आज देव दानवों मे परस्पर महायुद्ध हो रहा है उन्हे बीच मे पड़कर कौन छुडायेगा।

सूर विढै अंग पालटै, भूरा दीसै भूप।
पड़नालै पांणी बहै, राता रूप सरूप।।239।।

युद्ध भूमि मे सूरवीर योद्धा आपस मे लड़ रहे हैं। आपस में एक दूसरे से भिड़ जाते है दांव पेच खेलते हैं अपने शरीरों को पलटते है इस प्रकार से लड़ते हुए भूप अच्छे दिखाई देते हैं एक दूसरे पर वार करते है घाव करते हैं कोई मर ही जाता है कुछ लोगों के शरीर मे घाव से खून बहता है वह लाल लाल खून बहता हुआ ऐसा प्रतीत हो रहा है मांनो वर्षा में परनालो से पानी की धार बहती हो।

चौपड़ि मांडी चौहटे, छिन मां लीवी उतारि।
श्री राम रै बांण सूं, कुंभ करण री हारि।।240।।

चौपड़ के खेल की तरह ही राम रावण का युद्ध था। यह युद्ध कहीं छुपकर नहीं था चौराहे पर सभी के सामने खेल खेला जा रहा था। चौपड़ के खेल की भांति एक की हार तो निश्चित थी। किन्तु यह खेल-युद्ध ज्यादा देर तक नहीं चला। एक ही क्षण में राम के बांण ने कुभंकरण का सिर उतार लिया। राम के बांण से कुंभकरण की हार हो गयी।

मुकुट पड़यौ महि उपरै, निरखै पड़यौ निहाव
''रांणै रावंण सांभल्यौ, श्री राम रो घाव।।241।।

कुंभकरण का मुकुट धरती पर गिर पड़ा। कुंभ करण अब तक मरा नहीं था किन्तु धरती पर गिर गया था। नीचे पड़ा हुआ अपने राजमुकुट को देख रहा था (निहाव-निढाल), उठने में अक्षम था उसी समय राणै रावंण ने आकर युद्ध को संभाला और राम के बांण का घाव रावण सहन कर गया। कुंभकरण की भांति धरती पर गिरा नहीं था।

धोरी धंणष चहोड़ियौ, कंवर सझ्यौ कोवंड।
तांण्यौ तीर सभाव सूं, निज कोप्या नवखंड।।242।।

धौरी- सेनानायक लक्ष्मण ने धनुष पर तीर चढाकर डोर खीची, स्वभाव से अपनी ताकत के अनुसार धनुष की डोरी खीची उसी समय नवखण्ड कंपायमान हो गये।

लछंमण बांण संजोवियो, तांण्य र हुवौ तियार।
बोली मुंध मंदोवरी, दहसिर थारी वार।।243।।

लक्ष्मण ने बांण का संधान किया। पूर्ण शक्ति से डोरी को खींच कर चलाने के लिये तैयार हुआ। मोह में मुग्ध मन्दोदरी बोली- हे दससिर! अब की बारी तुम्हारी है तैयार हो जाओ मरने के लिये -

दहसिर दोड़ा मेल्हिया, पुलि आया परधांन।
दया करो थे देवजी करता सांभल कान्य।।244।।

दहसिर रावण ने दोड़ा-शीघ्र दौड़कर जाने वाला संदेश वाहक भेजा। वह प्रधान पुलि-तुरंत आ गया। कहने लगा हे देवजी! आप दयालु हो रावण पर दया करो। आप समर्थ हो मेरी बात कान लगा कर सुनो, और मेरी विनती स्वीकार करो।

कुंभ करण अर भाभरौ, महंरावण को दुख।
जां घरि किसा बधावणां, जां घरि किसौ सुख।।245।।

वह संदेश वाहक कहने लगा जिस रावण का भाई कुंभकरण, महरावण और भाभरौ-मेघनाद पुत्र आदि मारे गये है। उस रावण के घर कैसे बधाई गीत गाये जा सकते है। अब रावण जीत भी जाये तो भी बधाई गीत नहीं गाये जा सकते है। और जिसका भाई बेटा सैनिक मारे गये हैं उस रावण के घर सुख कहां से आयेगा वह दुखी है उस पर कृपा करो। आप दीन बन्धु दीनानाथ हो।

धोरी धंणष चहोड़ियां करि पंखाल सू ंप्रीति।
मार्‌यौ भुवंर भंणंकतौ, छूटि गई रस रीति।।246।।

सेनापति लक्ष्मण ने धनुष चढा लिया। वह धनुष जिसके उपर पंखाल-पंख वाले बांण चढाये। जिससे उन बाणों की गति चौगुनी हो जाती है। बाण जितनी तीव्र गति से जायेगाा उतना ही लक्ष्य का बेध तीव्र गति से करेगा। रावण को मारने वाले उन बाणों से लक्ष्मण को प्रीति थी। वे दहसिर के लिये संभाल कर रखे थे। लक्ष्मण ने विभीषण के निर्देशानुसार रावण की नाभि में बाण मारा। नाभि मे अमृत कुण्ड को अग्नि बाण ने सुखा दिया। मार डाला भुंवर-जीव जो भुंणकता- सचेत था जो शरीर को सचेंत रखता था। वह जीव भंवरा-मारा जा चुका। जीव देह से विलग होते ही रावण का शरीर ठण्डा हो गया। पंचत्व गत हो गया। जो नित्य क्रिया-कर्म था जीवन का रस था रीति रिवाज थे सभी छूट गये। रावण निर्जीव हो गया।

दससिर माथा खड़हड़या, मार्‌यौ भुंवर वकारि।
भींत ढही सूं कांगरां, बोई लंक कंवारि।।247।।

लक्ष्मण ने बड़ी युक्ति दाव से बाण चलाया। नाभि का अमृत कुण्ड सुखा दिया। फिर दहसिर को दसमस्तक एक ही बांण से उड़ा दिये। धड़ से टूटकर धरती पर खड़ खड़ करते हुए गिर पड़े। रावण को इस प्रकार प्रथम सचेत करके वकार संदेशा देकर मार दिया। जिस प्रकार से पुरानी दीवार ढह जाती है गिर जाती है तो उसके ऊपर की हुई चित्रकारी भी ढह जाती है बिखर जाती है उसी प्रकार से रावण के सिर भी धड़ से गिर पड़े। वही लंका कुमार रावण लोभ के कारण धरती पर गिर गया।

सत सीता जत लखमंणा, सबलाई हंणवंत
जे आ सीता न जाव ही, ऐ गुण मांही गलंत।।248।।

सीता सती है लक्ष्मण जती है, हनुमान बलवान है इन तीनों में ये तीन गुण है कवि कहता है कि यदि सीता लंका में नहीं जाती तो ये गुण अन्दर ही गल जाते। सीता लंका में गयी तो सीता में सतीत्व का गुण-धर्म प्रगट हुआ। लक्ष्मण में जतित्व गुण धर्म प्रगट हुआ और हनुमान में बलत्व गुण-धर्म प्रगट हुआ। अन्यथा दुनियां को कैसे पता चलता।

गहली मुंध मंदोवरी काचै रूही न संध
कोपिय लांखण छेदिया, वलै न चड़िस्यै कंध।।249।।

रावण के दस सिर काट डाले, धड़ से नीचे धरणी पर गिर गये थे। रावण ने इन सिरों को कभी झुकाया नहीं था। आज वे धरती पर गिरे पड़े थे। रावण की पटरानी मंदोदरी युद्ध के मैदान में शीघ्रता से आ गयी। और नीचे धरती पर पडे. हुए सिर वापिस धड़ पर जोड़ने लगी राम जी ने कहा- तुम बावली-पागल हो रही हो, इस शरीर पर कच्चे खून से वापिस जोड़ने का कार्य न करें। यह असंभव है। कुपित हुए लक्ष्मण ने मस्तकों को छेदन किया है। ये सिर दुबारा कंधे पर नहीं चढ़ेगें।

गहली मुंध मंदोवरी, रूही न छाले हाथ।
कोपिय लाखंण छेदिया, तिहुं लोका रै नाथ।।250।।

शोक में बिकल बावल मुग्ध मंदोदरी। अब तू खून में हाथ न करो

कुपित हुए तीन लोक के नाथ लक्ष्मण के द्वारा ये सिर काटे गये है अब तुम्हारे से जुड नहीं सकते।

नदरि पयाल अकास सिर, रवि किरण्या को वास।
हीरै हीरो बेधियो, नरपति कियो नेसास।।251।।

आगे रावण की गति बतलाते हुए कवि कहते है कि जिस समय रावण युद्ध भूमि मे एकाग्रता से युद्ध कर रहा था तब धनुष चलाते समय रावण की नजर पताल में यानि नीचे थी, और उसका सिर उपर आकाश की तरफ था। रावण सही दशा और दिशा मे था। जिससे रावण का जीव सूर्य से जुड़ा हुआ था। इसलिये शरीर से भंवरा-जीव विलग हुआ तब सूर्य में ही जीव विलीन हो गया। ज्योति रूपी जीव सूर्य ज्योति के साथ मिलकर महा ज्योति सूर्य रूप ही हो जाता है। ऐसी ही सदगति रावण की भी हुई थी। दूसरी बात यह है कि हीरै हीरो वेधियो-लक्ष्मण हीरा था, और रावण भी हीरा ही था, हीरे को हीरे ने ही काटा था। एक सूरवीर ने दूसरे सूरवीर का ही वेधन किया था। हीरे में छेद करने के लिये भी हीरे की ही कटारी चाहिये। रावण वीर गति को वीर द्वारा प्राप्त हुआ था। इसलिये रवि किरणा में वास होगा ही। उस समय रामचंद्र जी ने कियो नेसास " निःश्वास- लंबे लंबे श्वांस लेकर कहने लगे भाई लखन! आज एक वीर धरती से जा रहा है।

लंक नगर को लोक सोह, थारै दरसण्य आयो देव।
मदसूदन सांसौ मिटै, करणी दाखवि देव।।252।।

विभीषण कहने लगा हे राम जी! लंका नगरी के सभी लोग आपके दर्शन करने के लिये आये है। हे मधुसूदन! आप इनको दिशा निर्देश दें आगे क्या करना है। रावण के बाद किसको राजसिंहासन आप देगें। इन लोगों को संशय है। इस भ्रम को दूर कीजिये।

●●●

राग सुहब

रांवण मार्यौ देव ज छूट्या, जै जै रांम बधाई

पंदंम अठारा साबेत कीया, सुगंध रहयौ रिण मांही।।253।।

रावण को मार दिया। तेतीस कोटि देवता छूट गये। लंका में तथा देव लोक में जै जै राम की ध्वनि होने लगी। बधाइयां बंटने लगी। राम सेना में अठारह पदम वानर-वनचर थे उन्हे पुन: साबेत -ठीक किया यानि मृत्यु को प्राप्त थे उन्हे पुन: जीवित किया। राम रावण के युद्ध में सुगन्ध बना रहा अर्थात सौम्यता नीति सत्यता बनी रही।

विभीषंण लंका पाटि बसाण्यौ, बड़ारी आदि बड़ाई।

ले सीता राघव घरि आया, अजोध्या उछाही।।254।।

श्रीराम जी ने विभीषण को लंका के राज सिंहासन बैठाया। राम जी आप नहीं बैठे यही बडे:-महान पुरूषों की बड़ाई-महानता है वानर सेना सहित सीता जी को लेकर राम जी वापिस अपने घर अयोध्या में लौट आये। अयोध्या मे उत्सव-दीपावली मनायी। घर घर बधाइंया बंटने लगी। घर घर दीपक जलाये गये।

हुवौ रामायण रावंण मार्यौ, गंणौ पराकंम नहाल्यौ।

सुरंगे जाय महरावण मार्यौ तोड़ि गला सू राल्यौ।।255।।

रावण को मार दिया रामायण सम्पूर्ण हो गयी। रामायण का सारांश यह है कि हनुमान जी के पराक्रम जैसा अन्य किसी का पराक्रम नहीं था हनुमान जी ने सुरंग में प्रवेश करके महरावण का गला तोड़ कर पृथ्वी में मिला दिया। ऐसा महरावण को बिना ही शस्त्र के हाथ से ही मार डाला। हनुमान जी की सेवा- पराक्रम सराहनीय था।

सोवन लंक खलो कर गाही, ढंढोल्यौ असमांणौ।

कहि मेहा रिण झूंझ्यौ राघौ, घंण ज्यौ बूठा बांणौ।।256।।

सोने की लंका थी। उसको खलो-जिस प्रकार से बाजरी आदि

धान निकालते के खले-लाटे में गाहटा करते है बाजरी के भुट्टों को मसल डालते है उसमें दाना अलग और घास-भूस सभी अलग हो जाते हैं फिर " पवणा डोलै तुस उडेला" पवन-वायु चलने से तुस-घास थोथा उड़ जाता है और कण -अन्न रह जाता है उसी प्रकार से राम जी ने लंका को कुचल कर दिया, और सज्जन कण रूप थे उन्हे तो बचा लिया और घास-भूसा रूप में दैत्य थे उन्हें' गुरु मुख पवन उडाइये" गुरु मुखी पवन से उड़ा दिया। लंका सारतत्व शुद्ध हो गयी थी धरती और आसमान को भी देख लिया वहां पर भी कोई दैत्य-अमानव नहीं छोड़ा। मेहो जी कहते है कि इस प्रकार से राघव ने युद्ध किया बड़ी बूंदो की वर्षा की तरह बाणों की वर्षा होने लगी थी।

घंण ज्यौ बूठा बांण क, रांणो रावण मारियौ।
रांवण मार्‌यौ परहंस सार्‌यौं, लंक लिवी मुंह भांने।।257।।

रावण को मारने के लिये एक साथ बाणों की वर्षा की थी। तब कहीं राणा रावण तथा उसकी विकट सेना मर सकी थी। रावण को मारा और परमहंस-जीवन युक्त जीवों का उद्धार किया। रावण का गर्व-अहंकार गलित करके, रावंण को मुंहतोड जवाब दिया। जो कोई परस्त्री का हरण करता है उसके साथ क्या बीतती है यह राम ने प्रगट रूप से बताया था लंका अपने अधीन करके भी स्वयं राजा नहीं बने किन्तु विभीषण को राज तिलक दे दिया। भक्तो की रक्षा की थी।

अडसठ तीरथ जो पुनं न्हायां, सुणौ रामायण कांनै।
पढिया नै मेहो समझावै, धापो धरंम धियांने।।258।

अड़सठ तीर्थों में स्नान करने से जो पुण्य होता है वह रामायण को कांनो से श्रवण करने से ही हो जाता है पढे लिखे लोगों को कवि मेहो जी समझाते हुए कहते है कि धाप तृप्ति तो धरम करने से तथा परमात्मा श्रीराम का ध्यान करने से ही होगी।

....

(कथा सं पूरण समापिता लिखतु थापन अमरा,/ गावं भीयासर
मध्ये वाच जाके नूण, प्रनाम, वाचै जौ जी। संमत 1830 चेत बदी 2 वार आदीतवार।।)

●●●